प्रत्यागमन

(भजन – ग़ज़ल संग्रह)

लेखक

स्वामी शिवोम् तीर्थ

प्रकाशक

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम

देवास (म.प्र.)

प्रत्यागमन

(भजन - ग़ज़ल संग्रह)

लेखक

स्वामी शिवोम् तीर्थ

प्रकाशक

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम

देवास (म.प्र.)

निवेदन

परम पूज्य गुरुदेव ने भक्तों पर असीम कृपा करके स्वयं की हस्तलिपि में इस पुस्तक के भजनों को लिखा है, जिन्हें यथावत् प्रकाशित किया जा रहा है ।

❖ **प्रथम संस्करण**
४, जनवरी १९९९ ई.

❖ **मूल्य रु. ४०/-**

❖ मुद्रक : **त्रिमूर्ति प्रिन्टर्स**
५, सेक्टर 'डी' सांवेर रोड, इन्दौर
फोन : ४२१५४८, ४२०८७६

भूमिका

पश्चाताप, ईश्वर-वियोग की अनुभूति, एवं प्रभु-विरह की उत्कट-भावना, साधना-क्षेत्र के तीन आवश्यक तथा अनिवार्य अंग हैं। इन्हें तीन स्तर भी कहा जा सकता है। जो लोग जगत के प्रति पूर्णतया आसक्त एवं अनुरक्त हैं, उन के विषय में कोई बात करना निरर्थक है, किन्तु जो लोग अध्यात्म में कुछ रुचि रखते हैं, उन के लिए यह विषय अवश्य ही चिन्तनीय-अनुकरणीय है।

सामान्यतया संसारी जीव, जो कुछ भी थोड़ा बहुत पूजा-पाठ अथवा साधन-भजन करते हैं, उन्हें भी, अपने द्वारा किए गए पाप-कर्मों तथा कुकृत्यों के प्रति पश्चाताप नहीं होता है। वह अपने व्यवहार को साधना से भिन्न मानते हैं, जबकि साधना एवं व्यवहार, दोनों अवस्थाओं में मन एक ही रहता है, जो संस्कार-संचय का हेतु है। भाव यह है कि जब तक जीव में पश्चाताप का आरम्भ नहीं होता तब तक साधना का भी आरम्भ नहीं होता।

पश्चाताप का अर्थ है अपने द्वारा किए गए अनाचार मिथ्याचार, लोभ-क्रोध-काम जन्य बुरे, मर्यादा विहीन तथा अनावश्यक कर्मों संकल्पों के प्रति मन में ग्लानि, घृणा, अथवा पछतावा होना। यह आवश्यक नहीं कि केवल बुरे कर्मों के प्रति ही, मन में, ऐसा भाव उदय हो। यदि सात्विक, आवश्यक, अच्छे तथा शास्त्रानुकूल कर्म करने पर भी, मन में, अभिमान उदय हो जाता है तो उस अभिमान को भी, साधक, साधना में विघ्न मान कर, पश्चाताप करता है। आध्यात्मिक साधनाओं का मूल लक्ष्य चित्त शुद्धि तथा भ्रम-नाश है। शुभाशुभ, आसक्तियुक्त कर्म ही संस्कार संचय का कारण होते हैं। यह संस्कार ही चित्त को वासनामय बनाते हैं। इन्हीं संस्कारों तथा वासना के अधीन-अनुसार ही, दृश्यमान जगत में अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता उपस्थित होती है। संसारी जीव, बाह्य, उपस्थित परिस्थितियों से प्रभावित हो कर, पुनः कर्म में प्रवृत्त होता है तथा और

में अधिक संस्कार-संचय में कारण बनता है

भक्त की मनः स्थिति संसारी जीव से एक दम भिन्न तथा विपरीत होती है। वह जगत में उपस्थित परिस्थितियों का कारण बाह्य जगत में नहीं खोजता। अपनी आन्तरिक मानसिक स्थिति को ही इस का आधार समझता है। क्लेश का कारण, बाहर नहीं, अन्दर देखता है। केवल इतना ही नहीं, बाह्य अनुकूलता होने अथवा नहीं होने पर, वह चित्त के अन्दर तरंगित होने वाले भावों, वृत्तियों तथा विचारों से भी, दुख का अनुभव करता है। उसे अध्यात्म तथा भगवद् संबंधी भाव-विचार ही सुख देते हैं। जागतिक भावों-विचारों से वह दुखी हो उठता है। उन्हें मन से हटाने का प्रयत्न करता है। जप, ध्यान, स्वाध्याय आदि में मन लगाता है। उस के अन्दर पश्चाताप की ज्वाला धधकती है। उस अग्नि में पूर्व-कृत सभी स्मृतियाँ स्वाहा होती जाती हैं।

पश्चाताप् एक आन्तरिक प्रक्रिया तथा भावना है, कोई दिखावा नहीं। साधक अपने दोषों-विकारों-कुविचारों से अन्दर ही अन्दर जलता रहता है। किसी से कोई शिकायत नहीं, कोई गिला नहीं। आन्तरिक ज्वाला का, किसी दूसरे को, आभास तक नहीं होने देता। पश्चाताप की साधना, उस की मौन साधना होती है। जगत उस की हंसी उड़ाता है, नाम रखता है, दोषारोपण करता है। वह सब शान्त-भाव से सहन करता है, किन्तु मुख से उफ़ तक नहीं निकालता। पश्चाताप् तथा सहन-शीलता का घनिष्ट संबंध है। पश्चाताप की अधिकता से सहनशीलता को भी बल प्राप्त होता है। अन्ततः लक्ष्य तो दोनों का एक ही है,- आन्तरिक संचित संस्कारों, वासनाओं एवं भ्रम की निवृत्ति।

पश्चाताप की एक विशेषता यह है कि भक्त का सारा ध्यान अपने स्वयं के विकारों तथा दोषों पर केन्द्रित होता है। वह अपने अन्दर छोटा सा भी दोष देख कर तड़प उठता है। इस लिए उसे दूसरों के दोष देखने का अवसर ही नहीं मिलता किन्तु ऐसा भी नहीं है कि पश्चाताप् का भाव उदय हो जाने पर, भक्त उस पर अडिग बना ही रहता है। वह पश्चाताप्-च्युत भी हो सकता है। पश्चाताप् एवं भजन का त्याग होने पर, विषयों में पुनः प्रवृत्त हो जाने की सम्भावना बनी ही

रहती है।

यह मुझे क्या हो गया है
भजन मन लागे न मोरा, जगत ही मन सो गया है
जब कभी बैठूं भजन में, जगत में ही रहत रमता
हो न थिर पल भर भी मोरा, वासनामय हो गया है
किस से पूछूं क्या करूं मैं, उड़ता-फिरता हर-समय मैं
भोगही भटका फिरूं हूं, दास जग का हो गया है
हे प्रभु कैसी यह उलझन, कैसा मन का हाल मेरा
कैसा क्या मैं हो गया हूं, हाल-बद ही हो गया है
तू ही आ कर के बचा ले, तू ही कर रक्षा शिवोम्
तेरे बिन जीवन वृथा है, अलग तुम से हो गया है

"यह मुझे हो क्या गया है? अच्छा भला साधन में लगा हुआ था। उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आरूढ़ था, किन्तु अब तो भजन करने में मेरा मन ही नहीं लगता है। अब तो फिर से माया रूपी, शक्कर चढ़ी, गोलियां खा कर, जगत रूपी स्वप्न में आसक्त हो गया हूं। यदि कभी साधना में बैठने का प्रयत्न भी करता हूं तो मन जगत में ही, भटकता-रमता रहता है। पल भर के लिए भी तो, स्थिर नहीं हो पाता है। अब तो वे पूर्णरूपेण वासना के रंग में ही रंग कर रह गया है। कुछ समझ में नहीं आ रहा, कोई मार्ग बताने वाला भी तो नहीं है। अब मैं केवल जगत रूपी विषयों का बोझ ढोने के लिए ही रह गया हूं। कहां तो पश्चाताप का आश्रय ले कर, चित्त-शुद्ध करने में लगा था, और अब विषयों के संस्कार-संचय में जुटा हूं। हे मेरे प्रभु! जीवन में यह कैसी उलझन पैदा हो गई है, जो सुलझने का नाम ही नहीं लेती। मैं किस रास्ते पर जा रहा था, अब भटक कर कहां पंहुच गया हूं? मेरी मानसिक अवस्था दिनोंदिन गिरती जा रही है। हे प्रभु! मुझे बचा ले, बचा ले।"

पश्चाताप ऐसा तत्व है जिस से मन में विनम्रता तथा सेवा-भाव पैदा होता है। ईश्वर पर विश्वास तथा समर्पण उदय होता है, क्रोध, लोभ तथा काम

की नेकी में सहायता मिलती है। साधना को बल प्रदान हो कर, निरन्तरता आती है एवं पर-दोष दर्शन, पर-निन्दा तथा अहिंसा से अरुचि होती जाती है। माया से परे हटने के लिए पश्चाताप अनिवार्य है। पश्चाताप, वास्तविक साधन के आरम्भ की प्रथम सीढ़ी है। यदि विचार कर देखा जाय तो इस प्रथम सीढ़ी पर चढ़ पाना अत्यन्त ही कठिन है क्योंकि जगत से मुंह मोड़ना बड़ा दुष्कर कार्य है, जिसे पश्चाताप, समर्पण एवं प्रभु-कृपा से ही कर पाना सहज-संभव है।

पश्चाताप के भी कई स्तर, रूप तथा भाव हैं। भक्त, कभी अपने मन को फटकारता है, कभी समझाता है, तो कभी आयु व्यतीत होते जाने पर चिन्तातुर होता है। कभी अपने पतन का कारण जगत को मान कर, उस की असारता एवं क्षणभंगुरता, मन के समक्ष उपस्थित करता है। कभी संभल जाता है तो थोड़ा उत्साहित हो जाता है। विषयों की ओर आकृष्ट हो जाने को, मन की दुर्बलता अनुभव करता है। इस प्रकार, पश्चाताप कई भावों में प्रकट होता है, किन्तु एक बात निश्चित है कि पश्चाताप के बिना, जगत से छुटकारा, संभव नहीं। पश्चाताप के इन सभी भावों को विभिन्न पदों तथा ग़ज़लों के माध्यम से प्रकट किया गया है। कहीं मन को आधार बनाया गया है तो कहीं जगत को। वैसे जगत, अपने आप में कुछ नहीं, केवल जड़ है किन्तु जिस भक्त का जगत के मिथ्यात्व की ओर ध्यान नहीं होता, वह तो, मन के जगत की ओर आकृष्ट होने में, जगत को ही कारण देखता है। वह उसे ही दुखदायी एवं हेय समझता है, एवं वैसा ही उस के मन का भाव होगा। मानसिक गिरावट के अतिरिक्त समय का व्यर्थ नष्ट होते रहना, आध्यात्मिक प्रगति के बिना ही आयु व्यतीत होते जाना, वाणी पर संयम का न होना, न चाहते हुए भी वह कर जाना जो नहीं करना चाहिए, अथवा वह कर नहीं पाना, जो करना चाहिए किसी को समय देकर समय पर नहीं पहुंच पाना, सामर्थ्य होते हुए भी किसी व्यक्ति विशेष की सहायता नहीं कर पाना, आदि कई बातें पश्चाताप का विषय हो सकती हैं। जीव ऐसी भूलें युग-युगान्तर से तथा जन्म-जन्मान्तर से करता चला आ रहा है। इन सभी प्रकार के संस्कारों को अशुभ कहा जाता है।

जिन शुभ कर्मों में आसक्ति एवं अभिमान का मिश्रण होता है, उन संस्कारों को शुभ कहा जाता है। जब जीव की दृष्टि अन्दर की ओर उन्मुख होती है तो उस के शुभाशुभ संस्कार समक्ष उपस्थित हो जाते हैं, तब यदि उसे, उन के प्रति ग्लानि एवं घृणा होती है तो यही पश्चाताप होता है। भक्त तथा योगीजन अनासक्त होने से, संस्कार-संचय से बचे रहते हैं।

ईश्वर वियोग की अनुभूति

वैसे ईश्वर के वियोग की अनुभूति जीव के भ्रम का ही परिणाम है अन्यथा ईश्वर का वियोग कभी होता ही नहीं। किन्तु फिर भी जब तक यह भ्रम बना है तब तक वियोग का भाव है ही। इसी लिए यहां वियोग नहीं कह कर, वियोग की अनुभूति अथवा प्रतीति कहा गया है। ईश्वर मिलन का अर्थ है, वियोग के भ्रम का नाश हो जाना। वियोग की अनुभूति दो स्तरों पर होती है:-

(१) चित्त अशुद्ध होते हुए

(२) चित्त शुद्ध हो जाने पर

अब इन अवस्थाओं पर तनिक विचार किया जाता है

चित्त अशुद्ध होने की अवस्था में, यदि मनुष्य साधक है, चित्त-शुद्धि के लिए प्रयत्न रत है तो ईश्वर के अभाव की भावना का होना भी सम्भव है। सामान्यतया तो जीव यदि साधना करता भी है, तो अधिकांशतः सकामोपसना होने से, न वैराग्य उत्पन्न होता है एवं न ही वियोग की प्रतीति ही होती है। साधक अपने चित्त की अशुद्धि का कारण, ईश्वर का वियोग ही मानता है। ईश्वर को अनुभव करने के लिए चित्त को शुद्ध करना चाहता है। वह बुद्धि से इस बात को स्वीकार करता है कि उस की इन्द्रियां ईश्वरीय शक्ति से ही संचालित होती हैं किन्तु अहम् तथा भ्रम के कारण उस का, अनुभव नहीं हो पा रहा है। परिणामतः ईश्वरानुभव का अभाव बना रहता है। यहां तक कि जिन साधकों की अन्तश्चेतना, गुरु कृपा से जाग्रत हो गई है, वह भी इस भ्रम को दूर करने में कठिनाई अनुभव करते हैं। साधन काल में, शक्ति की क्रियाओं की प्रत्यक्ष अनुभूति होने पर भी अहम् बना रहता है, यद्यपि वह मात्र दृष्टा ही क्यों न हो। साधनेतर समय में तो अहम्, पूर्णतः प्रबल हो जाता है। चित्त की अशुद्धि होने पर वियोग की अवस्था का वर्णन कई पदों में आया है।

चित्तशुद्ध होने का अर्थ है, माया के आवरण का अत्यन्त क्षीण हो जाना। इस अवस्था में अहम् भी बहुत पतला हो जाता है। साधक की अवस्था त्रिशंकु के समान हो जाती है। जगत छूट जाता है। विषयों में रस नहीं रहता किन्तु भगवद्-प्राप्ति भी अभी नहीं हुई होती। उस की अवस्था दयनीय होती है। वह इधर का रहता है न उधर का। यह किनारा तो छूट गया किन्तु दूसरा किनारा अभी मिला नहीं। यह अवस्था, विरह की पृष्ठ-भूमि बनती है। कब तक साधक, इस अवस्था में रहेगा, इस का कुछ निश्चित नहीं। आगे की सीढ़ी चढ़ने के लिए कोई साधन नहीं। वह भगवद् कृपा के आश्रित है। साधक केवल पर-वैराग्य का आश्रय ले कर, कृपोन्मुख ही बना रहता है। चित्त अशुद्ध होने पर, विनय के अन्तर्गत लिखा यह पद देखिए:—

कब होगा छुटकारा
दुनिया छोड़ रही न मोहे, दर पर करत पुकारा
दुनिया तो इक भूल-भुलैयां, मारग सूझत नाहीं
कैसे भागूं, कैसे निकलू, क्योंकर हो छुटकारा
मारग से मारग टकराये, जीव से जीव उलझता
आपधापी अजब मची है, है मछली बाज़ारा
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, राह दिखावनहारे
करो कृपा तो मारग सूझे, तब ही मिलत किनारा

जगत से दुखी भक्त, प्रभु से प्रार्थी होता है कि इस दुखमय मिथ्या जगत से, मुझे कब छुटकारा प्राप्त होगा। जगत मुझे छोड़ता नहीं। छोड़ने का प्रयत्न करते करते थक गया हूं। वास्तव में तो मैं ही, जगत रूपी मायाजाल को नहीं छोड़ता। अब तो प्रयत्न-शून्य हो कर, आप के द्वार पर, सहायता के लिए, पुकार करने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।

अभिमुख दृश्यमान जगत तो, एक भूल-भुलैयां के ही समान है जिस में जीव, इधर-उधर, चक्कर काटा करता है किन्तु उसे इस में से बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिलता। जहां जाता है, वहां से, उसे एक और मार्ग दिखाई देता है। किन्तु, घूमता उसी एक स्थान पर ही रहता है। सोचता रहता

है कि बाहर निकलने का मार्ग कौन सा है, जो उसे कभी भी नहीं मिलता।

वास्तव में यह जगत बाहर नहीं, अपितु जीव के अपने चित्त में ही विद्यमान है जहां वासनाओं एवं संस्कारों का एक अत्यन्त घना एवं विशाल वन फैला है। विकार रूपी हिंसक पशु उपद्रव करते रहते हैं। जहां के मार्ग, सर्व-प्रथम तो हैं ही नहीं, जो हैं भी, वह टेढ़े-टेढ़े, तथा कभी भी समाप्त न होने वाले हैं। उसी अन्तर्जगत का प्रतिबिम्ब-भर, बाह्य जगत है। अन्तर-जगत के माध्यम से ही जीव, बाह्य जगत को देखता है तथा उसी के अनुरूप चित्त में वृत्तियां तरंगित होती हैं। बाह्य जगत को छोड़ने का, साधक कितना भी प्रयत्न करे किन्तु जब तक अन्तर्जगत विद्यमान है, बाह्य का छूटना असंभव है

साधक-जीव मानता है कि अन्तर-संस्कारों का कारण, ईश्वर से विमुखता है। संस्कारों-वासनाओं से पीछा छुड़ाने का भरसक प्रयत्न करता है किन्तु सभी प्रयत्न अहंकार-युक्त होने से, उलटे संचय का ही कारण बनते हैं। थक-हार कर, साधक, ईश्वर के शरणापन्न होने को ही, एकमात्र उपाय समझ लेता है। जगत में तो नानात्व है ही, साधना-क्षेत्र में प्रवेश करने पर उसे यहां भी नानात्व दिखाई देता है। कई सिद्धान्त, मार्ग, प्रणालियां एवं मत उसे भ्रमित करते हैं। एक मार्ग दूसरे का विरोधी है। एक सिद्धान्त दूसरे से टकराता है। सब के अनुयायी अपने ही मार्ग का सच्चा तथा एक-मात्र उपाय बताते हैं। आपस में ही उलझते-झगड़ते हैं। एक विचित्र प्रकार की आपाधापी व्याप्त है। मच्छली बाज़ार का सा दृश्य है

"हे मेरे गुरुदेव! अब ऐसे में, एक मात्र आप ही हो, जो मार्ग दिखा सकते हो। यदि आप की कृपा तथा मार्ग-दर्शन प्राप्त हो जाय तभी कोई निश्चित, स्पष्ट, सरल एवं सीधा रास्ता दिखाई दे सकता है। तभी किनारा भी मिल सकता है"

जगत तथा अपने चित्त की वासनाओं-विकारों से त्रस्त जीव छटपटाता है। इतना प्रयत्न करने पर भी, अन्तर में अध्यात्म की भूख क्यों जाग्रत नहीं होती।

प्रेम छाता मन मेरे में क्यों नहीं
दुनिया जाती मन मेरे से क्यों नहीं
वासना ही वासना छाई रहे
वासना यह दूर जाती क्यों नहीं

डूबता ही जा रहा दुनिया में मैं
उभरता गहरे से ऊपर क्यों नहीं
अब सहा जाये न मुझ से और है
बरसती किरपा है मुझ पर क्यों नहीं
हे प्रभु तु कर कृपा मुझ पर शीघ्रम्
भाग्य अब भी जागता है क्यों नहीं

"मेरे मन में, प्रभु-प्रेम जाग्रत हो कर, मन प्रेम में भीग क्यों नहीं जाता। आनन्द तथा भाव से भर क्यों नहीं जाता। मेरे अन्तर में तो जगदासक्ति एवं गहरा तमांधकार ही छाया है। न मैं अपने को ही देख पाता हूं, न ही प्रियतम प्रभु को। मन से जगत की आसक्ति, विषयों की भूख, दृश्य की लालसा, तथा मधुर ध्वनि सुनने की उत्कण्ठा शान्त क्यों नहीं होती है। मेरे मन में तो जगत की वासना ही वासना व्याप्त है। धन की इच्छा, भोग तथा यश की इच्छा, तथा अधिकार की इच्छा। ऐसा ज्ञात होता है कि चित्त, इच्छाओं-वासनाओं का घर बन कर रह गया है। लोभ, क्रोध तथा काम ने मुझे परेशान कर रखा है। ईर्षा तथा द्वेष का बन्दी हो कर रह गया हूं। अन्तर की वासना ही जगत में विभिन्न रूपों में प्रकट होती है। कभी वासना पूर्ण हो भी जाती है तो वह और भी बलवती हो उठती है। यदि कभी अतृप्त रह जाती है तो भी अन्दर ही अन्दर बढ़ती रहती है। कभी नष्ट होने का नाम ही नहीं लेती।"

"दिन प्रतिदिन, मैं वासना तथा भव-सागर की अथाह गहराइयों में नीचे ही नीचे, गहरे से गहरा, डूबता चला जा रहा हूं। तम के गहन अंधकार में विलीन होता जा रहा हूं। वासना की धुंध बढ़ती ही जा रही है। अब तो प्रकाश की एक भी किरण, मुझ तक, पहुंच नहीं पा रही। ऐसा कौन सा कारण है कि मैं गहराइयों में डूबा, उभर नहीं पा रहा हूं। ऐसा असमर्थ तथा असहाय मैं कैसे हो गया। मैं क्यों, आंखें बन्द किए, तथा बिना कुछ सोचे विषयों के पीछे, सुख की आशा में भागा जा रहा हूं।"

"हे प्रभो! अब बहुत हो गया। युगों-युगों से, वासना के दुखदायी स्वरूप को सहन करता आ रहा हूं। अब और अधिक सहन करने की सामर्थ्य

मुझ में नहीं । वासनाएं अब मुझे बिच्छु के समान डंक मारती हैं । उन के आक्रमण से मेरा मन तिलमिला उठता है । अब मन, प्रभु-प्रेम पाने के लिए ही लालायित रहता है । प्रभु, जो आनन्द-स्वरूप, नित्य स्वरूप तथा चिदस्वरूप है । जिस में वासना का लेष मात्र भी नहीं । जिस के पवित्र प्रेम को वासना की छाया तक भी नहीं छू सकती । किन्तु हे प्रभो! ऐसा प्रेम, मेरे हृदय में कब जाग्रत हो पाएगा । कब मैं जगत के दुखों- द्वन्द्वों से छुटकारा पा कर, अपने मन के प्रत्येक भाव, विचार तथा संकल्प को प्रभु चरणों में अर्पित कर सकूंगा । कब मेरा मन, प्रभु-प्रेम से संचित हो कर, एक सुंदर बगीया की भान्ति महक तथा लहलहा उठेगा । प्रेम की ऐसी मधुर वर्षा मेरे मन पर कब होगी ।"

"हे प्रभो! अब तो मुझ पर कृपा करो । तेरे लिए कुछ भी कर पाना असम्भव नहीं, क्योंकि तू सर्व शक्तिमान, जगत का नियन्ता एवं सर्वज्ञ है । हे कृपा निधान! मेरे सोये भाग्य को जगा दो । मैं तेरी शरण हूं, शरण हूं ।"

यह है अशुद्ध मन की प्रभु- वियोगानुभूति । अब शुद्ध-मन की वियोगानुभूति देखिए । शुद्ध मन का अर्थ यहां यह कदापि नहीं कि पूर्णतया निर्मल हो गया है तथा उस में विकार अथवा संस्कार रहे ही नहीं । शुद्धि का अर्थ यहां सत्वगुण की प्रधानता है, यद्यपि तम-रज भी किसी न किसी मात्रा में, अभी तक शेष हैं । मन, बहुत कुछ, जगत से हट गया है, तथा इंद्रियों पर भी बहुत संयम हो चुका है । प्रभु के वियोग की भावना काफी प्रबल हो गई है किन्तु वियोगानुभूति ने अभी विरह का रूप धारण नहीं किया मन के पूर्णतया शुद्ध नहीं होने से, वह, अभी, बीच-बीच में जगत की ओर आकर्षित भी हो सकता है । यह वियोगानुभूति, अवश्य ही, पहले की अपेक्षा उच्चस्तर की है ।

क्या मैं भी मीरा की भान्ति, प्रेम दीवानी हो पाऊंगी
भर आयगा दर्द से हिरदय, प्रेम-विरह में खो जाऊंगी
मीरा मो पर कृपा करे जो, तो ही प्रेम दीवानी होऊं
तो ही उन्मुख श्याम बनूं मैं, हिरदय अलख जगा पाऊंगी
लोगन लाखो साधन भजना, मेरा साधन प्रभु कृपा है

हो इतना अनुराग मेरे मन, राम की किरपा पा जाऊंगी
तीर्थ शिरोमणि दीवानी मीरा, मोरे हिरदय आय बिराजो
तुम आई तो राम भी आया, सेज राम की पा जाऊंगी

प्रभु वियोगानुभूति से अभिभूत भक्त, अपने मन में विरह की अग्नि प्रदीप्त करने के लिए, कृष्ण दीवानी मीरा की शरण ग्रहण करना श्रेयस्कर समझता है वैसे किसी भी प्रेमी महापुरुष को आदर्श रूप में स्वीकार किया जा सकता है। यहां इस पद में मीरा ही आदर्श है।

भक्त सोचता है कि मीरा बाई का हृदय कितना निर्मल पवित्र होगा। उस भगवान के लिए असीम प्रेम होगा तभी वह कृष्ण दीवानी मीरा कहलायी। क्या मैं भी मीरा की भान्ति, दीवानगी की सीमा तक, भगवान से प्रेम कर सकूं-गा? क्या मेरे अन्दर भी कभी, विरह की पीड़ा अनुभव होगी। मैं भी कभी विरह के अथाह समुद्र में डूब सकूंगा। मीरा, कृष्ण-प्रेम की प्रतिमूर्ति है। मीरा की कृपा का अर्थ, प्रेम-भाव की कृपा है। यदि कभी प्रेम-भाव की कृपा हो जाये तो मैं प्रेम-दीवाना बन सकूंगा। तभी मैं, जगत से पूर्णरूपेण विमुख होकर, भगवान के अभिमुख हो सकूंगा।

लोग कितने प्रकार की साधनाएं करते हैं, मेरी निष्ठा तो केवल प्रभु-कृपा में ही है। कृपा हो तो सभी मार्ग अपने आप खुल जाते हैं तथा चित्त शुद्धि का कठिन साध्य कार्य भी, भगवान का उत्तरदायित्व हो जाता है। क्या मेरे मन में कभी, ऐसा अनुराग, ऐसी तड़प तथा विरह का स्वाभाविक-भाव होगा कि मैं भगवान की कृपा पा सकूं। जब कृपा होती है तो उस अनुभव का वर्णन नहीं हो सकता। सीमाओं के बंधन टूट जाते हैं तथा, मन अथाह प्रेम से भर उठता है। क्या प्रेम का ऐसा अनुभव मुझे भी कभी प्राप्त होगा

जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि मीरा प्रेम-विरह का मूर्तिमान स्वरूप है। हृदय में, मीरा के आकर, विराजमान हो जाने का अर्थ है मन में विरह-प्रेम का उदय हो उठना। प्रभु के लिए विरह उदय हो जाने पर, जगत समक्ष होता हुआ भी, अपना महत्व खो देता है। तब पल-पल प्रभु मिलन की आशा में ही व्यतीत होता है। हृदय तड़पता रहता है। यह सब प्रभु-वियोगानुभूति के

पश्चात् ही सम्भव हो पाता है। जब प्रेम-विरह मन में समा जाता है, फिर प्रभु के आने में देर नहीं।

प्रभु-विरह की उत्कट भावना

आध्यात्मिक साधना की अत्युच्च अवस्था, विरह की स्थिति में, जगत या तो रसहीन लगने लगता है, या प्रभु का सौंदर्य ही सर्वत्र व्याप्त दीखने लगता है। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु एवं दृश्य, प्रभु की याद को द्विगुणित कर देते हैं। जगत प्रत्येक मनुष्य को दिखाई देता है, किन्तु उस का प्रभाव, चित्तस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न होता है। निर्मल-चित्त भक्त का हृदय प्रेम-विरह से ओत-प्रोत होता है। उसी दृष्टि से वह जगत की वस्तु, दृश्य अथवा घटना को देखता है। पानी की झर झर, पवन-सरसराहट एवं बादलों की गड़गड़ाहट में, उसे प्रभु ही अपनी ओर बुलाते सुनाई देता है। प्रत्येक दृश्य ऐसा दिखाई देता है जैसे अपनी सारी जड़ता परे उतार कर, अन्दर छिपे चैतन्य को प्रकट करने ही वाला हो। कण कण में, प्रभु की असीम एवं अनन्त सत्ता को उभरता सा देखता है। बहिर्मुखता हो, अथवा अन्तर्मुखता की अवस्था, वह गुप्त प्रभु सत्ता के प्रत्यक्ष होने की प्रतीक्षा में ही स्थित बना रहता है। चित्त की विरह अवस्था में जगत या तो एक दम गौण हो जाता है या प्रभु स्मरण का माध्यम।

अब विरह में, चित्त की आन्तरिक अवस्था पर भी थोड़ा विचार कर लिया जाय। हर समय की छटपटाहट, तड़पन, जलन, पीड़ा, आशा का निरन्तर बने रहना, यही सब विरह की स्थिति है। विरही भक्त, जैसे, शान्ति, चैन, इत्यादि को भूल ही जाता है। वह हर समय प्रभु-मिलन के लिए बेचैन बना रहता है। किन्तु, आश्चर्य की बात तो यह है कि विरही भक्त इसी बेचैनी में सुख एवं चैन अनुभव करता है। वह सदैव तड़पते, रोते, आहें भरते रहना चाहता है। वह इसी में रस तथा मधुरता पाता है। यह भक्ति की उच्चतम स्थिति है। इसीलिए भक्त यही चाहता है कि वह कभी मुक्त न हो। उसे ईश्वर कभी मिले ही नहीं। किन्तु, ईश्वर की याद, उस के मिलन की आशा, तथा उस के विरह में रोना-तड़पना निरन्तर बना रहे। यह वियोग रस सदा मिलता ही रहे। इस पद के भाव:—

श्यामा दर्शन की नहीं चाह

तुम जो पास हो मेरे आए, टूटा याद प्रवाह
याद में सुख है बड़ा अनूठा, हरदम रहत तड़पता
मीठा मीठा दर्द रहे है, नाहीं मुख से आह
जलत रहें हम, जलने दे तू, जलन यह जग से न्यारी
अधिक जलन, मन अधिक है शीतल, करो नहीं परवाह
तीर्थ शिवोम् सुनो घनश्यामा, रहो बजावत मुरली
हम तो, विरह अगन भली है, जग से बे-परवाह

हे श्याम सुन्दर ! कहीं मेरे पास न चले आना। ऐसा न हो कि मुझे दर्शन दे दो। हे प्रभो ! ऐसी भूल कदापि नहीं कर बैठना। मैं हाथ जोड़ता हूं, मुझे अपने ध्यान-स्मरण में ही तल्लीन रहने दो। यदि कहीं तुम मेरे पास चले आए, तो याद का प्रवाह, जो मन में निरन्तर बना रहता है, टूट जाएगा। वियोग-पीड़ा समाप्त हो जायगी तथा उस से प्राप्त होने वाला रस तथा माधुर्य विलीन हो जायगा। तेरी याद में जो सुख मिलता है, उस का क्या वर्णन करूं ? उस का वर्णन हो भी नहीं सकता। वह अनुभव, अन्य सभी अनुभवों से अनूठा एवं विचित्र है। अजीब ही प्रकार का मीठा-मीठा दर्द, हृदय में, कुछ अलग ही प्रकार की अनुभूति देता रहता है। उस के समक्ष, जगत का बड़े से बड़ा सुख नगण्य है। तुम्हारे मिलन के लिए, तुम्हारे वियोग में, हृदय तड़पा ही करता है। उस तड़पन के सामने, तुम्हारे मिलन का सुख भी छोटा पड़ता है। हम यदि जल रहे हैं, तो हमें जलने ही दे। इस वियोगाग्नि को कहीं ठण्डा न कर देना। इस जलन को प्राप्त करने के लिए योगी-तपस्वी उग्र तप तपते हैं।

वियोगाग्नि की धधक जितनी अधिक उग्र होती जाती है, उतना ही मन अधिक शीतलता अनुभव करता है। उसे जगत में किसी हानि-लाभ या सुख-दुख की परवाह नहीं रहती क्योंकि उस के समक्ष, जगत का तो महत्व ही समाप्त हो जाता है। बस, तेरी याद में तड़पते रहने का ही सुख मिलता रहता है। हे नन्द नन्दन घनश्याम ! तुम तो अपनी मुरली बजाने में ही मग्न रहो। हमारी चिन्ता मत करो। हम मुरली की तान सुनते रहें, तुम्हें याद करते रहें, यही हमारा सुख है

विरही की स्थिति केवल विरही ही जान सकता है। जा तन लागी, सोई

तन जाने। साहित्यक विद्वान तो केवल उस का बौद्धिक-विश्लेषण करने में ही लगे रहते हैं। उस पीड़ा को वही अनुभव कर पाता है जिस को यह व्याप रही है। यह तो कोई मीरा, कबीर, तुलसी, सूर अथवा तुकाराम ही, कोई बिरला ही भाग्यशाली होता है। रोने में भी सुख, तड़पने-जलने में भी आनन्द, विरह में भी संतोष, कैसी अदभुत लीला है। विरही भक्त की आन्तरिक अवस्था का थोड़ा अवलोकन तो कीजिए—

हिरदय में तो अगन लगी है, नयनन वर्षा होय रही है
कैसा अजब नज़ारा है यह, वर्षा अगन जगाए रही है
ज्यों ज्यों अगन बढ़त है जाय, वर्षा भी बढ़ती ही जाय
बढ़त हैं दोनों इक दूजे से, एकन दूज जगाए रही है
विरह ही अगनी भड़काए, विरह ही वर्षा बरसाए
विरह ही यह मेल कराए, विरह खेल खिलाए रही है
मोरे प्रीतम कैसी लीला, कैसा रूप यह प्रेम तुम्हारा
एक ही घर में अगनी पानी, हिरदय नयन जलाए रही है
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, प्रेम तुम्हारा अजब अनूठा
प्रेम करत न रहत जगत का, मन में ये ही आए रही है।

विरही भक्त, यद्यपि मुक्ति की कामना नहीं करता किन्तु जिस प्रकार भोजन करने पर क्षुधा-निवृत्ति स्वयमेव हो जाती है, अलग से इच्छा करने की आवश्यकता नहीं है। उसी प्रकार विरही, मुक्त होता ही है क्योंकि भक्ति का फल मोक्ष ही है। किन्तु फिर भी, भक्त तो विरह-रस में ही डूबे रहना चाहता है।

विरह की कैसी विचित्रता है? एक ओर तो वियोग की ज्वाला है, दूसरी ओर प्रियतम की याद में, अनवरत अश्रुधारा। हृदय में अगनी, नयनों में पानी। पानी अगनी का अनोखा मिलन। यह भी विचित्र बात है कि नयनों में प्रवाहित अश्रुधारा का कारण, हृदय में धधकती अगनी है। न केवल प्रवाहित करती है, अपितु उसे बढ़ाती भी है, उस की निरन्तरता भी बनाए रखती है। यदि सूक्ष्म विचार से देखा जाय तो समझ आती है कि हृदय में विरहाग्नि तथा नयनों की अश्रुधारा परस्पर संबंधित हैं। जितना अधिक रुदन होता है

आहें भरी जाती हैं, उतनी ही हृदय में अगनी भी बढ़ती हैं। दोनो अन्योन्याश्रित हैं। एक दूजे को बढ़ाता है तो दूजा पहले को। इस सारी प्रक्रिया में अश्रुधारा प्रवाह तो देखा जा सकता है किन्तु उसे भी समझ या जान पाना आसान नहीं। हृदयाग्नि तो अव्यक्त अदृश्य है। उस के बारे में विद्वान कल्पना ही कर सकते हैं। किन्तु कल्पना वास्तव के कितनी समीप है यह वह स्वयं भी नहीं जानते।

विरह, भगवान द्वारा उपजाया गया अनोखा तत्व है। वह एक ओर अगनी भड़काता है तो दूसरी ओर वर्षा का कारण है। केवल इतना ही नहीं, वह दोनों का मिलाप भी करवाता है। दोनों को एक दूजे के आश्रित भी कर देता है तथा विरह ही दोनों को बढ़ाने में मुख्य भूमिका निभाता है। विरह पाने के लिए ही जीव युग-युगान्तर से प्रयत्न करता आ रहा है। कभी प्रयत्न में तत्पर हो जाता है तो कभी इस से दूर हट जाता है। प्रभु-कृपा ही, जीव को, विरह पाने में सफलता प्रदान करती है

जीव प्रभु के प्रेम तत्त्व को समझ नहीं सकता, किन्तु उस की कृपा से प्रेम-सागर की गहराइयों में गोते अवश्य ही लगा कर, उस का आनन्द उठा सकता है। वह आनन्द प्रभु की भान्ति ही अकथनीय है किन्तु इस आनन्द की प्राप्ति के लिए, जगत के प्रति आसक्ति का त्याग अनिवार्य है क्योंकि आसक्ति ही प्रेम भाव के विकास में बाधक है। वैसे देखा जाए तो विरह ही वेदान्त का मुमुक्षुत्व है। अन्तर केवल इतना है कि मुमुक्षुत्व में मोक्ष की कामना होती है, विरह कामना-रहित है। मुमुक्षुत्व में भी जब तक कामना रहती है, मोक्ष नहीं होता। अन्ततः ज्ञानी साधक भी आत्मनिवेदन कर देता है। आत्मनिवेदन पर वेदान्त तथा भक्ति बहुत समीप आ जाते हैं। इस प्रकार ईश्वर-वियोगानुभूति, तथा प्रभु वियोग की उत्कट विरह रूपी सीढ़ियां चढ़ता हुआ प्रेमी भक्त ईश्वरीय कृपा के द्वार पर आ खड़ा होता है। यहां तक पहुंचते-पहुंचते, वैराग्य तो सिद्ध हो ही जाता है, वासना तथा संचित कर्म भी निर्बीज हो जाते हैं। अब तो केवल प्रभु कृपा पर आश्रित रह कर, तथा पर-वैराग्य से युक्त हो कर, साधक शरणापन्न हो जाता है। नारद भक्ति सूत्र के अनुसार यही आत्माराम (आत्म रमण) की स्थिति है। अपना भिन्न, स्वतंत्र, व्यक्तित्व त्याग कर, प्रभु में विलीन हो जाना ही शेष रह जाता है जिस के लिए किसी साधना की नहीं, प्रभु कृपा की ही आवश्यकता है

कृपा

हे प्रभु किरपा करी जो मन मेरा थिर कर दिया
भागता फिरता था जग में, चरन अपने कर लिया
मैं था चंचल, मैं था पापी, भोग ही रत था सदा
मन मेरे अनुराग जागा, मन को वश में कर दिया
यह जगत मन को लुभावन, सपन हीरे या सुनहरे
जगत बंधन से छुड़ाया, प्रेम को मन भर दिया
तेरी किरपा क्या बखानूं, क्या अनोखा खेल खेला
भटकता चारों दिशाएं, इक जगह पर रख दिया
हे प्रभु बलिहार जाऊं, हूं पड़ा चरणीं शीशोम्
रास्ता भूले था जो मैं, राह पर मो कर दिया

हे प्रभु! तेरा चाहे कितना भी धन्यवाद करूं, कम है। तू ने मुझ पर ऐसी कृपा की है कि मेरे चंचल तथा अस्थिर मन को एकाग्र तथा स्थिर कर दिया। चंचलता का कारण, सभी वासनाओं को क्षीण कर, निर्मल बना दिया है। जो कार्य मुझ से हो पाना, कभी भी, कितना भी प्रयत्न करने पर सम्भव नहीं था, उसे सहज ही सम्पादित कर दिया। कहां तो मैं, जगत में सुख प्राप्ति की इच्छा से भागा फिरता था और कहां अब हे प्रभु! मेरा मन तेरे चरणों में ही अनुरक्त हो कर, स्थिरता प्राप्त कर गया है, जगत से उपरामता हो गई है। तू ने मेरे अन्दर की सब पाप-राशि को, अपनी चेतन सत्ता की क्रिया शीलता से भस्मीभूत कर दिया है। मैं अति चंचल, पाप कर्म करने में अत्यन्त कुशल था तथा जगत भोगों में आसक्त बना रहता था तथा लोभ ने पूर्णतः अपने वश में कर लिया था। मेरा मन जगत के इतना अधीन हो गया हुआ था कि विवेकयुक्त निर्णय ले पाने में एक दम असमर्थ हो गया था। किन्तु आपने अपनी असीम अनुकम्पा से, मेरे चंचल मन में अपने चरणों के प्रति गहरा अनुराग जगा दिया। मेरा व्यक्तित्व एक दम परिवर्तित हो गया। मेरा मन स्वाभाविक ही मेरे वशीभूत हो गया। उस के लिए कोई प्रयत्न करने की आवश्यकता नहीं रही। कहां तो मैं मन के अधीन था, कहां मन मेरे अधीन हो गया

यह जगत बड़ा आकर्षक, सुन्दर तथा अत्यन्त प्रिय लगने वाला है, यह मिथ्या होते हुए भी, इस के प्रति सत्यता, नित्यता एवं सुखदायक की भावना बनी रहती है।

जीव को अपने ओर खींचने की इस की क्षमता बेजोड़ है। मनुष्य, इस में सदैव ही सुनहरे भविष्य की कल्पनाएं किया करता है। एक इच्छा पूरी हो जाने पर दूसरी खड़ी कर लेता है। किन्तु आप की महती कृपा ने मुझे इस जगत के बंधन से मुक्ति प्रदान कर दी। जगत की असारता मेरे समक्ष स्पष्ट हो गई। इस का सुखदायी स्वरूप मेरे लिए विलीन हो गया। इस की जड़ता उजागर हो गई। आप की कृपा से मन में, जगत के प्रति आसक्ति के स्थान पर, आप के चरणों के प्रति अनुराग उदय हो गया।

मैं कृपा का वर्णन नहीं कर सकता। आप की कृपा अलौकिक एवं इन्द्रियातीत है। वाणी उस का बखान कर पाने की सामर्थ्य ही नहीं रखती, केवल अनुभव ही हो सकता है। केवल इतना ही कह सकता हूं कि आप ने मुझे सभी सीमाओं से मुक्त कर, आनन्द से भर दिया। वह आनन्द कैसा है, कह नहीं सकता। मैं जो चारों दिशाओं में सुख की खोज में भटकता फिरता था, मुझे एक स्थान पर स्थिर कर दिया, तथा वह एक स्थान है आप के चरण।

आप के बलिहारी जाऊं, आप का यशोगान करूं, इस के अतिरिक्त आप का धन्यवाद करने के लिए मैं कर भी क्या सकता हूं। आप के श्रीचरणों में अपना मस्तक रख सकता हूं। मैं राह भटका था, कहां जाना, कुछ पता न था। यह भी नहीं जानता था कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं। आप की कृपा से ही मुझे सभी प्रश्नों का सही एवं स्पष्ट उत्तर प्राप्त हुआ। भटका हुआ, राह पर लग गया। अब मेरा लक्ष्य तथा मार्ग दोनों ही, मेरे समक्ष प्रत्यक्ष हैं।

कृपा प्राप्त कर, विरही-प्रेमी भक्त आनन्द एवं मस्ती से भर जाता है, उस का रोम रोम नाचने लगता है। मन का प्रत्येक भाव-विचार उस प्राप्त आनन्द की अभिवृद्धि ही करता है।

आनन्द

खुशियां मनाओ रे, माया रात गई अंधयारी
रात यह माहीं बहु दुख भोगे, अन्तिम गई निशा तमकारी
आज है होली, आज दिवाली, ज्ञान का सूरज आज उगा है
जग-मग जग-मग होत दिशाएं, सभी ओर छाई उजियारी
तीजा नेत्र खुला शिवशंकर भस्मी भूत है तृष्णा माया

अब तो आनन्द, आनन्द, आनन्द, नहीं सतावत जगत दुखारी
तीर्थ शिवोम् है नाचो गाओ, अब न कोई दुखड़ा बाकी
टूटा भ्रम, आवरण हटा सब, खुल गई अन्तर ज्ञान किवारी

आओ, आओ, आज से बढ़ कर, और खुशी का दिन, कौन सा हो सकता है? जन्म-मरण की, युगों-युगों से चली आ रही, लम्बी भयानक माया रूपी रात्री व्यतीत हो गई है। अन्तर में ज्ञान-सूर्य उदय हुआ है। माया का आवरण अन्ततः टूट ही गया दुख तो बहुत भोगने पड़े, कष्ट अनेकों सहन करने पड़े। अपमान, विवशता तथा अशक्तता के असंख्य कड़वे घूंट पीने पड़े, पर अन्त में यह तमांधकार मयी रात्री व्यतीत हो ही गई। प्रभु ने कृपा कर, अपनी माया समेट ही ली।

आज का दिन ही होली है क्यों अन्तर, प्रभु-प्रेम में रंग गया है। आज ही दीवाली है क्योंकि अन्तर, ज्ञान-प्रकाश से जगमगा उठा है। अब तो प्रति दिन ही होली दीवाली रहेगी, मन प्रेम में रंगा रहेगा, अन्तर में ज्ञान प्रकाशित रहेगा। अब नित्य पर्व है, सुख है, आनन्द है। अन्दर या बाहर, किसी भी जगह पर, किसी दिशा में ऊपर अथवा नीचे, अंधकार का लेष-मात्र भी दिखाई नहीं देता है। सभी ओर ज्ञान का प्रकाश ही फैला है।

भगवान शंकर ने अपना तीसरा नेत्र खोल दिया है। उस की प्रचण्ड ज्वाला में माया, काम, क्रोध, तृष्णा, वासना, ममता, द्वैष सब जल कर भस्मीभूत हो गए हैं। शंकर के त्रिशूल ने प्रलय मचा कर, तीनों गुणों को समेट लिया है। तथा उन की जटाओं से पतित-पावनी गंगा जी प्रवाहित हो उठी हैं। अब मन में आनन्द, सत तथा चित के अतिरिक्त कुछ बचा ही नहीं है। अब काहे का जगत तथा काहे के जगत के सुख-दुख। वासना वृत्ति सब शान्त, संस्कार सभी निर्बीज, विकार सभी क्षीण। अब मैं हूं, या फिर मेरे प्रभु हैं। और तो कोई कुछ देखने-सुनने वाला है ही नहीं।

रोम-रोम, आनन्द में झूम रहा है। जगत में सर्वत्र सौंदर्य तथा प्रेम ही छाया है। मित्र या शत्रु की भावना समाप्त हो गई है। दुख, ढूंढने पर भी कहीं दिखाई नहीं देता। अन्तर में, जन्म-जन्मान्तर से बैठा भ्रम टूट-टूट कर चकनाचूर हो गया है। जड़-चेतन की आभासित, बंधी गांठ खुल गई है। चित्त पर पड़ा, माया का आवरण जो कि सब दुखों का मूल था, हट गया है। ज्ञान की खुली खिड़की सामने आ गई।

माया हटी कि ज्ञान प्रकाशित हो गया

इस प्रकार आप पाएंगे कि इन भजनों, पदों, ग़ज़लों में, समझने तथा जीवन में उतारने के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री उपलब्ध है। इन का गायन सीधे, बाण की तरह, हृदय को प्रभावित करता है। जब स्वर, ताल सहित, भाव-विभोर हो कर, भक्त-गायक इन का आनन्द लेता है तो श्रोता-वर्ग भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता। वह भी अपने अन्तर में कुछ परिवर्तित होता हुआ सा अनुभव करता है। वास्तव में गायन का आनन्द, प्रथम गायक ही उठाता है, तभी श्रोता भी आनन्दित हो पाते हैं।

संगीत तथा काव्य मूल रूप में भक्तों-महात्माओं की क्रियाएं हैं। भक्त के हृदय के अन्तर् भावों की बहिर, छन्द बद्ध, लयबद्ध अभिव्यक्ति ही काव्य है। उसी भावमय आवेश में, उस के पांव थिरक उठते हैं तथा वाणी मधुर स्वर में अलाप देने लगती है आगे चल कर भले ही, काव्य-संगीत का, मनोरंजन तथा बुद्धि कौशल के कलात्मक विषय के रूप में विकास हो गया हो किन्तु मूल रूप में यह भक्तों के ही विषय हैं।

संगीत का उद्देश्य, हृदय में, प्रभु के प्रति भाव उत्पन्न करना है। जो गायक सुर-ताल की बारीकियों में ही उलझे रहते हैं, उन का हार्दिक भाव कदापि उदय नहीं हो पाता। जो भावाभिमुख हो कर गायन करता है, सुर-ताल उस के पीछे पीछे चलते हैं। संगीत के सुर-ताल का अभ्यास संगीत साधना नहीं, अपितु संगीत के द्वारा हृदय के भाव को जागृत करने का अभ्यास संगीत साधना है। सुर-ताल का अभ्यास बहिर्मुखी है, जबकि हृदय का भाव जागृत करने का अभ्यास अन्तर्मुखी है, यही संगीत साधना है। साधना का संबंध ही उन क्रियाओं से है जो जीव के लक्ष्य को अन्तर्मुखी ले जाएं। संगीत साधना में, काव्य तथा संगीत एक दूसरे के पूरक होते हैं। ध्वनि, शब्द एवं भाव का सम्मिश्रण ही साधना कहा जाता है, जो अन्तर्भाव जागृत करने में कारण तथा सहायक होता है।

आज का युग स्वार्थ, अभिमान, विषय भोग तथा द्वन्द्वात्मक युग है उसी के अनुरूप साहित्य तथा काव्य रचनाएं भी देखी जा रही हैं। भक्ति-काव्य की आज जितनी आवश्यकता है, पहले नहीं थी। हिन्दी साहित्य के भक्ति काल में जितनी अशान्त परिस्थितियां थीं, उन से कहीं अधिक अशान्त आज हैं। भक्ति काल में अशान्ति बाहर थी। सर्वत्र मार-काट मची थी। परन्तु आज प्रत्येक चित्त युद्ध-क्षेत्र बना हुआ है।

अश्रद्धा, अनास्था, स्वार्थ लोलुपता, परस्पर संशय आदि का हर चित्त में साम्राज्य है। आक्रमण बाहर से नहीं, अन्दर से हो रहे हैं। भाई का भाई शत्रु बना बैठा है। हर परिवार में वैमनस्य व्याप्त है। ऐसी विषम परिस्थितियों में प्रभु तथा उस के प्रति प्रेम ही एक सहारा है। सुधारवादी इस समस्या का समाधान नहीं खोज सकते। कानून मात्र बना देने से भी समाधान नहीं हो सकता। राजनेता अपनी स्वार्थ सिद्धि में संलग्न है। भक्ति मार्ग ही आज के युग की मांग है।

यद्यपि आज बाह्यरूप में, देखने में, धर्म-भक्ति का प्रचार-प्रसार बहुत अधिक होता जा रहा है। न भक्ति विषयक प्रकाशनों की कमी है, न ही मन्दिरों-मसजिदों की। प्रवचन-सतसंग भी थोकबन्द हो रहे हैं। कथा-कीर्तन की भी बाढ़ सी आई हुई है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि सब दिखावा जैसा हो रहा है। कहीं न कहीं, कुछ त्रुटि अवश्य है। जो परिणाम दिखना चाहिए, जो परिवर्तन आना चाहिए, वह नहीं आ पा रहा है। आज प्रत्येक व्यक्ति की रुचि एक दूसरे को नीचा दिखाने में ही है, फिर चाहे भक्ति का क्षेत्र ही क्यों न हो। एक दूसरे को देख कर लोगों के मन प्रसन्न नहीं हो पाते। परस्पर प्रेम नहीं रहा। चाहे किसी से कितना भी प्रेम किया जाये, समय आने पर वह धोका ही देता है। लोगों के चित्त की अन्तर्दशा ही बाहर प्रतिबिम्बित होती है। ऐसे मलीन चित्त में प्रभु का प्रेम क्योंकर पनप सकता है।

भारत सदा से ही अध्यात्म प्रेमी देश रहा है। इस लिए इसके चिंतन तथा साधन प्रणालियों में, सभी मार्गों, सिद्धान्तों तथा सम्प्रदायों के समभाव तथा समन्वयात्मक दृष्टिकोण रहा है। दृष्टि की इस व्यापकता के होते हुए भी भारत स्वयं आज, आध्यात्मिक दृष्टि से पतन की ओर बढ़ रहा है। एक दूसरे की भूलें सब दिखाते हैं, संभवतया सुधारने का प्रयत्न भी करते हैं किन्तु अपनी ओर कोई भी देख नहीं रहा। अपने को सुधारने का प्रयत्न क्वचित ही देखने में आता है। कोई एकाध व्यक्ति सुधार के पथ पर, अपवाद स्वरूप आरूढ़ हो सकता है पर समाज पतनोन्मुख ही है।

व्यक्ति को समाज सुधार के साथ, अपने आप को भी सुधारने का प्रयत्न अनिवार्य है। स्वयं सुधरे बिना, किसी दूसरे को सुधारा भी नहीं जा सकता।

भक्ति-विषयक भजनों का पठन, गायन, श्रवण अपने आप को सुधारने तथा मन में भगवत्प्रेम जाग्रत करने का ही एक प्रयत्न है। यदि एक हज़ार व्यक्ति भी, समूह में बैठ कर, भजन श्रवण कर रहे हैं, तो उन में से प्रत्येक व्यक्ति, अपने हृदय पर प्रभाव अनुभव करता है, सोचता है, अपने दोष देखता है, पश्चात्ताप करता है, दोषों को दूर करने का प्रयत्न करता है। यही भक्ति संगीत की उपादेयता है

ऊपर जिन भावों तथा चित्त-स्थितियों का वर्णन किया गया है, उस के अतिरिक्त भी साधना तथा मन की अनेकों स्थितियां तथा भाव हैं, जिन का यहां पदों के माध्यम से विवेचन करने का प्रयत्न किया है। उदाहरणार्थ मन के हाथों सभी परेशान हैं। किसी की भी भली बात मानना, वह जानता ही नहीं। पल में इधर, पल में उधर, न स्वयं आराम से बैठता है, न बैठने देता है, जैसे कहा है

आप तो बिगड़ा सो तो बिगड़ा, काहे रह्या बिगारत मोहे
मोहे चंचल जगत करत है, चैन न लेवन देवत मोहे
रे मन काहे करत रह्या तू, भला बुरा कुछ भी न सोचे
खींचत लेवत जग विषयन में, भोगन माहीं लगावत मोहे

मन को समझाते हुए कहा है:—

मनवा तू काहे सोय रह्या
विमुख बना तू आतम सुख सों, बेसुध होय रह्या
या जग देखन में ही सुन्दर, पर रस कछु भी नाहीं
क्यों भरमाया या के पाछे, समझत नाहीं रह्या
यह जग तो कागद के फुलवा, जा में वास न कोई
वास बसे अन्तर में तेरे, देख तू नाहीं रह्या

फिर समझाया:—

रे मन। राम रटत तू रहियो
विषयन माहीं नहीं उलझ तू, मन आनन्द मनैयो
अन्तर पापन संचय कीने, जग आसक्त भया तू
अब तो जाग जाग तू मनवा, गोविन्द गोविन्द कहियो

इसी प्रकार विनय के अनेकों पद हैं, जिन में भक्त के हृदय में उभरने

वाले विभिन्न भाव वर्णित हैं। वास्तव में विनय भी साधना का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। यह विनय, जगत के प्रति नहीं, अपितु प्रभु के समक्ष होती है। जगत के प्रति विनय स्वार्थ का ही एक सभ्य स्वरूप है, वह विनय है ही नहीं। जब विनयशील हो कर, भक्त, प्रभु के सामने अपने हृदय की हीनता की व्यथा-कथा का रोना रोता है तो वह उस के अन्तर की पुकार होती है। विषयों से दुखी हो कर, उस का हृदय चीत्कार कर उठता है जो उस की तड़प को अभिव्यक्त करता है। विनय दिखावा मात्र नहीं, हृदय की सच्ची पुकार है

डूबत जात, लेय बचाय
और छोर कछु सूझत नाहीं, भव जल रह्या अति गहराय

एक और:—

मन मतंग नहीं मानत मोरा
घूमत फिरे जगत उपवनहिं, लगा रहे वह मोरा तोरा
मन है लोभी जगत विषय का, काम क्रोध, भोगन का भोगी
या में ही वह डोलत रहता, नाम न लेत कभी भी तोरा

और अन्त में कहा:—

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मो पर किरपा तेरी होवे
दीन हीन मन से दुखियारा, दर पर आय पड़ा मैं तोरा

ग़ज़लें भी पर्याप्त हैं जो प्रायः विरह या पश्चाताप से संबंधित हैं। ग़ज़लों का भी अपना ही रंग है। कभी ऐसा जान पड़ता है कि अमुक ग़ज़ल कुछ भौतिक दृष्टि से लिखी गई है किन्तु ध्यान से देखने पर, आध्यात्मिकता झलकने लगती है। हम ने जो कुछ भी लिखा है उस में आध्यात्मिक पक्ष ही प्रबल है। इसी प्रकार कुछ माया, शिक्षा के पद भी हैं

भूमिका काफी लम्बी होती जा रही है इस लिए विराम देना ही उचित है लोगों की मांग को दृष्टि में रखते हुए, इस बार का भजन-संग्रह हस्तलिखित प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया, यद्यपि इस में मुझे श्रम काफी करना पड़ा है एक तो अस्वस्थता, जीवन का अन्तिम चरण, कमज़ोर आंखें, ऊपर से इतना श्रम

साध्य कार्य। मेरे लिए यह काफी कठिन था। यह तो सब जानते ही हैं कि मेरे पैर राग-ताल बिठाने का कार्य ब्रह्मचारी पंकज प्रकाश करते हैं। अब की बार भी उन्हों ने ही किया है।

सन्त अथवा भक्त जब जगत को समझाते हैं तो सर्व प्रथम अपने आप को जनता की पंक्ति में खड़ा कर लेते हैं जिस से लोगों की यह शंका समाप्त हो जाती है कि वह तो भगवान या महान संत थे, वह ऐसा कर सकते थे किन्तु मलिन-चित्त सामान्य संसारी हैं। गुरु नानक देव जैसे महापुरुष, जिन को कई लोग भगवान ही मानते हैं, अपने आप को नीच, पापी और घमण्डी कहते हैं। तुलसी दास तथा सूरदास भी अपने मन का रोना रो कर ही जगत को समझाते हैं। तुकाराम तथा नामदेव भी अपने मन को फटकारते हैं। मैं कोई संत या महापुरुष नहीं हूं। मेरा मन भी, जगत के सामान्य जनों जैसा है। आओ हम मिल कर, भगवान से विनयपूर्वक प्रार्थना करें, अध्यात्मिक उत्थान के लिए प्रयत्नशील हों, तथा एक दिन प्रभु की कृपा प्राप्त कर लें

आशा है कि 'प्रत्यागमन' नाम यह भजन संग्रह साधकों को, मन संयत करने तथा भगवद् प्रेम जागृत करने में सहायक होगा। श्री गुरु महाराज सब का कल्याण करें

शुभचिन्तक
— शिवोम् तीर्थ

श्री विष्णु तीर्थ उपवन
फूलों की घाटी
ग्राम पिपलिया राव
इन्दौर (म.प्र.)
1998

अनुक्रमणिका

गुरुदेव

	पृष्ठ सं.
१. गुरु चरन रज नयनन	३५
२. पूरा नूर, ज़हूर है पूरा	३५
३. गुरुदेव बलिहार	३६
४. दीन दयाला मेरा गुरुजी	३६
५. नमो नमो जय गुरुदेवा	३८
६. गुरु है नाहीं दूर	३७
७. गुरु चरन पर मैं बलिहार	३९
८. गुरु ने जनम सफल कर दीना	४०
९. सदगुरुदेव शरण तेरी आया	४१
१०. पहले तो मैं दुख ही पायो	४२

विनय

११. तू मालिक तू साहिब मेरा	३७
१२. मन मतंग नाहीं मानत	४३
१३. मैं भटक भटक कर	४३
१४. निन्दा किसी की न करूं	४४
१५. प्रभु मोरे।	४४
१६. रोक सकता, मोड़ सकता	४५
१७. गुरु जी! मैं नीचन का नीच	४६
१८. तू समर्थ तू दाता मेरा	४७
१९ क्या करूं इस क्रोध का	४८
२०. डूबत जात लेय बचाय	४९
२१. प्रभु जी! कैसे पार मैं उतरूं	५०
२१ राम करत हमरी	५१
२२. मीरा जैसा मन कब होगा	५२

२३. कब होगा छुटकारा ५३
२४. महादेव शंकर त्रिपुरारि ५४
२५. प्रभु यह जगत ५५
२६. राम नाम ही एक सहारा ६६
२७. मान गयो मैं मान गयो ७८
२८. सहन शक्ति दे मुझे ९१
२९. मैं तुझे मनाते हार गई १२०

विरह

३०. राम गए नगरी भयी सूनी ४७
३१. कबर आओगे घनश्याम ५६
३२. सखी री ! मन मोरा अकुलात ५६
३३. हिरदय अगन लगी ५७
३४. आओगे कब कन्हैया ५७
३५. दुख जो होय बिरह माहीं ५८
३६. राम गए तो गई ५९
३७. बिरह रात कठिन ६०
३८. हिरदय में तो अगन लगी है ६१
३९. घबरावत अकुलावत ६२
४०. क्या करूं मैं ६३
४१. मन मेरे में ६४
४२. तुम ने कहा जगत को छोड़ो ६४
४३. क्या करूं घनश्याम ६५
४४. याद हरे न मन सों ६५
४५. ब्रज को भूल गए ६६
४६. छोड़ के न जैयो ६७
४७. जोगी मीत किसी का नाहीं ६८
४८. हरि दीख्या सन्मुख म्हारे ६८

४९. भयी बावरी राम की ६९
५०. सखी री ! प्रीत न करियो का सों ७१
५१. मैं सुहागिन, विधवा जीवन ७१
५२. मन को कहीं न जाय का सो ७२
५३. तुम जो नहीं दिखात ९८
५४. लिखया भजन सुनाया लोगन ९९
५५. तेरे लिए मैं दर दर ठोकर खाई ११२

भक्ति

५६. जब हरि के दर्शन पा जाऊं ३८
५७. श्यामा ! दर्शन की नहीं चाह ६१
५८. नाम जपे और सिमरन राखे – स्मरण १२३
५९. सद्गुरु इष्ट चरण उर धारे – पादसेवन १२३
६०. दास्य भाव है भाव समर्पण – दास्य १२४
६१. सखा भाव है प्रेम सखा का – सख्य १२४
६२. देव गुरु का करत है पूजन – अर्चन १२५
६३. करे वन्दना सद्गुरु देवा – वंदन १२५
६४. कथा श्रवण सत्संग कीर्तन – श्रवण १२४
६५. नाम हरि गुणगान कीर्तन – कीर्तन १२५
६६. मैं विलीन हो आत्म तत्व में – आत्म निवेदन १२२
६७. मित्र शत्रु को सम कर देखे – गीता १८/१२ १२६
६८. नहीं तृष्णा मन कोई जा के – " १६/१२ १२७
६९. हर्षित होत नहीं मन कबहूं – " १७/१२ १२७
७०. रहे भक्त संतुष्ट सदा ही – " १४/१२ १२८
७१. भक्त रहे जो त्यागी ऐसा – " १५/१२ १२८
७२. हरि भगत का प्रथम यह लक्षण – " १३/१२ १२९
७३. धन्य धन्य प्रभु सेवक तेरे १३०
७४. उलझन हृदय की कैसे जाय १३१

७५ प्रभु विराजे अन्तर माहीं — २२२
७६ मनवा मेरा बोल उठे कब — मीरा गीत — २०२
७७. वैद सांवरिया कब आएगा — " — २०१
७८. क्या मैं भी मीरा की भान्ति — " — २०३

सावधान, सीख

७९. काहे करत प्रमाद भजन में — ४८
८०. मेरा तेरा, तेरा मेरा — ५२
८१. तेरी अकल गई है मारी — ६०
८२. अब घर चालो मेरे भाई — ७५
८३. विषयन भोगन उमर बिहाई — ७७
८४. रे मन, राम रटत तू रहियो — ७८
८५. मनवा रे! तू क्यों फिरत गवारो — ७९
८६. पोथी पढ़ पढ़ जीवन बीता — ८०
८७. दर्शन हेतु तीरथ जाए — ८०
८८. चलो चलो आ बाहर देखो — १००
८९ कब तक चाले चाल कुचाल — १०३
९०. जो जग में तुम सुख मांगत हो — १०६
९१. जो खोजा सुख तो पाया — ११३
९२. कब तक रहेगा सोता — १२१
९३. मनवा कबहूं लगे भजन में — १२२
९४. सोच रहा तू क्या रे भाई — १३८
९५. धीरे धीरे रे मना — १५७
९६. साधो, समझ लेयो मन माहीं — ६२
९७. उजली चादर प्रभु ने दीनी — ६७
९८ मनवा छोड़ दे तू अभिमान — ७०
९९ दिया बिता जीवन विषयन संग — ७३
१०० फूल जब बगिया खिले हैं — ७३

२०१ - अहंकार और जगत पिपासा ७४
२०२ - जगत भोग में लगा रहा तू ७४
२०३ - मनवा तो भरमाए ८१
२०४. मन को अपने में ही जानूं ८२
२०५. अन्दर शत्रु बाहर शत्रु ८३
२०६. दुख का कारण ८४
२०७. निन्दक को क्यों दूर भगायो ८४
२०८. कठिन है राम का पाना ८५
२०९. सेवा थोथी, दिल परचाया ८६
२१०. बिन विराग भगती न होई ८७
२११. दिन आवे और दिन ढल जावे ८७
२१२. चाहे जो तू राम को पाना ८८
२१३. जो जन तोड़े दुख देवत है ८९
२१४. दुर्बल को छेड़त हो काहे ८९
२१५. काम राम का मेल न होवे ११९

पश्चाताप

२१६. पल पल करते, छिन छिन करते ६९
२१७. सुनत विचारत उमर बिहाई ६५
२१८. कैसा मनवा हो गया मेरा १३९
२१९ निकल जब गाड़ी गई तो मैं टिकेट लेने चला १४७
२२०. यह मुझे क्या हो गया है १५६
२२१. मन में यह क्या आई मेरे १५६
२२२. जग में उलझा, जग न छोड़े १५७
२२३. उमरिया बिरथा बीत गई १५८

कीर्तन

२२४. नन्दनन्दन गोवर्धन धारी ४१
२२५. नयनों के तारे आ जा ४६

१२६. कान्ह जी, दीजो मो वरदान ९९
१२७. भजन तू करत नहीं क्यों १००
१२८. मुरली सुनाओ श्याम १०४
१२९. कृष्ण मुरारे हे १०४
१३०. कुंज बिहारी, कुंज बिहारी १०५
१३१. राम जपो रे, राम जपो रे १०५
१३२. रघुवीर तेरी किरपा १०६
१३३. राम ही राम रटत मन रहियो १०७
१३४. भगती भाव मन जागा रे १०८
१३५. गोविन्दा इक मन मतवाला १०८
१३६ प्राण तुम्हीं हो १०९
१३७. मेरा मन लागा कृष्ण गोपाल ११०
१३८. हनुमान बलवीरा ११०
१३९ जय मोहन जय हरे मुरारे १११
१४०. हम पड़े अंधेरे कूप ११२
१४१. गोविन्द के गुण गाना ११३
१४२. तुलसी राम, सूर घनश्याम ११४
१४३. राम नाम ही प्यारा मो को ११५
१४४. चाहे जगत बिसर मैं जाऊं ११५
१४५. राम नाम ही पार उतारे ११६
१४६ जग दुखड़े बहुत उठाए ११७
१४७ मनवा क्यों न जपत मुरार ११८
१४८ आए हैं तेरी शरण में ११९
१४९ राम राम जप, राम राम भज १२०
१५० किरपा किरपा राधे राधे १२१
१५१. रमैया हे रमैया १३७
१५२. हम आए पाने कृपा १४०

२५३ तेरी न ही याद ने मुझे २०१

ग़ज़ल

२५४. आशिक मैं तेरे दर का २१७
२५५. क्या सितम तुम हो जलाते दिल ही मेरा २३५
२५६. मैं तो अब घबरा गई हूं २३५
२५७. तुम ने जाना था तो जाते २३६
२५८. जा रहे हो छोड़ कर २३६
२५९. सोचा भी न था एक दिन ऐसा भी आएगा २३७
२६०. मेरा अब क्या होगा २३८
२६१. मन मेरे यह आ रही है २३९
२६२. जगत में हर वक्त ही २४०
२६३. तू समझता अपने को है २४२
२६४. कैसे पहुंचेंगे तुम तक यहां २४२
२६५. जब तेरा जलवा हुआ, दिल थाम कर मैं रह गया २४३
२६६. सोचा था कर जाऊं कुछ २४४
२६७. ज़िन्दगी तो कट गई २४४
२६८. घर किया था मैं ने २४५
२६९ दिल शाद है २४६
२७० जगत को देखा जो मैं ने २४६
२७१ डगर चलते पांव मेरे २४७
२७२ दुनिया से अब मन २४८
२७३ प्रेम छाता मन मेरे में २४८
२७४. क्रोध के मारे २४९
२७५. चल हट परे २४९
२७६ अब कहां जाना २५०
२७७. जब जनाज़ा अपना देखा २५२
२७८ जनाज़ा मेरा ले कर २५२

१७९. दिल मेरा जो आ गया		१५२
१८०. दिल जला तो जल गया		१५३
१८१. जो गया सो तो गया		१५३
१८२. याद को दिल में समेटे		१५४
१८३. ज़िन्दगी तो रायगां		१५४
१८४. दे दिया सो दे दिया		१५५
१८५. दिल है मेरा या कि तू है		१५५
१८६ क्या करूं मैं दिल का तेरे		११८
विविध		
१८७. हरि सुमिरन सगला	नाम	४०
१८८. जो भी गया जगत को	वैराग्य	४२
१८९ धन सों, नाम सों	"	५०
१९० किस की भयी है काया	"	७७
१९१. छोड़ मुझ को	"	९३
१९२ आप तो बिगड़ा सो तो बिगड़ा	मन	५१
१९३ मेरे पीछे काहे लगे हो	"	७५
१९४. मनवा तू क्यों सोय रह्या	"	७९
१९५ मन नहीं लागत तुमरी चरणीं	"	१०९
१९६ प्रभु जी! यह मन	"	११८
१९७ मैं समझाय रह्या तोहे	"	१५८
१९८ माया नटनी जग को	माया	५३
१९९ मुख सों माया कहत सभी	"	९४
२०० माया एक जगत भरमावे	"	१३३
२०१ मुरली श्याम बजत	आनन्द	५४
२०२ गगने मण्डल पीव	"	६३
२०३ खुशियां मनावो रे	"	७६
२०४ प्रेम प्रभु में खोई	"	८१

२०५ चाली, चाली, चाली मैं	आनन्द	८५
२०६ कान्हा मुरली मधुर बजाई	,,	१३२
२०७ प्रेम बजरिया में घुंघरू बाजे	,,	१५२
२०८ आज मैं राम के शरण पई	,,	१५६
२०९ जलत पतंग है जाए	प्रेम	५८
२१०. उरझ गई मैं	,,	५९
२११. सीस दिए सों प्रेम	,,	८२
२१२. अगन देत है	,,	१०२
२१३. दिन दिन प्रेम बढ़त	,,	११६
२१४. बिक गई मैं	,,	१३१
२१५ राम बिना नहीं जीवन	,,	१४२
२१६ धुन मधुर बजाई	,,	१५०
२१७ दोष मेरा ही है	विविध	३९
२१८ लिखने वाला कौन है तू	,,	४५
२१९ यह हाथी तो माटी का ही	,,	४६
२२० तू चला जग छोड़ने	,,	५५
२२१ हरि पद पाना	,,	७०
२२२ सुख हो संत जनों	,,	७२
२२३ राम तू ने कैसी ठिठौरी	लीला	७६
२२४ गा गा के थक गया हूं	विविध	८३
२२५ त्याग दे जग कामनाएं	गीता	८६
२२६ साच सम तप	विविध	८८
२२७ लाज न आवे	,,	९०
२२८ मनवा भ्रम को कैसे	,,	९०
२२९ जो दुख आया	,,	९१
२३० हे प्रभु! किरपा करो	कृपा	९२
२३१ तेरी किरपा वह हो	,,	९२

२३२ छोड़ दुनिया अब तो पीछा	विविध	९३
२३३ कहत तो मरना	"	९४
२३४ घर असंत आए	"	९५
२३५ लिख लिख के थक गया हूं	"	९६
२३६ लिखता रहूं,	"	९७
२३७ अक्षर जोड़े नाम कमाए	"	९७
२३८ जग का छांड विरक्त भया तू	"	९८
२३९ चालो रे भाई	"	९९
२४० लीला तुमरी समझ न आवे	लीला	१०७
२४१ लिख लिख भजन	विविध	११४
२४२ राम तेरा रखवाला	"	११०
२४३ जोगी जोग का पंथ	योग	११२
२४४ धन्यवाद है	संतोष	१२६
२४५ एक ही दीपक	अद्वैत	१४१
२४६ मैं तो आया था	तड़प	१४३
२४७ राम रमैया राम संग	अद्वैत	१४५
२४८ कहे देत हूं	उपालम्भ	१५९
२४९ हौं भटकत भटकत	विविध	१५८

राग जयजयवंती ताल धुमाली

गुरुदेव

गुरु चरन-रज नयनन अंजन, ज्योति-प्रेम जलाई
गुरु कृपा का तत्व अनूठा, अनहोनी हुई जाई
तम छूटा, उजियारा होया, पीव प्रकाशित होया
भ्रम नाशा, सगली निवृत्ति, दुविधा मन सों जाई
विष्णु तीर्थ प्रभु किरपा कीनी, रतन अमोलक पाया
संशय भ्रम टूटे मन माहीं, चंचलताई जाई
पीव बिना अब न कछु दीखत, पीव सदा ही संमुख
पिया मुझे, मैं पी को देखूं, परदादारी जाई
तीर्थ शिवोम् करी गुरु किरपा, मर कर कालहिं खाया
काहे का जग, कैसी माया, कल्पन सब ही जाई

राग रामकली ताल केहरवा

गुरुदेव

पूरा नूर, ज़हूर है पूरा, भरपूरा भरपूर
बरसे, बरसत ही वह जाये, हिरदय मोर हुआ भरपूर
अन्तर दृश्य अलौकिक दीखें, बाजत नाद सलोने
गगन हुआ गुंजार अनोखा, जाय बजत रहा भरपूर
आतम राम प्रकाशित अन्तर, चमकत वह चमकत ही जाय
अन्तर जोती जगमग जगमग, चमकत जात रही भरपूर
आतम जोती, अनंद मनोहर, न कोई कहे सुने न
अनुभव करे, सुखी मन होय, करत रहा अन्तर भरपूर
तीर्थ शिवोम् है सद्गुरुदेवा, किरपा का फल पाया
कहाँ आया, कहां पंहुचाया, अन्तर भरपूरा भरपूर

राग यमन ताल भजनी ठेका

गुरुदेव

गुरुदेव बलिहार

तन मन धन सब तो पर वारूं, घर वैभव परिवार

तू ने प्रीत जगाई अन्तर, विषयन मार भगाया

मनवा तो निर्मल कर दीना, तू मेरी सरकार

अब तो प्रेम ही प्रेम समाया, मन में बाहर जग में

प्रेम प्रदाता तू ही गुरुवर, ये मो पर उपकार

हौं तो अधम नीच अज्ञानी, खोटी मति है मोरी

पारस छूआ, स्वर्ण बनायो, कैसे तुम्हीं उदार

तीर्थ शिवोम् गुरु जी मोरे, हौं तो पतित कुकर्मी

लियो उबार जगत से मोहे, करुणा तोर अपार

राग नन्द ताल केहरवा

गुरुदेव

दीन दयाला मेरा गुरुजी

दीनन लियो उबार कूप से, भक्तन का रखवारा गुरुजी

युगों-युगों से बंधे जीव जो, ताही करत रह्या निस्तारा

बंधन काटे, मुक्त कराये, भव छुड़वाये पारा गुरु जी

जीव बने जो रंक समाना, ताही वैभव दियो अपारा

खोला द्वार ज्ञान-भक्ति का, आनंद अनत निआरा गुरुजी

तन मन वचन सकल सुखदाता, हिरदय माहीं प्रेम अपारा

तेय हरत दुख शरण पड़े के, जाऊं मैं बलिहारी गुरुजी

तीर्थ शिवोम् गुरु जी मोरे, विष्णु तीर्थ प्रभु नाम तिहारा

पाया नाम तथा ही गुण भी, मो सम नीच उधारा गुरुजी

राग श्याम कल्याण ताल भजनी ठेका

गुरुदेव

गुरु है नाहीं दूर

गुरु तो हरदम अन्तर में ही, अन्तर वह भरया भरपूर

जिन को नाहीं ज्ञान गुरु का, पड़े हुए भ्रम में भारी

समझें गुरु को दूर देश में, उन को ही दीखे गुरु दूर

गुरु समाया कण कण मांहीं, अन्दर भी, बाहर भी वह

पर वह दीखत भक्ति प्रेम से, नहीं तो रहत सदा ही दूर

योग से नाहीं, ज्ञान से नाहीं, नाहीं मिलत वह यज्ञ किए से

धन दौलत वैभव भी नाहीं, प्रेम से हैं वह नाहीं दूर

तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, पाऊं सदा दर्स अन्तर में

किरपा ही से होत है दर्शन, नहीं दूर वह सदा हज़ूर

विनय

राग अभोगी ताल झुमाली

तू मालिक तू साहिब मेरा

मैं मतिहीन, गुनाहों भरया, अदना बंदा तेरा

तू सर्वज्ञ विधाता सब का, करन-करावनहारा

मैं हूं पड़ा जगत के मांहीं, है मन गंदा मेरा

सिरजनहार जगत के स्वामी, कर्ता, भर्ता, हर्ता

मैं हूं याचक दर का तेरे, मांगत दर्शन तेरा

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, शरणीं आया द्वारे

अब की बेर कृपा मो कीजे, मैं सेवक हूं तेरा

प्यार का रूप धरे जग सारा, नफरत ही नफरत है फैली

स्वारथ ही छाया जग सारा, पर उदारता-रूप है फैली

राग देसी   ताल भजनी ठेका   भक्ति

जब हरि के, दर्शन पा जाय
जग सगला ही जाय भूला, मीत पराया मन तें जाय
हरि न दीखत पल भर को भी, विचलित मनवा होता जाय
मन तड़पे प्रभु लोचन ताईं, नयनन पानी भर-भर आय
हरि सलोना, मीठे दर्शन, मीठा ही ताका फल पाय
जग के दुख-सुख से छुटकारा, सेजे सुख आनन्द मनाय
तीर्थ शिवोम प्रभु अपहारी, दर्शन सों मनवा सुख पाय
दुविधा मन की दूर हटा कर, प्रीतम प्यारे मिलन कराय

राग धनाश्री   ताल भजनी ठेका

गुरुदेव

नमो नमो जय सद्गुरुदेवा
रूप आनन्द, सकल गुणधामा, मंगलकरण सदा गुरुदेवा
तुम निर्मल आगार दया के, कष्ट-हरण करते दीनन के
शरण पड़े की लाज बचाते, चरनन हीय सदा गुरुदेवा

हम दीनन बिछुड़े प्रीतम सों, भान्ति-भान्ति के कष्ट उठाते
राह न कोई दीखत हम को, रहते दुखी सदा गुरुदेवा
निर्मल नाम सुना जो तुमरा, तो मन में है आशा जागी
राह दिखाओ, कष्ट मिटाओ, शरण तिहार सदा गुरुदेवा
तीर्थ शिवोम प्रभु गुरु दाता, हम याचक हैं दर के तेरे
घर तेरे पर कमी न कोई, करत हो पार सदा गुरुदेवा

राग रामकली ताल केहरवा

गुरुदेव

गुरु चरनन पर मैं बलिहार
गुरु-चरन रज पावन निर्मल, करती कृपा अपार
या की शरण गहे जो मनवा, पावे मन की थिरता
होय सुखी या जीवन माहीं, करत अपुन उद्धार
इन चरनन का ध्यान धरे जो, मन निर्मलता पावे
प्रेमामृत अनुभव अन्तर में, मिटता तम अंध्यार
कृपा करो गुरुचरनन मो पर, शरण गहौं नित तोरी
हौं तो अधम नीच पाखण्डी, तुम हो तारनहार
तीर्थ शिवोम् गुरु-चरनन को, हिरदय धारे राखूं
रहूं समर्पित इन चरनन के, करूं अनन्त बिहार

राग श्री कल्याण ताल केहरवा

पश्चाताप

दोष मेरा ही है किरपाल
निसदिन रहत सुनत फटकारहिं, तो भी नाहीं होत मलाल
बिषयन धाऊं, भोगन भाएं, रहत रमत इन ही में
तो भी पेट भरत न मोरा, ये ही कितना बड़ा कमाल
सदा रहत मनवा ललचाया, चंचल बना सदा ही रहता
पल भर ठहरत एक जगह न, थिरता मन में करो बहाल
जो किरपा तुमरी हो मो पर, मिटे यह सकल बखेड़ा
माया सिमटे संमुख मोरे, मन में पाऊं रूप जलाल
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, हूं तो नीच कुकर्मी
किरपा होय कठिन कछु नाहीं, किरपा बिन है बहुत मुहाल

राग रागेश्री ताल केहरवा

गुरुदेव

गुरु ने जनम सफल कर दीना
दुख सगला ही भूल गया हूं, अन्तर सुख भर दीना
अंजन-ज्ञान दिया गुरु मोहे, अन्तर दृष्टि पाई
ज्ञान सभी परकाशित मोहे, भरम दूर करि दीना
राम नाम जो नाहीं मिलया, बिरथा जाय यह जीवन
गुरु-प्रभु ने वर्षा कीनी, राम-नाम भर दीना
सुमिरन का अनुभव हीं पाया, तो यह तथ्य पछाना
सीमा अहम सभी ही टूटे, माया तोड़ परमपद दीना
तीर्थ शिवोम् लियो गुरुदेवा, अपना रूप बनाय मोहे
कहां से लिया उठाय ऊपर, कहां मोर धर दीना

राग छायानट ताल धुमाली

नाम

हरि सुमिरन सगला भ्रम जाए
हरि सुमिरन तू कर ले मनवा, दुख कलेश सब ही मिट जाए
सुमिरन देत मिटाए सब ही, जाति, पाति, योनि, कुल, धर्म
अंधे को लाठी सम सुमिरन, राह चलाए, राह दिखाए
आन-जान का कष्ट मिटाए, प्रीतम हरि सों मेल कराए
सुमिरन रंग चढ़ा या ऊपर, जग में रहे, जगत अलगाए
गुरु महाराज जिसे मिल पाया, नाम का दान उसी ने पाया
नाम कमाई जो जन कीनी, भव के बंधन क्यों वह आए
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सुमिरन मीठा लागे मोहे
सुमिरन रत ही रहूं सदा ही, सुमिरन ही मनवा लग जाए

राग पट्दीप ताल भजनी ठेका

कीर्तन

नन्द-नन्दन गोवर्धन धारी
सुख का सागर करुणारूपा, आए हम हैं शरण तिहारी
मीरा, तुलसी, सहजो बाई, सूर, रहीम सभी तुम तारे
हौं पण चरणीं सीस नवावऊं, भक्तवत्सल श्री कृष्ण मुरारे
गोपिन संग तुम रास रचायो, सूखा साग विदुर घर खायो
सूर दास को पार करायो, सुध क्यों लेवत नहीं हमारी
मोरे पाप अनेकों ढेरों, अधम नहीं मुझ सा को दूजा
पर विश्वास दया तुमरी पर, शरणीं आया है अघहारी
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, हमरी आशा तुम्हीं मुरारी
जगत भयानक रूप धरो है, विनय विनय है कुंज-विहारी

राग मिश्र काफी ताल भजनी ठेका

गुरुदेव

सद्गुरुदेव ! शरण तेरी आया
जग से दुखिया हो कर आया, अकुलाया मैं आया
धन्य तिहारी कृपा अनूठी, धन्य हुआ मैं किरपा पाई
धन्य हुआ किरतारथ जीवन, चरन-कमल मन भाया
जो जन विमुख हरि चरनन सों, धृग जीवन वा जन का
विषयन मांहीं लगा रहत वो, श्री गुरु चरन न आया
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, धन्य हुआ अवतारा
तारण कारण दुखी जनन को, अनुपम रूप धराया

राग जोग कंस   ताल धुमाली

वैराग्य

जो भी गया जगत को त्यागे, लौट के फिर वापिस नहीं आया
कहां गया वह, कहां रहा वह, मुखड़ा फिर नाहीं दिखलाया
कैसी अजब पहेली है यह, जाए लौट के आ न पाए
सदा रहन भी जग में सोचे, कैसी अचरज बनी यह माया
हम देखत नित लोगन जाते, लौट के आता दिखा न कोई
गया गया सो गया हमेशा, कुछ भी संग नहीं ले पाया
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, कुछ तो मन में सोच समझ तू
जाना तोहे भी है इक दिन, बैठ यहां कोई न पाया

राग झिंझोटी   ताल कव्वाली ठेका

गुरुदेव

पहले तो मैं दुख ही पायो, अब तो मैं सुख ही सुख पायो
कौन भान्ति के फल मैं पाए, सुख-दुख दोनों स्वाद चखायो
रहा कुसंगत ही में उलझा, मन को चंचल ही कर पायो
अच्छा बुरा न चीन्हा कुछ भी, पाछे जगत रहा नित धायो
ता का फल भी भुगता मैं ने, उमड़-घुमड़ दुख बादर आयो
काम-क्रोध-भय-शोक ही डूबा, संकट नया नया नित आयो
पुण्य कौन सा उदय हुआ अब, जो गुरु चरनन मैं आ पायो
सुख-संतोष रहा हिय व्यापे, अनंद-अनंद मनवा गुण गायो
तीर्थ शिवोम् धन्य गुरुदेवा, अमृत-रस जीवन बरसायो
आधि-व्याधि संताप मिटा सब, पाया सब ही जो मन भायो

राग छायानट ताल त्रिताल

विनय

मन मतंग नहीं मानत मोरा
घूमत फिरे जगत उपवन में, लगा रहे वह मोरा तोरा
मन है लोभी जगत विषय का, काम क्रोध विषयन का भोगी
या में ही वह डोलत रहता, नाम न लेत कभी भी तोरा
समझाय समझाय हारा, पर मानत वह बात न मोरी
अपने मन की, स्वारथ की ही, करत वासना भर भर बोरा
कृपा बिना तेरी यह मनवा, वश मेरे में आवत नाहीं
तुम ही इसे संभालो प्रभु जी, मैं तो सेवक हूं बस तोरा
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मो पर किरपा तेरी होवे
दीन-हीन मन से दुखियारा, दर पर आन पड़ा मैं तोरा

राग आभोगी कान्हड़ा ताल धुमाली

विनय

मैं भटक भटक कर थाक्यो, पायो कबहूं न विश्राम
एक एक कर जनम अनेकों, पायो कबहूं न आराम
वही मोह आसक्ति मन में, वही काम सुत दारा
वही रागहि लिपटा मनवा, होया कबहूं उपराम
समझत सब हूं, जानत सब हूं, मन मानत नहीं मोरा
काय करूं, दुख है यह भारी, भजया कबहूं न श्रीराम
अब हूं शरण तिहारी आया, बांह पकड़ लो मोरी
शरण गहे की लाज बचाओ, सिमरन कबहूं न निज धाम
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, संकट हर लो मोरा
थाका हारा चरण पड़ा हूं, मिलया कबहूं न घनश्याम

राग विलासखानी ताल दीपचन्दी

विनय

निन्दा किसी की न करूं, निन्दा किसी की न सुनूं
वरदान दे मुझ को प्रभु, करने से सुनने से बचूं
निन्दा बढ़ावे अहम् को, मन को करे है मलिन वह
है दे कुबोध जन को वह, तेरे भजन ही मन धरूं
पर जो करे निन्दा मेरी, आभार उस का मान लूं
करता वह निर्मल मन मेरा, बातों को उस की मैं सुनूं
सुनना सुनाना पाप है, पर सहन करना साधना
निन्दा रहूं सहता सदा, मन में मैं निर्मलता भरूं
शिव ओम मन निर्मल पर ही, तुम रीझते तुम मानते
तुम को मना लूं हे प्रभु, नाहीं करूं, नाहीं सुनूं

राग धानी ताल भजनी ठेका

विनय

प्रभु मोरे ! लोभ से मोहे बचा ले
बांधे लोभ जगत के बंधन, लोभ से मोहे छुड़ा ले
लोभ प्रभु से दूर करत है, विषयन मन आसक्त करत है
लोभ ही मूल कुकर्मन का है, लोभ से मोहे हटा ले
जो मन पड़ा लोभ के मांहीं, भला बुरा कछु सोचत नाहीं
लोभ नचावत नर को भ्रान्ति, लोभ से मोहे जगा ले
धन विषयन भोगन का लोभी, ता का जीवन सूकर नाईं
पेट भरे और धाय विषयन, लोभ से मोहे थका ले
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, लोभ बड़ा ही अत्याचारी
बल विवेक बुद्धि हर लेवे, नेक ही कर्म करा ले

राग आभोगी कान्हड़ा . ताल धुमाली

विनय

रोक सकता, मोड़ सकता, नाहीं बच सकता हूं मैं
हो रहा जग में प्रवाहित, नाहीं बच सकता हूं मैं
जितना रोको, जितना मोड़ो, पर बचा न जाए है
वेग उलटे बहत जाए, नाहीं बच सकत हूं मैं
वीर, योधा, जग सुधारक, बच सका कोई नहीं
सब बहे जाते हैं इस में, नाहीं बच सकता हूं मैं
तू अगर किरपा करे तो, तब ही बच सकता कोई
जाए बहता सारा जग ही . नाहीं बच सकता हूं मैं
कर चुका जो था कि करना, अब न चारा है शिवोम्
आसरे तेरे ही बैठा, नाहीं बच सकता हूं मैं

राग अहीर भैरव ताल केहरवा

विविध

लिखने वाला कौन है तू, कहने वाला कौन है तू
यह सभी लीला प्रभु की, करने वाला कौन है तू
वह ही है लिखता लिखाता, वह ही है कहता कहाता
वह ही है सुनता सुनाता, सुनने वाला कौन है तू
वह ही है तुझ को चलाए, वह ही है तुझ को बिठाए
वह ही है तुझ को उठाए, चलने वाला कौन है तू
तू तो है अभिमान भरया, मन तेरा गन्दा ही गन्दा
इस लिए तू देखता न, तकने वाला कौन है तू
वह प्रभु कर्ता है भर्ता, देखता वह है शिवोम्
वह रहा दीनन को तारे, तरने वाला कौन है तू

राग बिहाग, ताल भजनी ठेका

विविध

यह हाथी तो माटी का ही, अकड़ असल से बढ़ कर है
लदा फूल से, खड़ा किनारे, ठसक असल से बढ़ कर है
भरा खड़ा अभिमान भाव से, देख रहे हैं लोग उसे
असल से अच्छी नकल सुशोभित, नकल असल से बढ़ कर है
पर माटी तो माटी ही है, हिले डुले न, उठ बैठे
खड़ा ठूठवत एक जगह पर, दिखत असल से बढ़ कर है
हम भी तेरी छाया प्रभु जी, पर अभिमान भरा पूरा
कुछ भी न, सब ही बन बैठे, अकल असल से बढ़ कर है
प्रभु मोर किरपा बिन तेरी, क्या हैं, पता नहीं शिव ओम्
अब लौं मन में ये ही भ्रम है, जीव असल से बढ़ कर है

राग जौनपुरी ताल केहरवा

विनय

गुरु जी! मैं नीचन का नीच
भोग-वासना डूब रहा हूं, पड़ा जगत के कीच
रंगा जगत रंग; रूप धरा जग, ध्यान प्रभु नहीं तोरा
क्योंकर हो निस्तार प्रभु जी, रमता विषयन बीच
क्या आशा ले आया जग में, कौन करम में लागा
भोग रहा है, खींचत मुझ को, कीच जगत के बीच
जब देखत हूं साधु-संत को, नहीं सुहावत मोहे
इधर उधर देखन लग जावत, लेत हूं अखियन मीच
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, कैसे पार पडूंगा
चहुं ओर अंधियारा दीखत, तम कीचड़, मन बीच

राग पटविहाग ताल केहरवा

विनय

तू समर्थ तू दाता मेरा, हे प्रभु दीनदयाला
मन न धरना भूलें मेरी, हे प्रभु कृष्ण गोपाला
ऐसी कृपा करो प्रभु मोरे, सदा सदा मन चरणीं
जाय जग न पल भर को भी, हे कान्हा नन्दलाला
सुख तो केवल तुमरी शरणीं, जग तो उथल-पुथल हीं
पाऊं सुख जो रहे सदा हीं, हे कृष्णा मतवाला
मैं हूं तेरा, तुम हो मेरे, नाता युगों युगों का
टूट न जाय कहीं पुराना, हे मेरे किरपाला
तीर्थ शिवोम् तुम्हारी चरणीं, रहे बंधा मन मेरा
तुम ध्याऊं, तुम को पाऊं, साधन प्रेम पयाला

राग यमन ताल केहरवा

विरह

राम गए नगरी भयी सूनी, चिड़ियां लिया समेट बसेरा
नर-नारी सब हो गए विह्वल, मन माहीं दुख अति घनेरा
आंगन सूने गलिया सूनी, सूने सब के हिरदय मन हैं
न सौंदर्य, न हलचल कोई, लिया उठाय मलीन डेरा
रात को नहीं दीवाली होती, कोई किसी से बात न करता
बुझे-बुझे से मन हैं सब के, रहत है छाया घोर अंधेरा
राज महल भी रहत हैं सूने, गौतम भी है काम न कोई
राजा प्रजा सभी मुरझाए, हाटन राखे बंद किबेरा
तीर्थ शिवोम् प्रभु रघुबीरा, विरह अगनी जात जलाय
मिलना कब हो, राम ही जाने, मनवा भाग बुरे ने घेरा

राग धनाश्री ताल रूपक

विनय

क्या करूं इस क्रोध का मैं, जो तपाए जात है
आ है जाता बिन बुलाए, जब हो इच्छा जात है
वश किया सारा जगत ही, हो युवा या वृद्ध हो
न बंधा सीमाओं में है, देश हर में जात है
जब करो रोकन इसे तो, और बढ़ता जात है
न रुके रोके किसी के, यह जलाय जात है
क्रोध ही झगड़े कराये, क्रोध ही मन फाड़ पाए
चाहे जिस को ही लड़ाए, सिर उठाए जात है
करत है शिव ओम विनय, क्रोध से बस एक ही
किरपा राखो, आओ नाहीं, अकेला नाहीं जात है

राग पूर्याधनाश्री ताल केहरवा

सावधान

काहे करत प्रमाद भजन में
भजन वही जो होय निरन्तर, बुद्धि मन के संशय हरन में
संत शास्त्र सब ही समझावें, करो साधना नित्य निरन्तर
यह प्रमाद ही है मानुष का, रहन न पाय नित्य करन में
साधन नहीं दिखावा कोई, साधन तो है अपने मन का
हो गम्भीर भजन के ताईं, मह है मन के माहीं जरन में
मन को मार, साधना कर तू, सोच कभी परमारथ का भी
जीवन तो जातत बीतत ही, लगा न रह तू पेट भरन में
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, जीवन का है नहीं भरोसा
निकल न जाय विरथा जग में, जीवन बीते हरि चरन में

राग सिंध भैरवी ताल भजनी ठेका

विनय

डूबत जात, लेय बचाय
और छोर कछु सूझत नाहीं, भव-जल रह्या अति गहराय ॥
काम- क्रोध की लहरें भारी, लोभ-मोह की पवन सामने ।
मन में तो इक डर बैठा है, नैया डूब कहीं न जाय ॥
घर-वैभव-धनहिं परिवारा, रह्या सतावत, मन भरमावत ।
मनवा मोर रह्या घबरावत, कैसे बचा हो समझ न आय ॥
लेओ जहाज, लंघाओ पारा, भव-जल बढ़त-बढ़त ही जाय ।
मच्छ-कच्छ की भरी वासना, नैया डूबत डूबत जाय ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, शरण तिहारी लेयो बचाय
जग तो नहीं बचावनहारा, एक तुम्हीं पर मनवा जाय

राग मारूबिहाग ताल दादरा

कीर्तन

नयनों के तारे आ जा, नन्द के दुलारे आ जा ।
मुरली बजा जा आ जा, हम को सुना जा, आ जा ॥
तुम को पुकारे राधा, तुम को पुकारें गोपिन ।
तुम को पुकारें ग्वाले, मुखड़ा दिखा जा, आ जा ॥
भक्तन पुकारें तोहे, रहते मनाए तोहे ।
अर्जी गुज़ारें तोहे, सागर लंघा जा, आ जा ॥
संकट पड़ा है भारी, जावत सताए भारी ।
माया समेटो आय, बंधन छुड़ा जा, आ जा ॥
तीरथ शिवोम् वारे, तन-मन तिहारे ऊपर ।
आओ अब आ भी जाओ, बीती बिसार, आ जा ॥

राग किरवानी ताल दादरा

विनय

प्रभु जी! कैसे पार मैं उतरूं
श्री चरनन से विमुख बना मैं, जगत में ही मन पसरूं
मन तो मेरा महामलिन है, चाहूं जग छुटकारा
एक साथ यह होय सकत न, जगत नहीं मन बिसरूं
भेद बुद्धि ही छाई अन्तर, उजबत हिरदय मोरा
आतम को तो भूले बैठा, अन्तर ही मन कसरूं
तीर्थ शिवोम प्रभु शरणाई, अधम उधारनहारे
अब तो आस एक ही तुम हो, चरन तिहर ही पकड़ूं

राग देवगिरी बलावल ताल झुमाली

बैराग्य

धन सों, नाम सों, क्या है लेनो
भक्तन का तो काम एक है, एक प्रभु का नाम ही लेनो
जो लागा धन यश के पाछे, हरि का नाम बिसरता जाय
या से बढ़ संताप न कोई, मन को चाहे, जग को देनो
जा का मुख न देखन चाहें, ता की करत गुलामी काहे
भक्त सदा हरि के रंग राता, हरि को देना, हरि से लेनो
तीर्थ शिवोम् यह झूठी माया, झूठ जगत का सब व्यौहार
भक्त भरोसा एक हरि का, जग से वा को न कछु लेनो

राग तिलंग ताल त्रिताल

विनय

राम करत हमरी रखवार
देख- रेख है करत सभी की, सुनत सभी की वही पुकार
दूजा जग में कोऊ नाहीं, राम समान जगत- हितकारी
हित साधे पर गर्व करे न, ऐसो है मेरो सरकार
तीन लोक ताही उपजाए. तीनों लोक अधीन उसी के
तीनों लोक समाएं उस में, जगत निआरा है करतार
पग पग चाले साथ रहे वह, अन्दर बाहर वह ही वह है
पल भर भी वह दूर होय न, वोही मित्र वही परिवार
तीर्थ शिवोम् राम जी मेरे, अनत कृपा तुम्हारी मो पर
मैं कृतघ्न पापी पाखण्डी, तो भी करत तुम्हीं रखवार

राग खमाज ताल केहरवा

मन

आप तो बिगड़ा सो तो बिगड़ा, काहे रह्या बिगारत मोहे
मोहे चंचल जगत करत है, चैन न लेवन देवत मोहे
रे मन! काहे करत रह्या तू, भला बुरा कुछ भी न सोचे
खींचत लेवत जग विषयन में, भोगन मांहीं लगावत मोहे
जग में रहत भटकता फिरता, मुझे भगवत साथ ही साथे
न विश्राम करत है आपुन, नाहीं बैठन देवत मोहे
बहुत हुआ यह उछलन कूदन, हरि भजन में अब तो लग जा
अन्तिम वेला जीवन आई, अब तो राम जपन दे मोहे
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, आप भी भोगे, औरन भी दुख
काहे भोगत, काहे देवत, परमारथ दे साधन मोहे

राग कौंसी कान्हड़ा ताल दादरा

सावधान

मेरा तेरा, तेरा मेरा, यही जगत का एक तमाशा
सब जग मेरे तेरे लागा, मन में नाहीं दूजी आशा
जो मेरा सो तेरा नाहीं, जो तेरा नहीं मेरा
खेत मेंड़ पर कृषक निहारे, दूजे करता रहत दुराशा
अपना बालक लागे मीठा, दूजे दूर भगावें
अपना यश, दूजे का अपयश, होवत यही तमाशा
तीर्थ शिवोम् यह मेरा तेरा, कैसे पाछे लागा
जितना दूर भगाओ, इस को, अधिक अधिक ही आशा

राग दरबारी कान्हड़ा ताल भजनी ठेका

विनय

मीरा जैसा मन कब होगा
तृष्णा माया कब जाएगी, चरणी कृष्ण प्रेम कब होगा
छटपट करता मनवा मोरा, जगत-विषय दिन रात डसें हैं
कब छुटकारा होगा इन से, कृष्ण मुरारी प्रीतम होगा
मनवा अब तो ऊब गयो है, मन भरमाते गोते खाते
कहीं किनारा दीखत नाहीं, कृष्ण पिआरा मन कब होगा
प्रेम की वर्षा बरसेगी कब, हिरदय प्रीत से भर जायेगा
नाच उठूंगी मीरा भान्ति, कृष्ण कन्हाई परगट होगा
तीर्थ शिवोम् मेरे मन आशा, मीरा रूप करूं मैं धारण
मन में, तन में, रोम रोम में, कृष्ण का अनुभव मो कब होगा

राग पीलू   ताल भजनी ठेका

माया

माया नटनी जग को नाच नचाय
सारा जगत रही भरमाय, होश नहीं आ पाय
नाच नाच जग थाका सारा, पर नाचन न छूटे
ठुमक-ठुमक और उछल-उछल कर, करतब अनेक दिखाय
आप भी नाचे, जग भी नाचे, नाचें देखनहारे
चन्द सूर तारागण नाचें, छोड़ नहीं को पाय
तीर्थ शिवोम है माया नटनी, अब तो नाचन त्यागो
कब लौं ऐसे रहो नाचती, थाके पावों जाए

राग वैरागी भैरव   ताल भजनी ठेका

विनय

कब होगा छुटकारा
दुनिया छोड़ रही न मोहे, दर पर करत पुकारा
दुनिया तो इक भूल-भुलैयां, मारग सूझत नाहीं
कहां से निकलूं, कैसे निकलूं, क्योंकर हो निस्तारा
मारग से मारग टकराये, जीव से जीव उलझता
आपाधापी अजब मची है, मनचली बना बजारा
तीर्थ शिवोम मेरे गुरुदेवा, राह दिखावनहारे
करो कृपा तो मारग सूझे, तब ही मिलत किनारा

राग वृन्दावनी सारंग ताल झुमाली

आनन्द

मुरली श्याम बजत ब्रज माही, शब्द अनाहद गूंज रह्यो है
मधुर रसीला नाद प्रकट हो, मनवा ताही जाई रह्यो है
धन्य नन्द, धन मात यशोदा, आनन्दित ब्रज गोपिन
सुन पाई जिन अन्तर मुरली, अंग-अंग मुस्काई रह्यो है
वृन्दावन वनखण्ड धन्य है, जहां बजावत मुरली श्यामा
जावत साधक वहीं वहीं लौं, जो जग न उलझाय रह्यो है
तीर्थ शिवोम धन्य धनश्यामा, धन्य तुम्हारे अधरन मुरली
धन्य हुए जिन धुनि सुनि पाई, अन्तर मल धुलि जाई रह्यो है

राग हमीर ताल अध्धा

विनय

महादेव शंकर त्रिपुरारी
उमा सहित कैलाश निवासा, करत अनुग्रह हे अघहारी
दया-सिंधु करुणाकर तुम हो, विपदा भक्तन देत मिटाय
करो कृपा हम दीन-हीन पर, घिरे विपत्ति में हम भारी
तुम सर्वज्ञ विधाता धाता, दयाशीलता तुमरी गाथा
विनय करत दरबार में तेरे, सुन लो, सुन लो, अर्ज़ हमारी
जगत सताए, जगत रुलाए, विपदा नितनित नई फसाए
माया तृष्णा रही नचाए, नैया बीच पड़ी मझधारी
तीर्थ शिवोम, हे शंकर शम्भु, आओ, आओ देर करो न
हम प्यासे दर्शन को तेरे, त्रिपुरारी बलकारी

राग देसी ताल केहरवा

विनय

प्रभु यह जगत हटत क्यों नाहीं
अन्दर बाहर जग ही दीखत, चरणों देत लगन क्यों नाहीं
असे हटावत, फिर आ जावत, नहीं बुलावत, पर वह आवत
दलदल अजब जगत यह दीखे, जावत निकलत या क्यों नाहीं
कहते जगत तो है ही नाहीं, पर मोहे यह सत्य भासता
करे प्रभावित मन को मोरे, मिथ्या दीखत मो क्यों नाहीं
कैसे हटे जगत जो संमुख, कैसा मनवा हो थिर मोरा
कैसे जग जंजाल यह छूटे, छूटत मो से जग क्यों नाहीं
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, यही विनय तव श्री चरणों है
मन सों मेरे जगत निबेरा, होत निबेरा जग क्यों नाहीं

राग मिश्रशिवरंजनी ताल धुमाली

विविध

तू चला जग छोड़ने था, पर उलझ जग क्यों गया
मन में तो वैराग तेरे, पर लुढ़क जग क्यों गया
क्या हुआ मन को यह तेरे, आ जगत फिर से गया
मुंह को मोड़ा और पलटा, तू पलट जग क्यों गया
मन ने यह धोका किया था, काबू इन्द्रिन न रही
कुछ घटा है संग तेरे, मन छलक जग क्यों गया
जगत न छोड़े किसी को, जाल में अपने फसा
न ही छोड़े जगत को तू, मन फिसल जग क्यों गया
छोड़ जग को राम भज ले, भजन में हित है शिवोम्
भजन ही सुख दे सके है, डर भजन से क्यों गया

राग मध्यमाद सारंग ताल त्रिताल

बिरहा

कबर आओगे घनश्याम
खड़ी घाट पर रही विचारत, भूल गए घनश्याम
हम तो पल-पल नाम रटत हैं, हो सुबह या शाम
काम करें तो ध्यान तुम्हारा, हिरदय तुम घनश्याम
रात को देखें जब चंदा को, याद है आवत रास रचाना
अब न रास, न बाजे मुरली, अकुलाएं घनश्याम
कैसे तुम्हें मनाएं कान्हा, कैसे तुम्हें बुलाएं
जा से मन की आशा हो पूरी, बतलाओ घनश्याम
तीर्थ शिवोम प्यारे कान्हा, सुन लो बिनय हमारी
देख देख पथराय नयना, न आए घनश्याम

राग बागेश्वरी ताल दीपचन्दी

बिरहा

सखी री, मन मोरा अकुलात
श्याम की याद न जावत मन सों, ता ही के पास ही धावत जात
सब जग दीखत श्याम न दीखत, तान न आवत कानन माहीं
कहां गयो है, किधर गयो है, बीती जाय रही बरसात
कहां गई सब रौनक ब्रज की, सूखे वन कानन झरने सब
ब्रज के प्राण गयो संग कान्हा, रहत अंधेरा समय प्रभात
सूझ पड़त न बेला की कुछ, मति गई है मारी सब की
सांझ दुपहरी जानत कुछ न, रात को दिन और दिन को रात
तीर्थ शिवोम श्याम जी कान्हा, बात करन भी मन न चाहे
खड़ी दुआरे, रही निहारत, बीतत जावत दिन और रात

राग विलास खानी तोड़ी ताल धुमाली

विरह

हिरदय अगन लगी विरह की, रही जलावत मोहे
तड़पत रहती. दर्द की मारी, रही रुलावत मोहे
न कोई मारग सूझत मोहे, न कोई वैद सयाना
सद्गुरु किरपा एक उपाय, पार करावत मोहे
जब तें बिलग भयी प्रीतम सों, मनवा चंचल मोरा
अब तो मन बिषयन से ऊबा, नाहीं थिरता मोहे
रही जलत मैं अन्दर अन्दर, दर्द भरा अन्तर्हि
कब सुख-भोग पिया मैं पाऊं, चैन न पल भर मोहे
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, मन में धीरज राखो
एक दिवस पी आए मिलसी, दर्शन मिलसी मोहे ·

राग गौरख कल्याण ताल दादरा

विरह

आओगे कब कन्हैया, मुखड़ा कदे दिखाओ
वन में पड़ी अकेली, न साथ छोड़ जाओ
मन याद करत रहता, तुम को रहे पुकारे
सुन लो विनय हमारी, तज रोश मान जाओ
यादों में तेरे खोई, जग का पता नहीं कुछ
बे-सुध पड़ी हूं रहती, भूलों को भूल जाओ
सखियां बनाएं बातें, मुंह को मेरे चिढ़ाएं
मन में तो तुम बसे हो, परवाह न कोई, आओ
शिव ओम् हूं दिवानी, तेरे मिलन की प्यासी
कुछ तो बताओ मोहे, कब आओ आओ आओ

राग गौरी ताल केहरवा

विरह

दुख जो होए विरह माहीं, सो नहीं होत मरण के माहीं
आए मरण निकल है जाय, रहे जलत ही विरह माहीं
विरह माहीं काल-चक्र भी, रुक सा जावत, थिर सा होवत
रहे धधकती ज्वाला अन्दर, अन्त कभी न विरह माहीं
विरह कैसा तत्त्व बना है, रहत जलाय, नहीं दिखाय
अन्दर अन्दर घुटत है विरही, आशा न छूटत विरह माहीं
तीर्थ शिवोम् राम के विरही, धन्य तुम्हारी विरह अगन है
जलत हृदय, मुंह पर न आवत, दुख भी सुख है विरह माहीं

राग कामोद ताल भजनी ठेका

प्रेम

जलत पतंग है जाए अगन में, प्रान की चिन्ता करत वो नाहीं
अगन का प्रेमी, अगन दीवाना, अगन बिना जानत वो नाहीं
प्रेमी राखत एक लक्ष को, देखत रहे सदा प्रीतम हि
जो पग जाए, प्रीतम को ही, प्रीतम बिन जावत वो नाहीं
जो चाहे प्रीतम को पाना, प्रान हथेली अपनी राखो
प्रान की चिन्ता, प्रेम नहीं फिर, चिन्ता कुछ भी करत वो नाहीं
तीर्थ शिवोम् पतंगा प्रेमी, रहो लगाए प्रान की बाजी
प्रान देय, कुछ पान को उद्यत, मोह कहीं भी करत वो नाहीं

राग मारूविहाग ताल भजनी ठेका

प्रेम

उरझ गई मैं पिय नैननहिं
उरझत उरझत उरझ गई मैं, देखत मैं पिय के नैननहिं
नैनन में क्या जादू भरया, पेखत ही हिरदय उरझायो
मनवा रहा न बस में मोरे, देखत जात रही नैननहिं
नैनन देखे मैं हर्षाई, नैनन लियो चुराय हिरदय
नैनन चुभे हृदय के माहीं, नैननहिं देखत नैननहिं
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, अब तो हिरदय मोर न लागे
काय करूं इन नैनन का मैं, उरझ गए जो संग नैननहिं

राम छायानट ताल धुमाली

विरह

राम गए तो गई नींद संग, नयनन लेत नहीं अब झपकी
राम वियोग भयो है देखत, अगन विरह की हिरदय भभकी
घर आंगन पनघट सब सूना, सूने सब ही हाट बाज़ारे
सूनी भयी अयोध्या सारी, श्वास सबन की कंठहिं अटकी
हैं मिलेंगे संग रघुबीरा, दया कृपा देखें रघुबर की
चरनन का आनन्द मिले नित, हृदय-भावना रही लटकती
चौदह वर्ष की लम्बी अवधी, कब बीतेगी, राम मिलेंगे
कौन जिएगा, कौन मरेगा, इन्हीं विचारन हूं मैं भटकी
तीर्थ शिवोम् प्रभु रघुबीरा, जाय रहे हो, नहीं भुलैहो
याद तुम्हारी रहे हृदयहिं, जान तिहारी यादहिं अटकी

राग वैरागी भैरव ताल भजनी ठेका

विरह

विरह रात कठिन अंध्यारी, पी बिन मोहे सहन न होवे
हिरदय भाव मिलन के तांईं, पी की सेज सुहानी सोहे
बिरह अगन जलावत हिरदय, दूजे आशा पिया मिलन की
अगन आशा का संगम हिरदय, कैसे मिलन पिया संग होवे
पी तो अगन जलाय गयो है, न चाहत वह इसे बुझाना
जलती रहूं अगन ही चाहत, बुझे अगन न शीतल होवे
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, सांप छछूंदर गति है मोरी
न छोड़े, न निगलत आवे, काय करूं? क्या मोरा होवे

राग अड़ाना ताल केहरवा

सावधान

तेरी अकल गई है मारी, करत क्यों हेरा-फेरी
दुख ही दुख तू भोगत या में, समझ न आवत तेरी
निन्दा चुगली में मन लावे, मस्तक अपना ऊंच उठावे
क्रोध लोभ मन लियो बिठाय, जाय है डूबत बेड़ी
यह जग तो है चार दिनन का, फिर तो फंदा यमदूतन का
काय करे अपने करमन का, समझ बात तू मेरी
बड़े बड़े योद्धा बलकारी, लाखों पण्डित औ फनकारी
गए जगत से हो लाचारी, करत है काहे देरी
तीर्थ शिवोम् समझ ले भाई, यह मेला पल भर ही का है
फिर तो ऊबड़ खाबड़ भारी, कर तू अपनी तैयारी

राग मियां मल्हार ताल धुमाली

विरह

हिरदय में तो अगन लगी है, नयनन बर्षा होय रही है
कैसा अजब नज़ारा है यह, बर्षा, अगन जगाए रही है
ज्यों ज्यों अगन बढ़त है जाए, बर्षा भी बढ़ती ही जाए
बढ़त हैं दोनों इक दूजे से, एकन दूज जगाए रही है
विरह ही अगनी भड़काए, बिरह ही बर्षा बरसाए
बिरह ही यह मेल कराए, बिरह खेल खिलाए रही है
मोरे प्रीतम कैसी लीला, कैसा रूप यह प्रेम तुम्हारा
एक ही घर में अगनी पानी, हिरदय नयन जलाए रही है
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, प्रेम तुम्हारा अजब अनूठा
प्रेम करत न रहत जगत का, मन में ये ही आय रही है

राग जग सम्मोहिनी ताल दीप चन्दी

भक्ति

श्यामा! दर्शन की नहीं चाह
तुम जो पास हो मेरे आए, टूटा याद-प्रवाह
याद में सुख है बड़ा अनूठा, हिरदय रहत तड़पता
मीठा मीठा दर्द है होता, नाहीं मुख से आह
जलत रहें हम, जलने दे तू, जलन यह जग से न्यारी
अधिक जलन, मन अधिक है शीतल, करो नहीं परवाह
तीर्थ शिवोम् सुनो घनश्यामा, रहो बजावत मुरली
हम को विरह अगन भली है, जग से बे-परवाह

राग नन्द केदार   ताल त्रिताल

सीख

साधो! समझ लेयो मन, यह संसार असार
देखन में तो लागे मीठा, या नाहीं कछु सार
सुखकर लागे, दुख भयानक, मन भरमावत तेरा
कुछ भी नाहीं, कुछ कुछ दीखत, ऐसा यह संसार
झूठे स्वारथ लागा सब को, कोऊ कोऊ का नाहीं
भगिनी, सुत, बंधु, परिवारा, चाहे घर की नार
रूप धरे इक, पलटे दूजा, नित्य बदलता रहता
थिर नाहीं यह, निमिष एक भी, करत नहीं विचार
तीर्थ शिवोम् प्रभु के साधो, यहाँ नहीं नित रहना
आवन जान लगा ही रहवे, मिथ्या सब व्यवहार

राग शिवरंजनी   ताल दीपचन्दी

विरह

घबरावत अकुलावत गोपिन, जमन किनारे, कानन वन में
तुम तो बैठ बजावत मुरली, याद किसी की नाहीं मन में
गोपिन मूर्त वैरागन, विरहय पीरा, अँखियन नीरा
नहीं बुझावत, न समझावत, रहे मस्त मुरली धुन में
कैसा कृष्ण कन्हैया है तू, कैसा तेरा प्रेम अनोखा
जलती हम वियोग में तेरे, आँख फेर ली तू इक छिन में
रही बुलावत तो को निसदिन, पर तू आवत तनिक भी नाहीं
कर किरपा हम दुखियारी हैं, मुख दिखला जो कोई दिन में
तीर्थ शिवोम् हे व्रज की नारी, प्रेम तेरे की हम हैं मारी
तू ही इक, जिस पर हम वारी, जलत विरह छीजत दिन दिन में

राग गौड़ सारंग ताल त्रिताल

आनन्द

गगने मण्डल पीव विराजे
झलक एक मैं पाई आजे, मन आनन्दित साजे
चंद्र सूर्य नयनन दोऊ, आदर जटा बिशाला
कर्ण आकाशे गूंजत नादा, रंगा-रंग बहु बाजे
वे निर्गुण बनया सोई सगुणा, आर-पार माया के
माया रूप धरे बहुतेरे, सब ही करत, रही बिन काजे
मन विकार न संचित भोगा, गर्व तनिक भी नाहीं
सब से रहे, सबन से न्यारा, क्रोध लोभ नहीं ताके
तीर्थ शिवोम सुशोभे पीया, मन के गहरे तल में
भक्तन रूप प्रकाशित करता, निर्बैरी निलाजे

राग भीम पलासी ताल भजनी ठेका

विरह

काय करूं मैं नयनन इन का, रहत पिया ही हरदम खोजत
चैन न पावत एक घड़ी भी, हरदम राखूं नयनां खोलत
ऐसा पीव छुपा ~~तम माहीं~~, सकल अंधेरा दीखत मोहे
कैसे टूटे तम जो गहरा, रही अंधेरे में ही डोलत
मन अंधारा, तन अंधारा, छाया सारे जग अंधारा
नहीं प्रकाश, न पी ही दीखत, सहत विरह, मुख सों नहीं बोलत
पिया मिले बिन मन न लागे, दर्द कलेजे उठत नित्य ही
पिया मिले तो ही दुख भागे, अब लौं दुख में ही मैं डोलत
तीर्थ शिवोम हे बांके सजना, दर्शन दीजो, फिर भी आओ
काहे रख्या छुपाय आपुन, काहे भेद न अपना खोलत

राग मधुकंस   ताल धुमाली

विरह

मन मेरे में पीर उठत है, लोगन रहे करत हैं हांसी
विरह अगन सतावे मोहे, पड़ी गले में मेरे फांसी
लोगन तो जानत यह नाहीं, क्या बीतत है मोर हृदय पर
वह अंजाने यह क्या जाने, खेल नहीं है कोई हांसी

यह तो विरही ही है जानत, जा के हृदय घाव पड़ा हो
जलत रहे हरदम अगनी मे, नहीं सुहावे बात की हांसी
सीमा पार हुई विरह की, धिक् धिक् करत कलेजा रहता
लड़ी लगी अंसुअन की नयनां, करत हो काहे मो पर हांसी

तीर्थ शिवोम प्रभु जी मोरे, तुम न मिलत, जगत छियावे
आनन्दित हो क्षीर के सागर, रहे करावत मोरी हांसी

राग बिहागड़ा   ताल भजनी ठेका

विरह

तुम ने कहा जगत को छोड़ो, मैं नें छोड़ दिया
अब क्यों मिलत नहीं आ मोहे, मुंह को मोड़ लिया
विरह अगन जलावे मोहे, तो संग जोड़ लिया
रो रो हाल-बेहाल हुई मैं, नयनन फोड़ लिया

नाहीं कर, झटका मो दीना, मन झकझोड़ दिया
पल में क्या से क्या है होया, मनवा तोड़ दिया
तीर्थ शिवोम प्रभु बनवारी, मनवा मोर सताया
अब आ जाओ, आन मिलो भी, सब कुछ छोड़ दिया

राग नट ताल त्रिताल

विरह

काय करूं घनश्याम
याद तिहारी हृदय जलावे, सूझत न कछु काम
रात गुजारूं गिन गिन तारे, करवट रहत बदलती
अंसुअन धारा बहत निरन्तर, मन तुमरो ही नाम
कौन समय जो दर्शन पाऊं, माथा चरणीं लाऊं
अंगवा पी के अंग लगाऊं, मन पाऊं विश्राम
तीर्थ शिवोम् विनय गुरुदेवा, आकुल व्याकुल मनवा
तुम ही राह दिखावन हारे, मैं क्या जानूं धाम

राग जोगिया ताल केहरवा

विरह

याद हटे न मन सों
प्रेम हृदय में गहरा बैठा, निकलत न हिरदय सों
तुम ही दीखत, तुम ही सूझत, तुम ही संग बसत हो
मनवा होत विलग न तो सों, रहत जुड़ा ही तो सों
रही घाट की, नाहीं घर की, तेरे ही मन लागा
लीन रहूं चरणों ही माहीं, रहूं आनन्दित तो सों
तीर्थ शिवोम् हे मोरे प्रियतम, दूर न करना मोहे
हिरदय सदा विराजे रहियो, यही विनय है तो सों

राग आभोगी ताल भजनी ठेका

विरहा

ब्रज को भूल गए क्यों श्याम
भूले गोपिन ग्वालिन सब ही, भूले नन्द यशोदा धाम
भली लगे अब मथुरा नगरी, भले वहां के नर और नारी
पर मैं श्याम सुन्दर न भूलूं, लेत रैन-दिन तुमरो नाम
गए श्याम, फिर आए नाहीं, नयनन सूजे रोवत रोवत
क्यों बिसराया हम लोगन को, रहे जपत थे कल तक नाम
अब कुछ भी मन को न भाए, जमन घाट हो सुन्दर कानन
जहां श्याम न मुरली बाजे, अच्छो लगे न कोई काम
तीर्थ शिवोम् श्याम हे कान्हा, जीवन में अब सार न कोई
तुमरे बिन लागे सब सूना, घर आंगन गैयां अरु धाम

राग यमनी बिलावल ताल भजनी ठेका
(देवगिरी)

विनय

राम नाम ही एक सहारा
यह जग भीषण दावानल है, या में दूजा कौन हमारा
कठिन बड़ा है भव का तरना, कठिन बड़ा माया निपटारा
राम कृपा कुछ न कठिनाई, किरपा से ही मिलत किनारा
चारों ओर गहन अंध्यारा, हाथ को हाथ भी सूझत नाहीं
बल-सामर्थ नहीं को सम्बल, किरपा बिन न होत उतारा
तीर्थ शिवोम् राम जी मोरे, राम सहारा, किरपा मो पर
तुमरा दर्शन, धाम तिहारा, किरपा से पाए निपटारा

राग देस   ताल भजनी ठेका

सीख

उजली चादर प्रभु ने दीनी, जीव ने मैली कीनी
दाग लगाए, मैल चढ़ाई, तार-तार कर दीनी
तुलसी, मीरा, सूर, कबीरा, चादर राखी उजली
जैसी ओढ़ी, तैसी राखी, ज्यों की त्यों धर दीनी
जीव फिरे ग़फलत का मारा, ध्यान न चादर देवे
फिरत है माया काया उलझा, जगत रंग रंग दीनी
तीर्थ शिवोम प्रभु भगवन्ता, लाज तुम्हारे हाथों
तुमरी कृपा तो संकट नाहीं, विपदा दूर करीनी

राग मध्यमाद सारंग   ताल भजनी ठेका

विरह

छोड़ के न जय्यो कान्हा, गोपिन ग्वालिन को
तोर बिना रहें कैसे, जावें कैसे कानन को
हम तो समझ रहीं थीं, जो कछु तू ही हमरा
छोड़े जाई रह्यो है, म्हारा उर आनन को
नेह तुम से जो कीना, यही भूल भारी भयी
जानत रहीं न हम थीं, तू है हमें छोड़न को
रोय रहे हमरे नयना, तड़पत होय रह्यो है
तरस न आवे तोहे, जानत हो किस कारन को
तीर्थ शिवोम हे कान्हा, जाओ नहीं, जाओ नाहीं
जाओ मान, जाओ मान, करो कृपा हम ग्वालिन को

राग तिलक कामोद ताल भजनी ठेका

विरह

जोगी मीत किसी का नाहीं, नेह लगाय मैं पछताई
प्रीत करी, प्रभु हाथ न आया, सुध बुध सब बिरथा बिसराई
ध्यान सदा ही अपने अन्दर, बाहर देखत कुछ भी नाहीं
किस पर कैसी बीत रही है, बात न कुछ भी मन में आई
जोगी होय, जोग कमाओ, अपने माहीं प्रीत जगाओ
तो ही जोगी रीझत अन्दर, अन्तर ही वह दिखे मिल जाई
अन्तर जोगी, अन्तर जोगन, अन्तर ही में मेल मिलत है
अन्तर प्रीत ही प्रीत है साची, साची साचे में मिल जाई
तीर्थ शिवोम् सुनो हे सजनी, काहे भटकत पाछे जोगी
जोगी तो अन्तर ही बैठा, अन्तर झांको दर्शन पाई

राग यमन कल्याण ताल केहरवा

विरह

हरि दीख्या सन्मुख म्हारे, मैं पहचान न पाई
करत इशारे, रहा बुलावत, पर मैं जान न पाई
म्हारे आगे पाछे हरदम, घूमत रहत हरि ही
पर मैं माया डूबी ऐसी, कबहूं मान न पाई
हरि बनावे, हरि बिगारे, सब जग खेल खेलावे
डाल-पात, कण-कण में रम्या, कर अनुमान न पाई
हरि ही दीखत, पर न दीखत, दीखत जगत पसारा
रहूं अलौकिक, फस गई लौकिक, कुछ भी भान न आई
तीर्थ शिवोम् बिहानी रैना, डूबत डूबत माया
फिर भी छोड़त नाहीं पीछा, माया जान न पाई

राग आनन्द भैरव ताल भजनी ठेका

विरह

भयी बावरी राम की, करत श्रृंगार रिझावन ताईं
पड़ी दुआरे राम के, बिगड़ी मोर बनावन ताईं
राम ही साजन, राम ही प्रीतम, राम ही सखा सहायक है
चरनन धारूं राम के, प्रीतम दर्शन पावन ताईं
मन के पाप ही रस्ता रोकत, मिलन देत न राम पिया से
सिमरन करती राम का, मन को शुद्ध करावन ताईं
ठौर ठौर हूं भटक चुकी मैं, राम मिलन को, राम दरस को
आई मन्दिर राम के, मन की लगी बुझावन ताईं
तीर्थ शिवोम् राम जी मोरे, जग में एक तुम्हीं हो मोरे
रही पुकारत राम को, कूकत रही, बुलावन ताईं

राग कलावती ताल केहरवा

पश्चाताप

पल-पल करते, छिन-छिन करते, गई उमरिया बीत सलोनी
माया ही में रहा उलझता, दीखन लागी अगली होनी
अब हूं रोवत पछतावत मैं, आदर न कीना जीवन का
अब तो जीवन निकल चुका है, अब है घटने को अनहोनी
रोते, मरते, कष्ट भोगते, जीवन मैं ने काट लिया है
आहें भरते, नीर बहाते, गई उमरिया, रही घिनौनी
तेरा एक सहारा प्रभु जी, तू ही तू, बस तू ही तू है
अब होगा, जैसा जो होगा, होनी होगी, वही जो होनी
तीर्थ शिवोम् प्रभु गिरधारी, उमर बिताई, आया द्वारे
आपुन अब अर्पण हैं तेरे, होनी करो, करो अनहोनी

राग भैरवी   ताल दादरा

सीख

मनवा छोड़ दे तू अभिमान
जीवन तेरा बीत चला है, पल भर का महमान
बड़े बड़े योद्धा-हंकारी, रण में धूम मचावें
रहा न कोई नाम भी लेवा, मिट गया नाम निशान
जग का वैभव, चंचल काया, नाम बड़ाई कुछ भी
जब चाले, सब तजे यहीं पर, अन्तिम घर शमशान
छोड़ राम धन, जग-धन धाय, रहे भ्रमित माया हि
नहीं सिमरन, न साधसंग ही, जा सों मुक्त जहान
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, मान ले बात यही जो
राम नाम ही पार कराय, नाम को ही धन मान

राग मारुविहाग   ताल केहरवा

विविध

हरि पद पाना सरल नहीं है
क्रोध काम को मार भगाना सरल नहीं है
बिना मौत के मृत हो जाना, मन से अपने अहम भगाना
काल चक्र को दूर हटाना, सरल नहीं है
नयन बिना कुछ भी दिख पाना, जो हो अलख उसे लख पाना
पानी बिन ही घट भर पाना, सरल नहीं है।
यह सब बड़ा कठिन है भाई, कोई विरला ही कर पावे
जो न मिले, उसे ही मिलना, सरल नहीं है।
तीर्थ शिवोम् हे सदगुरुदेवा, तू जो चाहे, वही करा दे
बिन तेरी किरपा कुछ पाना, सरल नहीं है।

राग पहाड़ी ताल दीपचंदी

विरह

सखी री, प्रीत न करियो का सों
प्रीत किए दुख ही दुख उपजे, नाहीं नयन मिलैयो को सों
प्रीतम बात करत प्रीतहिं की, लियो चुराय मनवा मोरा
सीधी बात करत न मो सों, न ही नयन मिलावत मो सों
हौं तो मनवा देय चुकी हूं, राखे चाहे बाहर फैंके
अब तो मनवा रहा न मोरा, बात करूं कुछ भी न को सों
तीर्थ शिवोम् हे प्रीतम प्रभु जी, अच्छा प्रेम निभायो मो सों
मैं तो रहत ही आहें भरती, दूर दूर ही रहत हो मो सों

राग मिश्र पहाड़ी ताल दादरा

विरह

मैं सुहागिन, विधवा जीवन
पिया ने त्यागा, या कि मैं ने, दुखी है मेरा जीवन
मैं ही उलझ गई हूं जग में, मैं ने ही मुह पिया से मोड़ा
मैं ही अब पछताय रही हूं, कैसा क्या है मेरा जीवन
अब तो रही तड़पती हर दम, याद पिया की करती हरदम
कौन समय पी आन मिले मो, सुखी तभी हो मेरा जीवन
आए मिलो पिआरे सजना, बिरहा अब तो सहा न जाय
भूल हुई पर हो करुणाकर, कृपा तुम्हारी मेरा जीवन
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, भूल हुई जो लागी जग में
तुम को त्यागा, दुखी हुई मैं, आन मिलो तो मेरा जीवन

ऊठत-बैठत प्रभु पुकारो, सुनत पुकार, वो रहत नहीं है
भक्त सहायक होन वह धावत, आन मिले, फिर जात नहीं है

राग भिन्न षडज ताल दादरा

बिरह

मन की कहीं न जाए का सों
जो मेरे हिरदय बीतत है, कहा बखानऊं का सों
दीखत नाहीं सुननेहारा, हित की बात बतावे
अपने स्वारथ सब ही लागे, बात करऊं मैं का सों
ऐसा कोई मिला न मोहे, मन की बात जो जाने
देय सुझाए मारग सूझो, आश करऊं मैं का सों
तीर्थ शिवोम् प्रभु रघुवीरा, तुम ही जानन हारे
तुम को छोड़ पुकारूं का सो, अर्ज़ गुज़ारूं का सो

राग मारुबिहाग ताल त्रिताल

विविध

सुख हो संत जना घर आए
धन वैभव पाए वह सुख न, मन अपार आनन्द मनाए
सो सुख नाहीं तीरथ न्हाए, कोटिन कोटिन यज्ञ कराये
बांझ जने जो सुन्दर बालक, तो भी वह सुख नाहीं पाए
संत जनों के दर्शन पाए, जो सुख होय, कह सकत न
भोगन माहीं सो सुख नाहीं, भान्ति भान्ति के भोग उड़ाए
संत अनुग्रह अनत अपारा, जो पाए सो ही है जानत
मिलत भाग्य से ही जन को है, प्रभु कृपा हो तो मिल पाए
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, संत पधारें घर में मोरे
चरण धूल माथे पर लाऊं, परमारथ मेरा सध जाए

राम नाम ही एक सहारा, जग तो सारा देख लिया
नहीं भरोसे काबिल कोई, एक एक कर देख लिया

राग मिश्र पीलू ताल भजनी ठेका

सीख

दिया बिता जीवन विषयन संग, ता विषयन दुख दीना मोहे
लोक-लाज सब दियो गवाए, छोड़ा कहीं का नाहीं मोहे
विषयन पर न राख भरोसा, यह ठगराज कुकर्मी भारी
सुख दिखाय, दुख ही मो दीना, कियो खवार बहुत ही मोहे
विषय सुहाने, मन ललचाए, देखत भागत जाए
भागत जाए, सुख न पाए, बार-बार लोटाया मोहे
यह मृगतृष्णा-वत् है छाया, दीखत जल पर होत नहीं कुछ
तैसे सुख नाहीं विषयन में, भरमाया ललचाया मोहे
तीर्थ शिवोम् त्याग विषयन को, हरि भजनहिं राखो मनवा
हरि भजन ही विषय छुड़ाए, हरि भजन सुख देत है तोहे

राग कौशिया ताल रूपक

सीख

फूल सब बगिया खिले हैं, मन तेरा खिलता न क्यों
फूल तो खुशबू बिखेरें, तू रहा बदबूएं क्यों
मुस्कराते फूल हैं जब, आए कोई पास में
तू रहा मुरझाए क्यों है, मुस्कराता तू न क्यों
फूल को जब कोई देखे, मन सुखी होता तभी
तुझ को जो देखे है कोई, खुश न होता वह है क्यों
फूल जिस पर भी चढ़े हैं, शोभा पा जाता है वो
तेरा मन जिस को छुए है, वह दुखी हो जात क्यों
फूल जैसा मन बना तू, फूल जैसा हो शिवोम्
दुख की दुनिया में सुखी रह, फूल बनता तू न क्यों

राग खमाज ताल धुमाली

सीख

अहंकार और जगत पिपासा, दोनों दुख का कारन हैं
रहत धुमावत माया माहीं, यह ही कारन जारन है ॥
त्यागत जीव जभी यह दोनों, सुख पाता वह मन में है
अनंद मनाए, चैन से सोए, न यह कारन मारन है।
काम, क्रोध, हंकार उपाय, जगत पिपासा आसक्ति
जब यह दोनों नाहीं मन में, वह मन कारण तारन है
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, गर्व छोड़ और तृष्णा को
जब मनवा ही निर्मल तेरा, तो मन बंधन काटन है

राग मिश्र पीलू ताल भजनी ठेका

सीख

जगत भोग में लाग रहा तू, संग्रह करत ही जात रहा
यह न सोचे भोगन मिथ्या, पर भागा ही जात रहा
धन जोड़न की इच्छा जागी, कैसे मिले कहीं कुछ भी
पर धन तो यह छाया जैसा, समझ नहीं तू पात रहा
मन को मोड़े जगत विषय से, तब अन्तर-सुख पाएगा
पर तू लागा बाहिर विषय में, अन्तर क्यों न जात रहा
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, भेद तू जाने क्यों नाही
भोगन विषयन बाधा भारी, ता ते सुख न पात रहा

राग देसी ताल केहरवा

साबधान

अब घर चालो मेरे भाई
बहुत हो गया रहन यहां पर, करो तैयारी अपनी भाई
यह जग तेरा था ही नाहीं, यह तो जैसी एक सराय
नाम न ले तू चलने का ही, पसरत काहे रह्या तू भाई
यहां तो रहना एक रात का, सुबह लपेटो अपना बिस्तर
तू तो जम के बैठ गया है, लोगन और रह्या है आई
जग तो मेला चार दिनन का, होथं इकट्ठे चलत बने हैं
यहां पड़ा न रहत कोई भी, आया सो इक दिन है जाई
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, बात समझता क्यों न मेरी
मौत बुलावा आएगा जब, तब ही छोड़ जगत तू जाई

राग भैरवी ताल दादरा

मन-बिकार

मेरे पीछे काहे लगे हो
छोड़ मन जाओ बिकारो, तंग करने काहे लगे हो
मन मेरा पहले ही दूषित, तुम हो आ डेरा जमाय
न करो तुम मन को चंचल, मन भगाने काहे लगे हो
है तुम्हारा काम ये ही, मन को थिर होवन न देना
इस की निन्दा, उस की चुगली, इन कुकर्मन काहे लगे हो
क्रोध आए, लोभ आए, मन तरंगित ही किए हो
हर समय बस काम ये ही, देन दुख काहे लगे हो
मन-बिकारों से दुखी ही, हो गया है अब शिवोम्
अब चले जाओ यहां से, मन में रहने क्यों लगे हो

राग मिश्र काफी ताल भजनी ठेका

आनन्द

खुशियां मनावो रे, माया रात गई अंध्यारी
रात यह माहीं बहु दुख भोगे, अन्तिम गई निशा तमकारी
आज है होली, आज दिवाली, ज्ञान का सूरज आज उगा है
जगमग-जगमग होत दिशाएं, सभी ओर छाई उजियारी
तीजा नेत्र खुला शिव शंकर, भस्मी भूत है तृष्णा माया
अब तो आनन्द आनन्द आनन्द, नहीं सतावत जगत दुखारी
तीर्थ शिवोम् है नाचो गाओ, अब न कोई दुखड़ा बाकी
टूटा भ्रम, आवरण हटा सब, खुल गई अन्तर ज्ञान किवारी

राग धनाश्री ताल केहरवा

लीला

राम तू ने कैसी ठिठौरी कीनी
परम पुरुष को नार बनाया, जग के रंग रंग दीनी
नार ही दीखे, पुरुष न दीखे, नार से ही सारा जग भरया
सभी नार मिल पुरुष खोजतीं, कैसी लीला तुमहिं कीनी
रंग बिरंगे कपड़े पहिरे, भान्ति भान्ति के रूप बनाय
घूमत नार, रही इठलावत, पुरुष है रूप छिपाए लीनी
नारी तो यह जान न पाती, नार नहीं वह पुरुष अकेला
कैसा भ्रम है जग में फैला, समाधान भ्रम न को कीनी
तीर्थ शिवोम् मेरे रघुवीरा, लीला कैसी अजब रचाई
नार ही नार बनाई जग में, पुरुष नहीं कोऊ को कीनी

राग सोहनी ताल भजनी ठेका

वैराग्य

किस की भयी है काया
फिर भी मनवा मोहित या पर, पुनि पुनि इसे सजाया
धनिक हो निर्धन, काला-धौला, पठित, निपट ही अनपढ़
कोई भी, कैसा हो, कितना, कोई नहीं रख पाया
फिर भी मनवा आशा यह राखे, साथ सदा ही काया
पर जग-त्यागन निश्चित इक दिन, जाय साथ न काया
माटी से उपजे यह काया, माटी में मिल जावे
आतम है माटी से न्यारा, माटी क्यों मन भाया
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, जग आ, काया पाए
जब चाले, तब रहे जगत में, तू मन क्यों भरमाया

राग शुद्ध कल्याण ताल धुमाली

सावधान

विषयन भोगन उमर बिहाई
रैन दिवस चंचल ही मनवा, राम रसियो बिसराई
माया के संग ऐसो रमया, होश न तन की, मन की
कभी सुखी हो, कभी दुखी तू, दुर्मति कैसी पाई
पापन संचित पर्वत कीना, उस पर चढ़ इठलावे
कैसे गिरे न इक दिन या से, माया कूपहिं जाई
जगहिं लटका-भटका कीना, लोभ मोह मन भाया
अन्त बेर जग संग न चाले, जान लेय मेरे भाई
तीर्थ शिवोम् दूर है जाना, कठिन बड़ा ही मारग
जो न चेता अब तू मनवा, पंहुच ही कैसे पाई

राग नट-बिलावल ताल भजनी ठेका

सावधान

रे मन! राम रटत तू रहियो
विषयन माहीं नहीं उलझ तू, मन आनन्द मनैयो
अन्तर पापन संचय कीने, जग आसक्त भया तू
अब तो जाग जाग तू मनवा, गोविन्द गोविन्द कहियो
पांच रिपुन हैं तुझे सतावें, तुझे भगाएं जग में
इन सों अपना आप बचैयो, शरण राम की गहियो
घोर अंधेरा कलियुग छाया, भौगन जग उलझाया
संभल संभल करि जग में चालो, राम-भजन मन लैयो
तीर्थ शिवोम् है नहीं भरोसा, कब पुनि मानुष जनमा
इब की बेर रिझाय राम ले, अपनो राम मनैयो

राग पट-विहाग ताल दादरा

विनय

मान गयो मैं मान गयो, मैं हार गयो मैं हार गयो
निज पुरुषारथ संबल लीनो, पर मैं नाहीं पार पयो
जब देखा जग रूप भयानक, तो डर मोहे लागा
क्योंकर हो निस्तारा या तें, सूझ न कछु पयो
बल, बुद्धि सब साधन कीने, माया हटी न मन सों
थक हारा तो सरन तिहारी, आए चरण पयो
तीर्थ शिवोम् कान मैं पकड़े, खमा करो प्रभु मोरे
अब तो केवल एक भरोसा, ताही सरन पयो

राग श्रीरंजनी ताल त्रिताल

मन

मनवा ! तू क्यों सोय रह्या
विमुख बना तू आतम सुख सों, बेसुध होय रह्या
या जग देखन में ही सुंदर, पर रस कछु भी नाहीं
क्यों भरमाया या के पाछे, समझ तू नाहीं रह्या
यह जग तो कागद के फुलवा, जा में वास न कोई
वास बसे तेरे अन्तर में, देख तू नाहीं रह्या
तू देखे साचा कर माने, या में ही सुख जाने
या सुख केवल एक छलावा, मन ललचाय रह्या
तीर्थ शिवोम् हरि-यश भूला, माया माहीं सोया
काहे भ्रमित हुआ तू भटके, शरण न जाय रह्या

राग कलावती ताल धुमाली

सावधान

मनवा रे, तू क्यों फिरत गवारो
बार-बार समझाय थका मैं, सुनत नहीं इक बारो
यह जग चार दिनन का मेला, रहत बदलता छिन छिन
या में से कछु हाथ न आए, जतन करत तू हारो
दुखी होत, जग में ही भागत, चैन तनिक भी नाहीं
परमारथ को ध्यान नहीं कुछ, बिरथा जनम बिगारो
तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, राम शरण कल्याना
राम शरन ही सुख घनेरा, भव जल पार उतारो

राग सिंध भैरवी ताल- केहरवा

सावधान

पोथी पढ़ पढ़ जीवन बीता, ज्ञान हुआ पर कुछ न
केवल शब्द ज्ञान ही पाया, अनुभव पाया कुछ न
माला रहा घुमावत ही मैं, हाथ मेरे भी थाके
कर में माला रही घूमती, मन की माला कुछ न

तीरथ सेवे, दर दर भटका, बना घुमक्कड़ फिरता
मन भी साथे चंचल बनया, प्रभु दर्श पर कुछ न
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, लीला तेरी न्यारी
क्यों भटकाओ, क्यों भरमाओ, हाथ में आया कुछ न

राग मिश्र शिवरंजनी ताल भजनी ठेका

सावधान

दर्शन हेतु तीरथ जाए, राम बसे मन माहीं
फिर क्यों भटके, माथा पटके, दर्शन अन्तर माहीं
अन्तर नयना खोल तू मूरख, अन्तर ही कर वासा
अन्तर में ही राम विराजे, धावत क्यों जग माहीं

बाहर चंचल छाया माया, पल-पल रंग बदलती
बाहर को बाहर दे रहने, अन्तर अन्तर माहीं
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, जग में रहा भटकता
पाया राम कहीं भी मैं न, मिला तो अन्तर माहीं

राग रागेश्री ताल केहरवा

सीख

मनवा तो भरमाए रख्या है, कैसे लागे हरि चरन में
प्रभु भजन की सोचत नाहीं, वह तो लागा पेट भरन में
घर-परिवार जगत की सोचत, सोचत अपने यश-अपयश की
पर न सोचत राम-भजन की, कैसे लागे प्रभु शरन में
जग पर ही विश्वास करे वह, जग व्यौहार ही नित्य करे वह
परमारथ की बात करत न, न विश्वासा जगत तरन में
भोग विषय ही रुचिकर उस को, जग में ही आनन्द वह माने
फिर परमारथ में जाय कैसे, रुचि न कोई भजन करन में
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मनवा बहुत सताय मोहे
समझाए समझाए थाका, वह मानत सुख जगत रमन में

राग अड़ाना ताल केहरवा

आनन्द

प्रेम प्रभु में खोयी ऐसी, भूल गई कि खोय गई हूं
इक दिन मैं जग सोय गई थी, भूल गई कि सोय गई हूं
करी कृपा मेरे गुरुदेवा, प्रेम की दीप जलाया अन्तर
फिर तो रंग चढ़ा कुछ ऐसा, भूल गई रंगोय गई हूं
अब तो मनवा हर दम लागा, प्रेम प्रभु में, प्रभु रूप में
तन मन की कुछ होश न मो को, प्रेम स्वरूपी होय गई हूं
काहे का जग, चिन्ता कैसी, न लेना कुछ, देना मोहे
मनवा तो अब होया निर्मल, पाप पुण्य सब धोय गई हूं
तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, प्रेम का रंग चढ़ाया कैसा
कृपा तेरी, अन्तर-गुरु धारण, रूप तेरा ही होय गई हूं

राग शुद्ध सारंग ताल केहरवा

प्रेम

सीस दिए सों प्रेम मिलत है, राखा सीस प्रेम भी नाहीं
सीस प्रेम का मेल मिलत न, जहां सीस तहां प्रेम है नाहीं
तन मन धन सगला ही अर्पण, भोग विषय मन नहीं सुहाए
गर्व तजे, राखे चरणों में, प्रेम नगर में बैठे माहीं
अगंद प्रेम का समझे कोई, जा मन बनया ऐसो होए
गूंगा गुड़ को स्वाद लेत है, कहते नहीं, पर ले मन माहीं
ऐसा प्रेमी रूप अनोखा, नाच नचाय बिन पैरन के
बिना ताल के ताल बजाए, घना आनन्दित मन के माहीं
तीर्थ शिवोम् गुरुवर पूरे, ऐसा प्रेम प्रभु मो दीजो
तन मन रहे सदा चरणों में, ध्यान सदा ही पल-पल माहीं

राग कोमल रिषभ आसावरी ताल भजनी ठेका

सीख

मन की अपने मैं ही जानूं, किस के आगे कहिए जी
जग तो भूला भगत वासना, जानन हार को कहिए जी
नाम जपे जो प्रभु-प्रेम में, वा को डर काहे का है
राम भरोसा, राम सहारा, शरणां ता के रहिए जी
सर्व-स्नेही, सर्व-विआपक, अपरम्पार है राम मेरा
ता के आगे ही दुख खोलो, जो कहना सो कहिए जी
सब की सुनता, कष्ट हरत वह, राखनहारा जग का है
उस को छोड़ कहां हो भटकत, शरण रामहिं गहिए जी
हूं शिव ओम रह्या समझाए, छोड़ सहारा जग का रे
वही बनाए, वही सवारे, ता की मरजी कहिए जी

राग भीम पलासी ताल कव्वाली ठेका

विविध

गा गा के थक गया हूं, कब तक रहूं मैं गाता
जैसे कोई घुमाता, रहता हूं बस घुमाता
दुनिया तो इक है नाटक, आए चला वह जाए
न जाने कौन है वह, जग को है जो नचाता
आए जहां में बन्दा, फिर फिर वह आए जाए
रहता वह घूमता ही, थक वह कभी न पाता
रौशन-दिमाग जो हैं, समझें यह खेल सारा
पर बिन रज़ा प्रभु के, कोई भी बच न पाता
शिव ओम मांगता है, रहमत मेरे ऐ मालिक
तू न सम्भाले जब तक, कोई सम्भल न पाता

राग जौनपुरी ताल केहरवा

सीख

अन्दर शत्रु, बाहर शत्रु, मन में, तन में, सब ही शत्रु
जीव बेचारा बना है बेबस, जाता जिधर वहीं पर शत्रु
रूप धरे मद क्रोध लोभ का, करें उपद्रव हिरदय माहीं
जतन इन्हें जितना मारन का, जात बढ़त हीं, उतने शत्रु
कभी रूप दुख का धर आवें, कभी दुखी कर, देत ही पीड़ा
क्या क्या स्वांग बनाएं दिन भर, दीखत हैं पर नाहीं शत्रु
राम छुड़ाए, राम बचाए, राम ही शत्रु मार भगाए
स्जीव सकत न ठहर सामने, राम समेटत है यह शत्रु
तीर्थ शिवोम प्रभु रघुवीरा, सभी दिशाओं घिरा हुआ हूं
शरण तिहारी आन पड़ा हूं, देत न भागत, मोहे शत्रु

राग कालिंगड़ा ताल खुमालौं

सीख

दुख का कारण, चाह ही संसार में
चाह बांधे जीव को इस, मोह में, संसार में
जब तलक है चाह मन में, भागता दुनिया में जीव
चैन न इक पल-घड़ी भी, भ्रमित ही संसार में
चाह जब सिमटे है मन में, न कोई परवाह फिर
न कोई चिन्ता भटकना, शोक न संसार में
चाहिए न कुछ भी जिस को, वह 'शहनशाह है
चाहिए जिन को तनिक भी, मांगता संसार में
शिव ओम् गुरुवर दूर कर, इस चाह को, इस मोह को
चाह केवल एक तेरी, चाह न संसार में

राग जैत कल्याण ताल भजनी ठेका

सीख

निन्दक को क्यों दूर भगाओ
निन्दक राखो घर ही माहीं, निन्दक आदर प्रेम दिखाओ
निन्दक नहीं तुम्हारा शत्रु, उपकारक वह परम-स्नेही
आपुन से ता दूर न कीजे, आसन नेरे ताही लगाओ
निर्मल करता मन को हरदम, देख-भाल नित तुमरी करता
मांगत नाहीं कुछ भी तुम से, कितना चाहे उसे भगाओ
निन्दक पूजा जोग तुम्हारा, निन्दक को आखों सिर ध
निन्दक की है महिमा न्यारी, मन से नाहीं दूर कराओ
तीर्थ शिवोम् न होय निन्दक, तो जन का कल्याण हो कैसे
करत है निन्दक चौकीदारी, चौकीदार न दूर हटाओ

राग मिश्र काफी   ताल केहरवा

सीख

कठिन है राम का पाना बड़ा
राम कृपा जो मिले जीव को, सरल है पाना बड़ा
रहे राम का, होए जो जन, राम ही रख्या करता
राम ही मारग देत दिखाए, रहत है रामा खड़ा
भौतिक दैहिक मानस तापा, रहत जलाए जन को
सहन करे, मुंह खोले नाहीं, जग में नाहीं अड़ा
गुरु कृपा ही मारग सीधा, राम मिलन को जाए
गुरु समर्पण करत जो नाहीं, रहत है बीच खड़ा
तीर्थ शिवोम् प्रभु रघुवीरा, किरपा एक सहारा
किरपा बिन यह जीव बेचारा, रहत है नरक सड़ा

राग मिश्र पीलू   ताल केहरवा

आनन्द

चाली, चाली, चाली मैं तो, संग पिया के चाली
छोड़ के देश पराया झूठा, संग पिया घर चाली
अब तक थी भरमायी उलझी, राह पिया अब पायी
अब है रोकनहार न कोई, अन्तर्मुख हो चाली
जग मग करत रह्या जग सारा, पर मोहे न भावे
अब तो नेह भया संग पीया, छोड़ जगत को चाली
आओ तुम भी आओ पाछे, पी सुख जो मन चाहे
एक पिया सुख देवनहारा, सुख पावन मैं चाली
तीर्थ शिवोम् है साचे प्रियतम, अब लौं रही भटकती
मिलन दिवस अब आय गयो है, छोड़-छाड़ सब चाली

राग मिश्र काफी ताल केहरवा

सीख

सेवा थोथी, दिल परचाया, मन का चैन गवाया सब ही
अन्तर गर्व समाए बैठा, रहा बिगारत जीवन सब ही
लोग कहें, बहु सेवा कीनी, पर मैं जानूं, क्या मैं बनया
रहा प्रदर्शित करता सेवा, लाभ गया चुक मेरा सब ही
सेवा करना कठिन बड़ा है, मन हंकार छोड़ कर पूरा
अपना कुछ न, सेव्य सभी कुछ, सेवा-फल जन पावत तब ही
कर न पाया, सह न पाया, मुझ से कुछ भी हो न पाया
कैसी सेवा, कैसा साधन, वृथा गया अपना तो सब ही
तीर्थ शिवोम् करो न बातां, बातों में रखा ही क्या है
निरहंकारी भक्त प्रभु का, सेवा से ही पावे सब ही

राग केदार ताल रूपक

गीता ५५।२

त्याग दे जन कामनाएं, मन में जो उन को सभी
न कोई इच्छा हो बाकी, शुद्ध मन होता तभी
आतमा से आतमा में, जो सदा संतुष्ट है
कोई सुख-दुख न उसे हो, हो अनन्यित जन तभी
न हो डांवाडोल बुद्धि, थिर कहाती वह ही है
होता जब मन ऐसा अन्तर, थित हो प्रज्ञा जन तभी
जब रहे वह चित्त अस्थिर, तब ही मन चंचल बना
हो प्रवाहित जल की भान्ति, थिर न होता जन कभी
तीर्थ है शिव ओम् मन से, जो पृथक हो जात है
करता मन आदर है बुद्धि, भोगता सुख जन तभी

राग भैरवी ताल भजनी ठेका

सीख

बिन विराग भगती न होई
जब लौं मनवा अन्तर नाहीं, साधन हरि का कैसे होई
मनवा जब लौं बना है चंचल, जग में रहत भटकता होवे
माला फेरे, मनवा नाचे, ऐसे भगती कैसे होई
जब लौं विषय बने हैं अभिमुख, मन न पावे हरि पद थिरता
मन को मोड़ो अन्तर माहीं, तो ही जन से भगती होई
भगती का आधार विरागा, मारग भगती यही विरागा
जो विराग न, भगती भी न, जग छूटे तब भगती होई
तीर्थ शिवोम् प्रभु ही एको, जा की कृपा सभी कुछ साधे
भगती, ज्ञान, विरागा सब ही, तो ही मारग सरला होई

राग मिश्र षड्ज ताल धुमाली

सीख

दिन आवे और दिन ढल जावे, कोई भी जग ठहर न पाया
मानुष जनमे और मरि जावे, कोई भी जग ठहर न पाया
चलो चली इस जग में चाली, कोई आगे, कोई पाछे
आगे पाछे चलते-चलते, कोई भी जग ठहर न पाया
मैं भी आया यहां ठहरने, पर देखा जग एक सराय
ठौर ठिकाना एक रात बस, कोई भी जग ठहर न पाया
तू क्यों यहां रहन की सोचे, यहां न रह पाए कोई भी
सो सोचे जो मन भरमाया, कोई भी जग ठहर न पाया
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, जग की रीत यही है भाई
पीर, पैगम्बर, धर्मी, अवगुणी, कोई भी जग ठहर न पाया

राग तिलंग ताल केहरवा

सीख

चाहे जो तू राम को पाना
तृष्णा लोभ तजे सब मन सों, हो तेरा तब राम के जाना
जब लौं मनहिं आपा राखे, तब लौं तृष्णा लोभ न जाय
आपा ही मन मैला होय, आप खोय, निर्मलता पाना
जैसे पाथर मारग माहीं, तज आपा, जन ठोकर खाय
जीवित रहते, मृतक की भान्ति, तो जानो भगवान को पाना
जीव भाव है मन का आपा, सब दुखों का कारन आपा
राम से दूर कराये आपा, आपा तजे, राम को पाना
तीर्थ शिवोम् यह आपा धापी, सारे जग में व्याप रही है
आप जाय तो आपाधापी, आपा कठिन राम को पाना

राग मिश्र काफी ताल धुमाली

विविध

साच सम तप कोऊ न जग में
साच ही साचा पीव मिलावे, साच ही तारत जग में
साच स्वरूपा साहिब मेरा, साचा नाम है वा का
साचा होय, करे सच साधन, साचा पावत जग में
झूठ समान है पाप न कोई, झूठ से झूठ मिले है
साच झूठ का मेल न कोई, झूठा झूठ ही जग में
जा के हिरदय साच बिआपे, ता के हिरदय प्रभु विराजे
जोत में जोत समाती जाय, जाए छूट जगत से जग में
तीर्थ शिवोम् धिआओ साचा, साचे से ही प्रीत तुम्हारी
साचे कर्म, साची सच बाणी, दुखी होत न वह जन जग में

राग गारा ताल धुमाली

सीख

जो जन तोहे दुख देवत है
जा का भी मंगल चाहे तू, कर्म तेरा वह हर लेवत है
मानुष केवल एक खिलौना, हाथ प्रभु के जो है खेलत
जैसा उसे नचाय प्रभु जी, नाचन वैसा कर देवत है
जैसे कर्म किए एकत्रित, औरन से व्यवहार कराये
सुख कोई, कोई दुख देवत, कर्म का फल ही जन लेवत है
सुख दुख जो तू सहन करेगा, कर्म तिहारे कट जाएंगे
मनवा होगा तेरा निर्मल, मारग मुक्ति तू लेवत है
तीर्थ शिवोम् सुनो हे भगतो, आदर प्रेम सभी से राखो
अपना मन भी निर्मल रखे, सुख औरन को भी देवत है

राग खमाज ताल केहरवा

सीख

दुर्बल को छेड़त हो काहे
दुर्बल बहुत दुखी या जग में, पीड़ा देवत मन को काहे
ता की हाए बहुत बुरी है, बुरा ही ता का फल भी होवे
क्यों लेवत हो हाए वा की, चाहत अपना बुरा हो काहे
ज्यों धौंकन में प्राण न कोई, नाहीं जीवन लक्षण कोई
पण वह सांस लेत जब लम्बी, लोहा भस्म नहीं हो काहे
मन उदार राखो कर अपना, दीन-दुखी को बनो सहायक
प्रभु कृपा, उपकार तुम्हारा, लेत असीष नहीं हो काहे
तीर्थ शिवोम् तुम्हें समझाऊं, दीन-दुखी की हाए बुरी है
जो आवे लपेट में इस के, भस्मीभूत नहीं हो काहे

राग गौड़ मल्हार ताल भजनी ठेका

विविध

लाज न आवे भगत कहावत
वेश बनाया भक्त-जनन का, अन्तर्मन विषयन भरमावत ॥
करे कीरतन नाच-कूद कर, आंख मूंद कर करे दिखावा
मन तो तेरे जगत बसा है, ब्रह्म-ज्ञान की बात बनावत ॥
लियो बनाए मन्दिर तू ने, ध्यान तेरा माया में अटका
लूटे लोगन नाम प्रभु पर, मंत्र-तंत्र सब खेल करावत ॥
अब तो सोच-समझ कुछ मन में, लियो बिगाड़े जीवन अपना
माया पाछे क्या सुख पाया, जीवन भर रोवत कुरलावत ॥
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, छोड़ भगत का वेश दिखावा
मन ही साचा प्रेम उजागर, तो ही आय प्रभु मिल पावत ॥

राग देसकार ताल भजनी ठेका

विविध

मनवा भ्रम को कैसे छोड़ें
मन में भ्रम बैठा है गहरा, किए जतन, पर वह नहीं छोड़े ॥
देखत-सुनत-विचारत सब ही, सतसंगत भी करत न थाका
योग-ज्ञान-भक्ति अपनायो, निज स्वभाव पर वह नहीं छोड़े ॥
देखत भोगन-विषयन को जब, लपक पड़त है उन के ताईं
जग को ही साचा कर माने, जग-मिथ्या पर वह नहीं छोड़े ॥
कृपा बिना भ्रम दूर न होय, कृपा बिना मनवा न निर्मल
कृपा अचूक है औषध भ्रम की, भ्रम उपजे, पर वह नहीं छोड़े ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु किरपालु, किरपा तेरी एक उपाय
किरपा मुक्त करे बंधन सों, जग बांधे, पर वह नहीं छोड़े ॥

राग भूप ताल पंजाबी ठेका

विविध

जो दुख आया तो आई याद भी तुझ को प्रभु की
चलो कैसे भी आई तो, है तुझ को याद प्रभु की
भले मानस यदि तू याद करता जब सुखी था
तो दुख आता तुझे नाहीं, यही किरपा प्रभु की
मगर फिर भी है अच्छा दुख, कराता याद है जो वह
दिखाए राह भटकों को, लगाता याद प्रभु की
तुझे है नमन प्यारे दुख, करते हो काम संतों का
लगा कर चरण में सब को, कराते याद प्रभु की
करा मेरे प्रभु शिव ओम् को, अपना ही सिमरन तू
न सूझे कुछ भी दुनिया में, सिवाए याद प्रभु की

राग केदार ताल रूपक

विनय

सहन शक्ति दे मुझे, मेरे प्रभु गुरुदेव जी
सहता रहूं, सहता रहूं, सहता रहूं गुरुदेव जी
सहन मैं इतना करूं, अभिमान चकनाचूर हो
न रहे मुझ में तनिक भी, कर कृपा गुरुदेव जी
सहन मैं इतना करूं, उद्विग्न न हो मन मेरा
कामना मंगल सभी की, मांगता गुरुदेव जी
सहन मैं इतना करूं, प्रतिकार कुछ भी न करूं
उफ़ निकालूं मुंह से नाहीं, हो दया गुरुदेव जी
सहन करना साधना है, प्रतिकार करना विघ्न है
किरपा तेरी इस लिए, पाता रहूं गुरुदेव जी

राग गारा ताल कव्वाली ठेका

कृपा

हे प्रभु ! किरपा करी, जो मन मेरा थिर कर दिया
भागता फिरता था जग में, चरण अपने कर लिया
मैं था चंचल, मैं था पापी, भोग ही रत था सदा
मन मेरे अनुराग जागा, मन को वश में कर दिया
यह जगत मन को लुभावन, सपन दीखें था सुनहरे
जगत बंधन से छुड़ाया, प्रेम को मन धर दिया
तेरी किरपा क्या बखानूं, क्या अनोखा खेल खेला
भटकता चारों दिशाएं, इक जगह पर रख दिया
हे प्रभु! बलिहार जाऊं, हूं पड़ा चरणीं शिवोम्
रास्ता भूले जो मैं था, राह पर मो कर दिया

राग शुद्धसारंग ताल दीपचंदी

कृपा

तेरी किरपा वह ही जाने, पाय जो किरपा तेरी
जगत क्या जाने इसे जो, हो नहीं किरपा तेरी
नज़ जब किरपा की होती, टूट सीमाएं सभी
भूलतीं यादें पुरानी, घटित जब किरपा तेरी
काम माया का न कोई, वह है जाय अपने घर
जगत तब बदला हुआ सब, वाह था किरपा तेरी
जो पराये हैं वह अपने, अपने तो अपने ही हैं
भेद जग का मिट है जाता, जब मिलत किरपा तेरी
जय प्रभु किरपा तुम्हारी, किरपा मो पर भी शिवोम्
राह है सब साफ होता, होत जब किरपा तेरी

राग अड़ाना ताल पंजाबी ठेका

विविध

छोड़ दुनिया अब तो पीछा
जब बुलाता मैं तुझे था, पकड़ में आती नहीं थी
अब जो मैं ने मुंह को पलटा, ले लिया मेरा ही पीछा
बात करने की भी फुरसत, अब नहीं है पास मेरे
देख ले दूजा ठिकाना, छोड़ दे तू मेरा पीछा
अब तो बस इक राम में ही, मनवा मेरा लग गया है
छोड़ कर तेरा सहारा, राम का पकड़ा है पीछा
अब नहीं परवाह कोई, मन में न उलझन ही कोई
होना हो जो हो किसी का, कैसा आगा कैसा पीछा
मैं तो अपने मन ही मन, आनन्द लेता हूं शिवोम
छोड़ा सब कुछ, जो झमेला, छोड़ी दुनिया आगा पीछा

वैराग्य राग मेघ मल्हार ताल दादरा

छोड़ मुझ को, छोड़ मुझ को छोड़ भी
वासना अब तू मुझे दे छोड़ भी
कब तलक मुझ को सताती तू रहे
और न साहस है मुझ में छोड़ भी
इन्द्रियां मेरी शिथिल हैं हो गईं
कब तलक इन को निचोड़ूं छोड़ भी
तेरा मन भरता कभी भी है नहीं
मैं तो भर पाया मुझे अब छोड़ भी
भजन करने दे मुझे तू अब शिवोम्
विघ्न भारी तू बनी, अब छोड़ भी

राग राजेश्वरी ताल भजनी ठेका

माया

मुख सों माया कहत सभी, पर न जानत माया कोई
जिस को देखो माया उलझा, बचे नहीं जो जानत सोई
मन में माया, जग में माया, सभी जगह माया ही माया
जा पर कृपा राम की होई, बचता या से इक सोई
मन में जो इक बार यह उतरे, फिर यह छोड़त ही मन नाहीं
ता का नाम ही माया जानो, घर में आ, घर वाली होई
पांव पसारे, खेल खिलाए, एक बार जो घुस जाती
नाहीं छोड़त, पसरी रहती, राज इसी का ही इक होई
तीर्थ शिवोम् यह माया ऐसी, दीखत न, पर मन भरमाए
मन में रहे, करे जग विचरण, मन से मिल कर, मन ही होई

राग बागेश्वरी ताल रूपक

विविध

कहत तो मरना सभी हैं, जानता कोई नहीं
है बदल यह, न मरन यह, मानता कोई नहीं
मर के जो पैदा न हो, मरना कहावे है वही
मर के फिर पैदा हुआ जो, मरना वो कोई नहीं
जो मिले मर के चरण में, पावता आनन्द है
जो रहे गोते ही खाता, निकलना कोई नहीं
लोग डरते हैं मरन से, होत दुख जग त्यागते
जग भी छूटा, देह छूटा, सुख उसे कोई नहीं
तीर्थ ऐ शिव ओम् मरना, सन्त केवल जानते
देखते रस्ता मरन का, मनहिं भय कोई नहीं

राग खमाज ताल कव्वाली ठेका

विविध

घर असंत आए दुख होए
मन व्याकुल, मन चंचलताई, अस्थिर बुद्धि होत है जाये
बालु रेत, भरी दोपहरी, जलत तपत अन्तर में ज्वाला
काम, क्रोध, मद, लोभ की अगनी, दबी रहो सो ऊपर आए
घर परिवार जगत में कलह, भोगन विषयन मन आसक्ति
समझत नाहीं, फसता जाए, मीठा ज़हर है घोलत जाए
भूलत राम हृदय सों अपने, या सम दूजो दुख न कोई
आए दुर्जन, लाए दुविधा, मन का चैन भंग हुई जाए
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मूढ़ असज्जन दूर ही मेरे
मैं तो लगूं तिहारी चरणीं, संत मिले, अन्तर जग जाए

राग तिलंग ताल केहरवा

पश्चाताप

सुनत विचारत उमर बिहाई, भगती नहीं प्रकाशित मन में
कैसे, क्योंकर, कहां से पाऊं, भाव नहीं है जागत मन में ॥
प्रभु-कृपा बिन, गुरु-कृपा बिन, भगती लाभ किसी को नाहीं
जगत-भाव ही रहे तरंगित, उदासीन न आवत मन में ॥
जग तो बड़ियाई में लागा, भगती का न भाव किसी को
विषय-वासना लागे अच्छी, क्रोध-लोभ न जावत मन में ॥
हौं तो जतन करत ही थाका, अजहूं लाभ मिला न मोहे
प्रभु-कृपा जो होवे मो पर, तो ही भगती पावत मन में ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, दान भगती का दीजो मोहे
कृपा बिना न होय सकत यह, ज्ञान विराग न जागत मन में ॥

राग बागेश्वरी   ताल दादरा

विविध

लिख लिख के थक गया हूं, कब तक रहूं मैं लिखता
लिखने से ऊब मन में, कब तक रहूं मैं बिकता ॥
यह वासना ही मन की, यह कामना प्रसिद्धि
साधन में विघ्न भारी, कब तक रहूं घिसटता ॥

आरम्भ में तो साधन, आगे यह विघ्न होता
जब तक यह छूटता न, है जीव इस में पिसता ॥
अब आगे चल तू इस के, अब छोड़ लिखना पढ़ना
अब लग हरि भजन में, कब लौं रहे तू खपता

शिव ओम् हे प्रभु जी, सुन ले पुकार मेरी
छुड़वाओ अब तो मो से, कागद कलम यह बस्ता ॥

राग जैजैवन्ती   ताल भजनी ठेका

योग

चालो रे भाई अन्तर तीरथ चालो
अन्तर गंगा बहत निरन्तर, अन्तर तीरथ न्हालो
अन्दर सुन्दर घाट हैं निर्मित, अन्तर जल ही शीतल मीठा
न्हाये न्हाये मनवा निर्मल, अन्तर ही गुण गा लो

अन्दर तीरथ, अन्दर शंकर, अन्दर ही कैलाश का वासा
अन्दर ही तिरशूल समाया, अन्दर शंकर तुम्हीं मना लो
अन्दर भक्ति मुक्ति साधन, अन्दर ही किरपा प्रभु होवत
अन्दर ही है मारग तेरा, अन्दर सुख अपना लो

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, अन्तर तीरथ में भी न्हाऊं
अन्तर का सुख, अन्तर अनुभव, अन्दर आतम लाभ कमालो

राग मालकौंस ताल दादरा

विविध

लिखता रहूं, लिखता रहूं, लिखता रहूं मैं कब तलक
ढोता रहूं मैं ज़िंदगी, ढोता रहूं मैं कब तलक
अहले-जहां पर न असर, लिखने का नाहीं फायदा
बेकार जाये वक्त भी, करता रहूं मैं कब तलक
अच्छा यही कर बंदगी, कुछ याद कर ले तू खुदा
लिखना तो बस इक हिर्स है, बनता रहूं मैं कब तलक
शिव ओम तो उकता गया, लिखना कि पढ़ना सब बला
अब तोड़ दे तू कलम को, कलमें घिसूं मैं कब तलक

राग जनसम्मोहिनी ताल केहरवा

विविध

अक्षर जोड़े नाम कमाए, मन में तो अभिमान बढ़ाए
निर्मलता, अभिमान यह घातक, कविता कर कर जगत दिखाए
काम तेरा मन प्रेम जगाना, अन्तर की सब याद भुलाना
मेरा तेरा मार भगाना, लिखे दिखाए, क्या कर पाए
राम तो मन अन्दर ही बैठा, कविता में पर वह न बैठा
बार बार मन कविता आए, अन्तर न सके जगाए
प्रेम विरह ही मारग जाए, राम के घर को, राम मिलन को
ता मारग ही चल रे मनवा, नहीं तो जीवन बिरथा जाए
तीर्थ शिवोम प्रभु जी मोरे, अब तो प्रेम तड़प मन जागे
मन विरह तो लिखा न जाए, विरह मन की पीर बढ़ाए

अन्दर तू क्यों उतरत नाहीं, गोता मारत मन क्यों नाहीं
अन्दर राम पिआरा पाए, बैठ रह्या अन्तर ही माहीं

राग तिलक कामोद ताल केहरवा

विविध

जग को छांड विरक्त भया तू, फिर भी द्वेष तेरे मन माहीं
माया गई न तृष्णा छूटी, वृत्ति लगी जगत के माहीं
अच्छा था जग में ही रहता, काहे मन को दूषित कीना
काम क्रोध न छोड़ा तू ने, घूमत रहत जगत के माहीं

विरतपना है हालत मन की, विरतपना उपराम है होना
विरतपना न बंधन जग का, तू तो लगा जगत के माहीं
अब भी समय गवाय नाहीं, मन को अपने शुद्ध करे तू
जग में ही चंचल था रहना, क्यों न रहा जगत के माहीं

तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, साधन तो है मन का साधन
मन न सधा, हुआ न कुछ भी, छोड़ो, रहो जगत के माहीं

राग मांड ताल केहरवा

बिरह

तुम जो नहीं दिखात, तो मन में चैन न आवे
मन रहे उदास उदास, कि मनवा सुख न पावे
घूमत फिरत हूं खोजत तुम को, मन्दिर सतसंग सब ही छाने
फिर भी न लागे हाथ, कि मनवा रुकि रुकि जावे

पुस्तक देखी, पन्ने उलटे, श्वास चढ़ाए, सिमरन कीने
तुम मिले किसी न ठौर, कि मनवा बाहिर को आवे
कहां छुपे तुम, कहां हो बैठे, ठौर ठिकाना कौन है तुमरा
तुम नहीं सामने आत, कि मनवा गोते खावे

तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मैं सेवक मैं दास तिहारा
तुम क्यों हो नहीं लखात, कि मनवा ठहर न पावे

राग बिहाग ताल कव्वाली ठेका

विविध

लिखया भजन, सुनाया लोगन, खूब कमाया नाम है अपना ।
नाम कमाया, ज्ञान भुलाया, दियो लुटाय सगला अपना ।।
बहिर्मुखी फुर्णा जब उभरे, हो प्रवाहित कविता तब ही ।
तब ही अहम उदय भी होता, दियो भुलाय सगला अपना ।।
जग- तरंग है कविता बाहर, बाहर ही आनन्द मनाएं ।
बाहर का बाहर ही रहवे, दियो गवाय सगला अपना ।।
बाहर से अन्दर ढक जाए, तम आवरण ही छाता जाए ।
बाहर दीखे, अन्तर नाहीं, लियो छिपाय सगला अपना ।।
तीर्थ शिवोम प्रभु जी मोरे, मनवा अब अन्तर्मुख जाए
बहुत कमाया, बहुत दिखाया, दूर हो गया सगला अपना ।।

राग मियां की सारंग ताल अध्धा

कीर्तन

कान्ह जी ! दीजो मो वरदान
दासन दास बनूं मैं तुमरा, या में ही मेरा कल्यान
दासन-दास होय सुख उपजे, छाया- छत्र प्रभु के रहिए
ऊंच- नीच का भेद भुलाना, जावत मन मेरा अभिमान
तेरे अंगना टहल कमाऊं, तेरे दासन सेव कमाऊं
माथा-नयनन राखूं नीचे, करूं सदा ही तेरा गान
दासन सेवा लक्ष्य ही मेरा, मन में भाव न दूजा कोई
एक भाव तुमरा ही मन में, हो अपमान या हो सन्मान
तीर्थ शिवोम प्रभु जी मोरे, यह आशीष कृपा कर दीजो
चरणीं लगा रहे मन मोरा, दिन हो रात, या कोई थान

राग तिलक कामोद, ताल भजनी ठेका

कीर्तन

भजन तू करत नहीं क्यों
तेरी आयु उमरिया बीत, भजन तू करत नहीं क्यों
राम भजन आलस न कर तू, राम भजन से पार हो बेड़ा
तू राम भजन कर प्रीत, भजन तू करत नहीं क्यों
तू लागा जग ही के माहीं, रस न तुझे भजन के माहीं
हो भजन से ही जग जीत, भजन तू करत नहीं क्यों
राम भजन हो मनवा निर्मल, राम भजन हो मनवा शीतल
तू राम भजन कर मीत, भजन तू करत नहीं क्यों
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, राम भजन मन नेह लगा ले
तू गाय प्रभु के गीत, भजन तू करत नहीं क्यों

राग गोरख कल्याण ताल झुमाली

सावधान

चलो चलो आ बाहर देखो, कौन दुआरे आया है
मौत लिवा ले जाने आई, अन्तिम बेला आया है
इधर उधर जग को क्या देखे, जग तो छूटा जाय है
अब तो चलो द्वार पर अगले, खतम जो पीया खाया है
तू तो रहा उदास मौत से, मौत न टलने वाली है
अब वह आय पड़ी है पहुंची, जाहे जनम तू पाया है
जनम है होता जीव का जब भी, मौत लिए ही होता है
मौत को ही तू भूला बैठा, जग में क्या तू पाया है
तीर्थ शिवोम् चलो हे मनवा, चलना एक बचा है मारग
चलो चलो अब छोड़ो दुनिया, जग तुम से भर पाया है

राग पीलू ताल कव्वाली ठेका

कीर्तन – कव्वाली

तेरी ही याद ने मुझे, दीवाना कर दिया
दिल सूखा जो पड़ा था, मयखाना कर दिया
न ठहरता था दिल कहीं, था भटकता ही जावजा
अब तेरे ही में लग गया, मस्ताना कर दिया
न दीखता कहीं था, मालूम घर कहीं न
हाज़िर हजूर कर उसे, बुतखाना कर दिया
क्या कहां कितना कैसा, क्या करूं उसे नज़र
खिदमत में पेश कर मुझे, नज़राना कर दिया
शिव ओम् में लगा था, इल्मो किताब में ही
कर दूर कर किताब को, सब जाना कर दिया

राग यमन ताल भजनी ठेका

प्रेम

अगन देत है जलहिं जलाए, जल देवत है अगन बुझाय
यह विपरीत हैं इक दूजे के, एक उठाए, दूज गिराय
राम भजन में विषयन नाहीं, विषय होयं तो राम भजन न
एक होय तो दूजा नाहीं, एक आए तो दूज हराय
जहां भगती तहां माया नाहीं, जहां माया नहीं भगती
माया आय दबाय भगती, भगती माया आय दबाय
जा हिरदय हो प्रेम प्रभु का, ता हिरदय न मोह जगत का
मोह प्रेम दोऊ संग रहत न, मोह आए तो प्रेम भगाय
तीर्थ शिवोम् है मेरे मनवा, भगती राखो मोह हराय
एक साथ यह चलत न दोनों, दोनों राखो, दोनों जाय

राग जौनपुरी ताल भजनी ठेका

मीरा गीत

मनवा मेरा बोल उठे कब, मेरे तो गिरधर गोपाल
मीरा भांति चहक उठूं मैं, मेरे तो इक नन्द के लाल
मस्त बनी मैं मन ही मन में, याद नहीं कुछ जग जंजाल
ब्रज ही लागे मनवा मोरा, देखत रहूं कृष्ण गोपाल
छोड़ मान मर्यादा सब ही, चालूंगी कब प्रेम की चाल
नाचत गाऊं श्याम विरह में, मन में हो केवल गोपाल
तीर्थ शिवोम समय कब होगा, जब पी मुझ पर हो किरपाल
राह तकत हूं, उसबेला की, नाच उठूं मैं संग गोपाल

राग भैरवी ताल खमेटा

मीरा गीत

वैद सांवरिया कब आएगा, कब से रही पुकार खड़ी
मीरा की सुध लेत नहीं क्यों, कब से रही दुआर खड़ी
रोगी मनवा, रोगी काया, रोग में ही जीवन बीता
अब तो आओ कृष्ण कन्हैया, मीरा भयी लचार बड़ी
अटक न जाए मनवा जग में, यही विनय तेरे चरणों
अब तो बेड़ा पार करो प्रभु, जाय बीतत घड़ी घड़ी
तीर्थ शिवोम हे गिरधर लाला, बीत न जाय विरथा ही
चरण शरण प्रभु मोहे दीजो, द्वारे तुमरे आन पड़ी

सुख की नींद वही सोवत है, तृष्णा- रहित है मनवा
जग-विषयन ता नाहीं लुभावें, भया जगत बैरागा

राग देस ताल केहरवा

मीरा गीत

क्या मैं भी मीरा की भान्ति, प्रेम दीवानी हो पाऊंगी
भर आएगा दर्द से हिरदय, प्रेम बिरह में खो पाऊंगी
मीरा भी पर कृपा करे जो, तो ही प्रेम दीवानी होऊं
तो ही उन्मुख श्याम बनूं मैं, हिरदय अलख जगा पाऊंगी
लोगन लागे साधन भजना, मेरा साधन प्रभु कृपा है
हो इतना अनुराग मेरे मन, श्याम की किरपा पा जाऊंगी
तीर्थ शिवोम् दीवानी मीरा, मेरे हिरदय आय विराजो
तुम आई तो श्याम भी आया, सेज श्याम की पा जाऊंगी

राग देस ताल त्रिताल

सावधान

कब तक चाले चाल कुचाल ।
मनवा तोहे समझ न आई, समय बड़ा विकराल ॥
कभी इधर की, कभी उधर की, रहे बनावत बातां
एक घड़ी भी तू ने पगले, भजा न कृष्ण गोपाल ॥
रहता रोवत, रहता सोचत, चंचल बना भटकता
वृथा गवावे क्यों तू जीवन, एक ही दीन दयाल
जग में गया, तो कारन बंधन, फिर न छूट सके तू
रहे पिसत चक्की करमन की, यह जग जाल जंजाल ॥
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, कब लों मैं समझाऊं
पल पल छिन छिन बीत रही है, चल तू घर गोपाल

गुरु-चरण ही जा मन लागा
ताकी दुविधा दूर भई सब, भया हरि अनुरागा

राग गोरख कल्याण ताल केहरवा

कीर्तन

मुरली सुनाओ शाम, ताप मन का मिट जाए
तेरा जागे प्रेम अपार, बान मन में लग जाए
आओ हिरदय घाट हमारे, कब की बैठी राह निहारें
मनवा हो रहा अधीर, कि दूजा कुछ नहीं भाए
आवे याद तिहारी कान्हा, चाल तेरी की, तान तेरी की
यादों के ढेर अपार, कि आ आ रही सताए
तू ही सीखत तान सुनाता, तू ही सीखत रास रचाता
मन जग में नाहीं जात, कलेजा मुंह को आए
तीर्थ शिवोम् कान्हा हे शामा, पांव पड़त हैं, माथा रगड़ें
अब जाओ भी तुम मान, कि तुम को रही मनाए

राग बागेश्वरी ताल भजनी ठेका

कीर्तन

कृष्ण मुरारे हे, टेर सुनो प्रभु
कुंज बिहारी हे, अर्ज़ सुनो प्रभु
जात हूं डूबत, तम के माहीं
नन्द दुलारे रे, अर्ज़ सुनो प्रभु
आना चाहूं, लोक में तेरे
कृष्ण पिआरे रे, अर्ज़ सुनो प्रभु
राह है रोके, जगत भयानक
मात दुलारे रे, अर्ज़ सुनो प्रभु
तीर्थ शिवोम्, वेग हरो भ्रम
प्राण अधारे रे, अर्ज़ सुनो प्रभु

राग भीमपलास ताल केहरवा

कीर्तन

कुंजबिहारी, कुंजबिहारी
मुरली के बजैया, हम आए शरण तिहारी ——
हे रासरचैया, सुध लो बेग हमारी ——
गऊओं के चरैया, करुणात्मक हमारी ——
माखन के चुरैया, पड़े हैं दुविधा भारी ——
गोकुल के छलैया, सुन लो टेर हमारी ——
हे कृष्ण कन्हैया, शिव ओम चरण बलिहारी ——

राग गावती ताल केहरवा

कीर्तन

राम जपो रे, राम जपो रे, समय गवावत काहे रस्या
राम भजन ही सफल है जीवन, तू न समझत काहे रस्या
राम ही काढ़े नाव भंवर से, राम दिखावे मारग तो है
राम ही सर्व सुखों का दाता, भजत राम न काहे रस्या
राम अति ही दीनदयालु, भक्तन पर वह करत कृपा है
ताही शरण गहो रे प्राणी, शरण लेत न काहे रस्या
राम भजन छूटे भव बंधन, राम भजन पूरे सब कारज
राम भजन टूटे यह माया, लेत लाभ न काहे रस्या
तीर्थ शिवोम् है भूरख मनवा, राम भजन में सुख ही सुख है
राम भजन भव रोग की औषध, पल पल रटत न काहे रस्या

राग षट्दीप ताल भजनी ठेका

कीर्तन

रघुवीर तेरी किरपा
तू ने बनाया हम को, तू ने सजाया हम को
तेरी शरण ही पाना, रघुवीर तेरी किरपा
हम नीच पापी जड़ हैं, बुद्धि समझ न कोई
तेरे चलाए चलते, रघुवीर तेरी किरपा
दुनिया पड़े ही हम हैं, दुनिया रमे ही हम हैं
दुनिया ही सुख हैं मानें, रघुवीर तेरी किरपा
हम को निकालो आय, हम को बचा लो आय
हम शक्तिहीन चंचल, रघुवीर तेरी किरपा
शिव ओम् की विनय है, तुमरी हो नज़ हम पर
हम आसरे पड़े हैं, रघुवीर तेरी किरपा

राग देवगिरिबिलावल ताल भजनी ठेका

सावधान

जो जग में तुम सुख मांगत हो, दुख भी आवत साथ है उस के
दुखी यदि न होना चाहो, सुख भी नाहीं, साथ है उस के
सुख है जहां, वहां दुख भी है, जहां दुखी, सुख साथ है उस के
दुख सुख दोनों एक साथ ही, एक तो दूजा साथ है उस के
है तो नियम यही जगत का, ता का है अपवाद न कोई
संत जना सुख दुख से न्यारे, मन का हर्ष साथ है उस के
तीर्थ शिवोम् प्रभु के भगतो, सुख दुख माया खेल ही मानो
लेत लुभाय, लेत फसाय, मन कलेश भी साथ है उस के

प्रभु प्रीतम से बिछुड़ गए हम
चहुं दिशाएं भटकत भटकत, थाक-हार आए द्वारे हम

राग पीलू ताल भजनी ठेका

कीर्तन

राम ही राम, रटत मन रहियो
चलते-खावत, सोवत-जागत, नाम हरि ही मुख सो कहिओ
राम का नाम सदा संग तेरे, छूटत नाहीं पल भर को भी
राम का लक्ष सदा मन माहीं, सिमरन राम का करते रहिओ
राम नाम इकनाव है ऐसी, पार करत भव-सागर सों जो
उतरत पार चढ़े जो या पर, या पर चढ़े सदा ही रहिओ
राम का नाम जड़ी है बूटी, रोग भगावत भव का है जो
या का रस मीठा है लागे, पान अमी रस करते रहिओ
तीर्थ शिवोम् है मेरे मनवा, राम-नाम महिमा क्या गाऊं
जो पीवत सो ही जानत है, तू भी घोटत पीवत रहिओ

राग हमीर ताल त्रिताल

लीला

लीला तुमरी समझ न आवे
अजब अखण्ड अनन्त मोहमयी, देखत मन भरमावे
कैसा खेल रचाया तूने, सांच झूठ करि माने
जो झूठा, सो साचा दीखत, देखत मन ललचावे
या जग में बुरयाई फलती, बनत बुरा जो अच्छा
अच्छा बुरा समझ न आए, देखत मन बौरावे
कांच-महल यह माया नगरी, सुन्दर रूप सलोना
कैसी बनी ठनी मन भावन, देखत मन पतियावे
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, लीला समझ न पाया
मैं तो उलझा, जान के साचा, देखत मन घबरावे

राग गोरख कल्याण ताल केहरवा

कीर्तन

भगती भाव मन जागा रे, लागा रे तेरी चरणीं
मन अनुरागा लागा रे, आया रे तेरी शरणीं
तेरे बिन जियड़ा नहीं लागत, तुमरा ध्यान निरन्तर
तुम से ही मन पागा रे, आया रे तेरी शरणीं
मनवा रह रह तुम्हें पुकारत, याद तेरी में राह निहारत
मन जग से अब भागा रे, आया रे तेरी शरणीं
तीर्थ शिवोम् विनय यह मेरी, रखियो चरणीं, सेवक तेरा
हंस बना अब कागा रे, आया रे तेरी शरणीं

शुद्ध कल्याण ताल भजनी ठेका

कीर्तन

गोविन्दा इक मन मतवाला, गोविन्दा इक नन्द के लाला
गोविन्दा इक धेनु चरावे, सुन्दर मुख मुरली वाला
गोविन्दा इक रास रचाय, गोपिन गोपन मन ललचाय
बालन को बन खेल खिलाय, पगड़ी श्यामल कलगी वाला
कंस असुर को मार गिराये, मात-पिता को मुक्त कराय
दुर्योधन का घर ठुकराय, साग विदुर घर खावन वाला
वह गोविन्दा जगत रचाय, कण-कण माहीं जगत समाय
अपने में फिर लेत मिलाय, सृष्टि प्रलय करावन वाला
गीता का उपदेश सुनाय, रथ अर्जुन को हांक चलाय
क्या-क्या कौतुक किए कराय, अद्‌भुत काम दिखावन वाला
तीर्थ शिवोम् मेरे गोविन्दा, मैं बलिहारी रूप तेरे पर
मैं सेवक तू स्वामी मेरा, मुक्ति दान करावन वाला

राग देव गंधार   ताल भजनी ठेका

कीर्तन

प्राण तुम्हीं हो, जीवन तुम हो, हनुमान बलवाना रे
मूलाधार निवासी तुम हो, हनुमान बलवाना रे
तुम सोये, मनवा मलीन हो, तुम जागे, निर्मलता
मनवा चाले राम के मारग, हनुमान बलवाना रे
जब जागो, सागर लंघ जाते, लंका जा सीता सुध लाते
असुरन को तुम मार भगाते, हनुमान बलवाना रे
मैं भी शरण तिहारी आया, जग माया से मन घबराया
सूझ नहीं कछु मोहे पाया, हनुमान बलवाना रे
तीर्थ शिवोम् है राघव दासा, राम-काज तुम लेय संभाले
पंथ-राम पर मुझे लगाओ, हनुमान बलवाना रे

राग चन्द्रकंस   ताल त्रिताल

भजन

मन नहीं लागत तुमरी चरणीं
सदा सदा ही जग में धावत, पड़त न तुमरी शरणीं
मैं समझावत मन नहीं माने, क्रोध लोभ मद लागा
नेक नहीं कीना जब कुछ भी, होगी क्योंकर भरणीं
सोचत हूं कुछ नाम कमाऊं, पर कर न कुछ पाऊं
मनवा भटकत इधर-उधर ही, आवत भागी मरणीं
कैसे पार होयगी नदिया, नैया नहीं, है नहीं खवैया
बना बावरा, डोलत तम ही, कुछ भी तो नहीं करणीं
तीर्थ शिवोम् कृपा हे रघुवर, तुम्हीं कृपा अब कीजो
छूटे क्रोध मोह भी जकड़न, पार उतर जाऊं वैतरणी

राग धानी   ताल भजनी ठेका

कीर्तन

मेरो मन लागा कृष्ण गोपाल
ब्रज का वासी, धेनु चरावे, मुरली बजाय रह्या नन्द लाल
गोवर्धन को लियो उठाय, इन्द्र देव का गर्व मिटाय
ब्रजवासिन के मन हर्षाय, झूम उठी सगली ब्रजबाला
नन्दनवन में रास रचाय, माखन दही चुराय खाय
नगरी सारी धूम मचाय, भाये मन यह नटखट लाला
भक्तन का मन लेत लुभाय, मुरली तान सुनाय सुनाय
दीनन के दुख दूर हटाय, जाय बुझे हिरदय की ज्वाला
तीर्थ शिवोम् कन्हैया कृष्णा, मुरली तान सुनाओ हम को
दूर जाय मन सों जग झूठा, मन तन हो तेरा मतवाला

राग गौड़ सारंग   ताल भजनी ठेका

कीर्तन

हनुमान बलवीरा, जय जय हनुमान बलवीरा
राम काज को उद्यत रहते, मन में राखत जो नित धीरा
सेवा प्रेम स्वरूपी तुम हो, भक्तन के तुम हो हितकारी
राम मिलन का मारग तुम हो, राम कृपा के अमृत नीरा
साधक जन को राह दिखाते, प्रेम-भक्ति का, प्रभु सेवा का
जा से साधक तर है जाता, जो न होवत कभी अधीरा
माया रूपी दावानल में, जलते झुलसे जात रहे हम
हमें कृपा कर आय बचाओ, तुम हो जानत हमरी पीरा
तीर्थ शिवोम् केसरीनन्दन, विनय गुज़ारें हम श्रीचरणों
वेग करो प्रभु, विपद हरो प्रभु, टूटत जाय हमारा धीरा

राग सूरमल्हार ताल भजनी ठेका

मन

प्रभु जी ! यह मन सुनत न मोरी बात
काम क्रोध मद मस्त रहे वह, देखि जगत ललचायो
समझाए समझाए हारी, देय भुलावा जात
लाज विवेक न आदर कोई, चंचल रहे सदा ही
धर्म-अधर्म का भेद न या को, नहीं सीख वा भात
मैं तो कर कर जतन अनेकों, अन्तिम हार है मानी
दीन दयाल जान प्रभु तोहे, करत रही मन बात
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मन तुमरी ही माने
तुमरा जो संकेत भी होय, नहीं कुमारग जात

राग खमाज ताल भजनी ठेका

कीर्तन

जय मोहन जय हरे मुरारे
वृन्दावन में वास तिहारो, नन्दनन्दन जय कृष्ण मुरारे
मुरली अधर, मधुर रस भीनी, नाचत गोपिन ग्वाले
खिलता जाय अंगवा अंगवा, करत सभन मदमस्त मुरारे
गऊएं आगे, गऊएं पाछे, गऊएं वन वन कानन
मुरली धुन सुन धावत आएं, मन हर लीना ताम मुरारे
मनवा मोरा लागा ब्रज में, खेलत जहां कन्हैया राधे
पड़ी रहूं अब श्री चरणों ही, सूझत न बिन तोर मुरारे
तीर्थ शिवोम् बजावनहारे, मुरली धुन को, रख कर अधरन
मोरे अन्तर ध्वनि प्रकट हो, करो कृपा हे कुंज विहारे

राग भैरवी   ताल केहरवा

कीर्तन

हम पड़े अंधेरे कूप, श्याम जी आय निकालो
हम जावत तम में डूब, श्याम जी आय बचा लो
तुम तो राखनहार प्रभु जी, हम दुविधा अति भारी
मन भय भ्रम से है चूर, श्याम जी आय उबारो
तुम्हीं बचाओ, कौन बचाए, तुम ही एक हो सुनवेहारे
हम होवत अति अधीर, श्याम जी पार उतारो
माया ठगनी रही लुभाय, रूप रंग मन को भरमाए
मन विषयों से भरपूर, श्याम जी संकट टारो
तीर्थ शिवोम् करत है विनय, चरण-शरण दीजो प्रभु मोहे
हैं हुए बड़े मजबूर, श्याम जी आ निस्तारो

राग असावरी ताल झुमाली

विरह

तेरे लिए मैं दर दर ठोकर खाई
तेरा दर न मिला कहीं भी, कपट जाल ही दिया दिखाई
कहें यही सब, दर जानत हैं, पोली दम्भ भरी ही बातें
और ठिकाना को नहीं जानें, पेट भरन दुकान चलाई
पुस्तक देखी, तीरथ देखे, देखा कर सब किसी बताया
तेरा पता नहीं पर पाया, न मिलिया जो देय सुझाई
मैं तो भ्रमत भ्रमत थक हारा, कौन ठिकाना और मैं खोजूं
तेरा दर इक तू ही जाने, या किरपा कर देत जनाई
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, कहां छिपे हो, कौन तेरा दर
जहां बैठ तू जगत चलाए, कुछ भी समझ जोिन न पाई

राग यमन ताल भजनी ठेका

कीर्तन

गोविन्द के गुण गाना, राम भज होय दीवाना
हरि हरि नाम धिआना, नाम जप हो मस्ताना
गुण गाए मन निर्मल तेरा, जागे मन मे प्रेम प्रभु का
रंग जायेगा मनवा तेरा, प्रेम प्रभु का पाना
नाम जपे मन प्रभुहिं लागे, छोड़े सब ही चंचलताई
थिर तू प्रभु के चरणीं, ध्याम प्रभु के जाना
ध्यान किए प्रभु रूप मिले है, गुण परगट मन मांही होईं
ध्याम रूप पाएगा प्रभु का, नाम प्रभु का जाना
तीर्थ शिवोम् भक्त मतवारे, सिमरे हरदम नाम प्रभु का
दुविधा मिट जाय तेरी, रूप प्रभु का पाना

राग दरबारी कान्हड़ा ताल केहरवा

सावधान

जो खोजा सुख तो पाया दुख भी मेरे सामने ही
मिला जो सुख तो आया दुख भी मेरे सामने ही
जो चाहो सुख, न आए दुख, कभी यह हो नहीं सकता
जहां है सुख, वहीं है दुख, खड़ा वह सामने ही
करो मंजूर दोनों को, या दोनों से ही मुंह मोड़ो
जो चाहो एक को भी तो, है दूजा सामने ही
यह है दस्तूर दुनिया का, यही शिव ओम् का कहना
न चाहो सुख, न मांगो दुख, हटे वह सामने ही

प्रभु गुण गावां, गुणन बतावां, सीमित बातां गुणन के ताईं
गुरुमुख होते पर उपकारी, जानी बात, भरत सब ताईं

राग जौनपुरी ताल भजनी ठेका

कीर्तन

तुलसी राम, सूर घनश्याम, मीरा के गिरधर गोपाल
नानक गुरु, तुका के विट्ठल, जैसा भाव चलत है चाल
रूप तेरा न कोई प्रभु जी, रूप सभी ही तू ने धारे
लीला तेरी समझ न आवे, जैसा भक्त, वही नन्दलाल
जैसा कोई मांगत देखन, रूप दिखाय ता को वैसा
भक्तन को तो प्रभु दिखाय, दुश्मन को बरछा विकराल
मेरे मन का भाव यही है, जैसा तू है वैसा दीखे
रूप तेरा थिर कैसे कर दूं, मैं अंजान, मति कंगाल
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, रूप तेरा इक तू ही जाने
बिरथा जतन करे जो कोई, होवत रहत सदा बदहाल

राग बिलावल ताल केहरवा

विविध

लिख लिख भजन करेगा क्या तू, अब तो राम-भजन कर
लिखना पढ़ना छोड़ सभी कुछ, मन को अन्तर्मुख कर ॥
लिख लिख पन्ने कीने काले, पर कालापन दाग न छूटा
साबुन नाम रगड़ तू हिरदय, मन अपना निर्मल कर ॥
भजन लिखे अभिमान बढ़ाए, मन की गांठ को और दृढ़ाए
अब तू खोल पड़ी जो अन्तर, मन को आतम-थिर कर ॥
बीत न जाए लिखते लिखते, बीत न जाए बाहर-मुख ही
बीते हरि भजन ही अब तो, मन न हरि-विमुख कर ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, लिखना पढ़ना मोर छुड़ाओ
लीन सदा तव चरणों में ही, भाव-हृदय में रख कर ॥

राग हंसध्वनि ताल खमेटा

कीर्तन

राम नाम ही प्यारा मो को
राम नाम का सकल पसारा, राम-नाम ही भाय मो को
दीन धर्म से न्यारा प्यारा, तीन गुणन छुअत भी नाहीं
तीन लोक जा जोत जले हैं, भव से पार कराये मो को
हिन्दु मुस्लिम सिख बना वह, वेद कुरान पुराण सभी ही
वह ही बना जगत संसारा, अन्तर जग सिमटाए मो को
आवन-जावन मरन नहीं कुछ, एक अकेला, दूजा नाहीं
मन का मौजी, पर करुणाकर अनुपम कृपा दिखाय मो को
तीर्थ शिवोम् मेरे रघुबीरा, कृपा तिहारी मो पर भी हो
मैं हूं नीच कुकर्मी पापी, मारग देय लगाए मो को

राग धानी ताल धुमाली

कीर्तन

चाहे जगत बिसर मैं जाऊं, राम-नाम पर बिसरूं नाहीं
जग तो है जावन ही इक दिन, नित्य राम को बिसरूं नाहीं
जग तो है स्वारथ से भरया, राम करत है पर उपकारा
राम-नाम सम दूजा नाहीं, राम पिआरा बिसरूं नाहीं
राम का नाम अगन है ऐसी, देत जलाय पापन तापन
हिरदय प्रेम, भाव हरि ताईं, कदपि राम मैं बिसरूं नाहीं
राम-नाम जा जन नहीं लीनो, ता का जनम अकारथ जानो
नाम ही जीवन सफल बनाए, होए बिवश, पर बिसरूं नाहीं
तीर्थ शिवोम् राम प्रभु मोरे, हर पल ध्यान तुम्हारे चरणीं
हो अनुकूल या कुछ भी उलटा, राम कभी भी बिसरूं नाहीं

राग असावरी   ताल त्रिताल

प्रेम

छिन छिन प्रेम बढ़त ही जाये
अगन प्रेम की होई निर्मल, हिरदय अगन बढ़त ही जाये
विषय वासना भस्म हुई सब, मनवा भान्ति मणि भया है
अब तो अगनी धधक उठी है, अन्तर प्रेम उमड़ता जाये
अभी किनारा दूरन को है, प्रेम संभाले नहीं संभलता
अब तो कृपा करो हे प्रीतम, याद तेरी मन सों न जाय
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, हौं तो भयी दीवानी तेरी
तुमरे हित ही मन में बिरहा, एक नज़र मुझ पर हो जाये

राग देवगिरि बिलावल   ताल भजनी ठेका

कीर्तन

राम नाम ही पार उतारे
भव-बंधन को काट डार कर, ध्याम रामहिं पार उधारे
जलत अगन में हाथ देवो तुम, जाने या अनजाने कुछ भी
वह न देखत वृद्ध कि बालक, हाथ देत वह डारे जारे
उलटा सीधा कैसा भी लो, राम नाम है औषध ऐसी
वह तो पार लंघावत ही है, अन्तर संचित दुश्मन मारे
संत बेद समझाएं सब ही, नाम की महिमा जग से न्यारी
तीन लोक में न कोई ऐसा, दीन जनन को पार उतारे
तीर्थ शिवोम् राम जी मोरे, तो से बढ़ कर नाम है तोरा
राम नाम ही एक उपाय, अन्तर दुश्मन देत संहारे

सब पर कृपा करे मेरा साजन, हमरा भी तो ध्यान धरो कुछ
हम भी तुमरे द्वार पड़े हैं, डूबत बेड़ा पार करो कुछ

राग यमन ताल केहरवा

कीर्तन

जग दुखड़े बहुत उठाए, मन चरणीं ही धाए
इक चरण-कमल मन भाए, मनवा तुम्हीं जाय
खोज खोज कर मैं थक हारा, मन का मीत कहीं न मिला
अब आयो तुमरे द्वारे, चरणीं सीस नवाए
तेरी छवि निराली सुन्दर, मन मोहक है मधुर सुहानी
धुन तेरी मन ललचाए, मन मेरा भरमाए
तू दाता, तू जग रखवाला, तेरी महिमा कही न जाए
मन लीन तेरे ही चरणीं, हिरदय भाव जगाए
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, दुखिया शरणीं आन पड़ा है
अब पकड़े चरण तिहारे, भव की पीर हटाए

राग तिलक कामोद ताल कव्वाली ठेका

गज़ल - कव्वाली

आशिक मैं तेरे दर का, ठुकरा मुझे न देना
आया हूं बन भिखारी, झोली भी भर ही देना
है नाम तेरा ऊंचा, रुतबा बलन्द तेरा
नाचीज़ नासमझ को, कदमों में रख ही लेना
इक तू ही तो है मेरा, जग में न कोई मेरा
अपना जो माना तुम को, अपना बना ही लेना
हर वक्त याद तेरी, दिल में समाए रहती
रख लेना लाज मेरी, चाकर बना ही लेना
शिव ओम् एक तेरा, है आसरा मुझे तो
दर पर पड़ा रहूं मैं, दर से हटा न देना

राग कलावती ताल- रूपक

ग़ज़ल

क्या करूं मैं दिल का तेरे, जिस में मेरी याद न हो
इस से अच्छा दिल है मेरा, जिस में तेरी याद तो हो
याद ही दिल को बनाए, याद ही उलफत जगाय
याद ही दो दिल मिलाए, याद न वह दिल ही क्या हो
दिल जो अपना साफ चाहे, याद को दिल में बसा ले
याद को साथी बना ले, याद पीया संग तो हो
दिल में मेरे याद तेरी, हिज्र तेरे में जलूं हूं
जो बुझाया, जलना चाहा, कुछ तरद्दद पास तो हो
मैं तड़पती ही रही, पाने तुझे ही इक शिवोम्
मुंह दिखाया भी गया न, कुछ महब्बत दिल तो हो

राग धनाश्री ताल केहरवा

कीर्तन

हौं भटकत भटकत हार्यौ, शरण तिहारी आयो
हौं कहीं शरण न पायो, चरण तिहारे आयो
जग देखा स्वारथ का मारा, विषयन माही अटका रहा है
शरण देय न सकत किसी को, द्वारे तुमरे आयो
हौं भटका, हौं भटक रह्या हूं, ठौर कहीं भी मिली न मोहे
ठौर तो एक तुम्हारी देखी, मांगन शरण हूं आयो
तू दाता, तू दीन दयाला, मैं याचक हूं द्वारे तेरे
शरण पड़ा हूं, बांह गहो जी, चरणीं सीस नवायो
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, कहीं निराश न करना मोहे
हौं तो दास तिहारा प्रभु जी, ठोकर खा खा आयो

राग तिलक-कामोद ताल केहरवा

सीख

काम राम का मेल न होये, काम बसे तब राम न होये
हिरदय में बस एक बिआपे, दोनों साथ-साथ न होये
काम राम का बैर पुराना, बने विरोधी इक दूजे के
काम राम को रहन न देवे, राम रहे तो काम न होये
रवि-रजनी एकत्रित दोनों, होत कभी न एक जगह पर
तैसे राम काम भी दोनों, अन्तर साथ उदय न होये
काम के पाछे पाछे चालो, या फिर राम से नाता जोड़ो
एक के साथ, एक ही साथी, दोनों से निर्वाह न होये
तीर्थ शिवोम् राम को पाना, चाहो तो संग राम ही चालो
राम कभी भी संग न छोड़े, काम का साथ सदा न होये

राग धानी ताल केहरवा

कीर्तन

मनवा क्यों न जपत मुरार
जा किरपा ले जाय तुम को, भव-सागर के पार
जो न भजे हरि गोविन्दा, भव में गोते खायगा तू
बीच भंवर ही अटक रहे तू, उतरे आर न पार
जग तो केवल एक दिखावा, जो दीखे, सब मिथ्या भासे
इस में काहे उलझ रहा तू, न जाय तू पार
नाम हरि ही तारनहारा, जा ने जपा, सो उतरे पारा
तू भी जप ले, जप ले, जप ले, जाय उतर तू पार
तीर्थ शिवोम् प्रभु बनवारी, नाम धरायो कृष्ण-मुरारी
नाम जपत तिन के रखवारे, करत हो नैया पार

मध्यमाद सारंग ताल केहरवा

विनय

मैं तुझे मनाते हार गई, मैं तुझे रिझाते हार गई
मैं कब की जतन करत हारी, मैं हार गई, मैं हार गई
तुम को न कभी मना पाई, तुम को न कभी रिझा पाई
मैं मन की भोली चतुर नहीं, मैं हार गई, मैं हार गई
कहते हैं भक्तों भोलों पर, तुम रीझत मान भी जागत हो
फिर मो पर क्यों रीझत नाहीं, मैं हार गई, मैं हार गई
प्रभु अब तो सुनो पुकार मेरी, तरसाओ और मुझे नाहीं
भोली पर दुखिया नारी हूं, मैं हार गई, मैं हार गई
मैं करत विनय हूं श्रीचरणी, शिव ओम कृपा मो पर कीजो
कर जोड़त, पावं पड़त तुमरे, मैं हार गई मैं हार गई

राग काफी ताल केहरवा

कीर्तन

राम तेरा रखवाला तो किस बात से डरना
सब से प्रेम से रहना, न कोऊ से लड़ना
राम भरोसे जो दिन काटे, बुद्धि कौशल नहीं दिखाता
सीधा सीधा चाले, न कोऊ से भिड़ना
काम क्रोध न ता मन होवे, राग द्वेष न ता मन सोहे
प्रेम करे सब ही से, बैर न कोऊ करना
मरने से घबरात नहीं वह, जीवन से अकुलात नहीं वह
मरना जनम समाना, वह जानत है मरना
तीर्थ शिवोम् राम के भक्तो, राम भरोसा मन में राखो
शरण राम की रहना, तो फिर काहे खपना

राग मालगुंजी ताल कव्वाली ठेका

सावधान

कब तक रहेगा सोता, रैणा गई बिहाय
नदिया है जैसे बहती, जीवन तेरा है जाय
हर पल के साथ रहता, यह काल चक्र घूमे
उस के ही साथ तेरी, बीती उमर है जाय
जाना नहीं उमर का, कुछ भेद तू ने अब तक
छिन भी थिर रहे न, आभा घटत ही जाय
कुछ राम भज ले बन्दे, जीवन को ले सुधारे
बीता समय न लौटे, बेकार न ही जाय
शिव ओम् अब तो जागो, प्रीतम रहा बुलाय
अब भी न जागे तो फिर, वेला निकल ही जाय

राग धनाश्री ताल भजनी ठेका

प्रेम

बिक गई मैं, बिक गई मैं, हाथ तेरे बिक गई मैं
अब नहीं मम पास मेरे, पास तेरे बिक गई मैं
कुछ लिया न, कुछ दिया न, सौदा यह कीमत बिना का
भाव मेरा किरपा तेरी, हाथ तेरे बिक गई मैं
अब बनी तेरी ही दासी, नाम सिमरूं तेरा हरदम
यह ही सौंपा काम मोहे, हाथ तेरे बिक गई मैं
राखो मो जैसा भी चाहो, इच्छा मेरी है नहीं कुछ
तेरी इच्छा मेरी इच्छा, हाथ तेरे बिक गई मैं
अब तो मैं शिव ओम् तेरी, हो गई हूं, हो चुकी हूं
है न कोई भेद तुम से, हाथ तेरे बिक गई हूं

राग रागेश्री ताल चुमाली

योग

जोगी जोग का पंथ कमाई
सुखमन आसन ध्यान करो दृढ़, सुरती सहज चढ़ाई
सम कर राखो दृष्टि अपनी, चंचलता उड़ जाई
आपा मेट प्रभु संग जोड़ो, जग बिलीन हुई जाई
आतम जोत करो निज अनुभव, सोऽहम नाद प्रकट हो
मैं और तू का भेद मिटे तब, ब्रह्म-पार पुगराई
छोड़ सहारे सारे जग के, एक भरोसा उस का
वह ही दाता, वह ही रक्षक, भेद भाव मिट जाई
तीर्थ शिवोम् पंथ यह सीधा, जाए पर्वत ऊपर
नाम पकड़ कर, उसी सहारे, उड़ता उड़ता जाई

राग श्री कल्याण ताल केहरवा

सावधान

मनवा! कबहूं लगे भजन में
दिन तो जावत बीतत पल-पल, तू लागा विषयन में
विषय प्रभु से दूर करावें, जग में ही मन को भरमावें
सुख-दुख देय लायें चंचलता, लाग तू प्रभु भजन में
पतझर की जब रुत है आवत, पंछी तरुवर छोड़ बसेरा
वक्त पड़े विषयन उड़ जई हैं, छोड़ रमण विषयन में
आवत-जावत राम भजे तू, ऊठत-बैठत राम भजे तू
गावत-खावत राम भजे तू, लग इक राम भजन में
तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, राम भजन तू लागत क्यों न
राम भजन ही साचा सुख है, काहे लाग रहा भोगन में

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति – स्मरण

नाम जपे और सिमरन राखे, मन में धारण भाव प्रभु का
नशा भक्त सिमरन का हरदम, हटत नहीं मन भाव प्रभु का
जाए न मन जग के ताईं, लगा रहे इक नाम प्रभु पर
ऊठत बैठत सिमरन चाले, छाया मनहिं भाव प्रभु का
बने स्वाभाविक सिमरन ताका, रहे होत हर क्षण ही सिमरन
बाहर करे जगत व्यवहारा, मन में रहता भाव प्रभु का
यह ही सिमरन साची भक्ति, पार उतारत जन को भव से
सिमरन नाम-जहाज गुरु का, रखवत बनाए भाव प्रभु का
तीर्थ शिवोम् रहे जो सिमरन, ता का साधन चलत निरन्तर
निसदिन लागा हरि शरण में, पार उतारत भाव प्रभु का

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति – पादसेवन

सद्गुरु इष्ट चरण उर धारे, करत है पूजा भाव भक्ति से
चरणामृत ले माथे लाए, करत सभी कुछ भाव भक्ति से
सारा जग चरणनहिं देखें, अन्तर्बाहर चरण समाए
शंकर-शक्ति तहां बिराजें, ध्यान धरत वह भाव भक्ति से
चरण सिंहासन-हृदय बिराजें, अन्तर ही पूजन भी सेवत
अन्तर ग्रहण करे पादोदक, मन आनन्दित भाव भक्ति से
सेवन-पाद साधना उत्तम, भावहिं मन में, तारे जग से
चरण बिना कछु देखत नाहीं, चरण हृदय रख, भाव भक्ति से
तीर्थ शिवोम् भक्त जो साचा, राखे माथा चरण नवाए
टूटे गर्व, होए प्रभु शरणी, करत ही जीवन भाव भक्ति से

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - दास्य

दास्य भाव है भाव समर्पण, गुरुदेव स्वामी को अपने
स्वामी धार, करे सब सेवा, भावहिं मन, स्वामी को अपने
कुछ भी अपना रखे नाहीं, जो कुछ भी, सब स्वामी का ही
मन तन धन इन्द्रिय सब अर्पण, सब ही देय स्वामी को अपने
दास्य भाव, जो भाव है मन का, नहीं दिखावा जग में केवल
आज्ञा पालन, अनथक सेवा, करत रहे स्वामी को अपने
सभी कर्म, कर्मों का फल भी, सब कुछ स्वामी का ही होवे
भक्त की तो बस केवल सेवा, बाकी सब स्वामी को अपने
तीर्थ शिवोम् धन्य वह सेवक, स्वामी देखे अन्तर अपने
वन्दन, भाव, सभी अन्तर में, अन्तर ही स्वामी को अपने

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - सख्य

सखा भाव है प्रेम सखा का, करो प्रभु से, भाव प्रभु से
मन तन मित्र-प्रभु के अर्पण, काम प्रभु का, भाव प्रभु से
करे वही जो प्रिय प्रभु को, तो ही भाव सखा हो विकसित
तभी सखा संतुष्ट तुम्हारा, प्रेम प्रभु से, भाव प्रभु से
प्रेम प्रभु से पैदा करना, बंधन-प्रीत में उस को लेना
सख्य भाव है होत तभी ही, नेह प्रभु से, भाव प्रभु से
होत प्रभु जब अन्तर सन्मुख, सखाभाव होता स्वाभावि
अपनापन और श्रद्धा तब ही, भक्ति कर लो, भाव प्रभु से
तीर्थ शिवोम् रहो आनन्दित, भाव प्रभु का मन में भर लो
मित्र भाव हो प्रभु के ताईं, सुख मन लाओ, भाव प्रभु से

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति-अर्चन

देव गुरु का करत है पूजन, भाव हृदय से, भाव भक्ति से
तन मन धन सब अर्पण कर के, करत विधि से, भाव भक्ति से
पूजा-अर्चा भाव हृदय का, भाव नहीं तो होत दिखावा
भाव ही जोड़े चरण हरि से, पूजा-अर्चा भाव भक्ति से
मानस अर्चा भाव ही केवल, पूजा सामग्री कुछ नाहीं
देव भी अन्तर हिरदय माहीं, धारण देवा, भाव भक्ति से
अर्चा जब है होत स्वाभाविक, उठत-बैठत होत है पूजा
लगा रहे मन पूजा में ही, सिमरन पूजा, भाव भक्ति से
तीर्थ शिवोम् जो पूजा साची, होत रहत है अपने आपुन
ता ही पूजा पार करावे, पार होत जन भाव भक्ति से

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - वन्दन

करे वन्दना सद्गुरुदेवा, भाव भक्ति से, प्रेम हृदय से
राम कृष्ण जो इष्ट देव हो, अंग-अंग से, प्रेम हृदय से
आठों अंग समर्पण कर दे, तन मन धन जो कुछ भी होवे
राखे सबहिं श्री चरणों में, जो कुछ अन्तर, प्रेम हृदय से
अहंकार गलित हो जावे, जब माथा चरणों के माहीं
गर्व हटे, मन निर्मल होवे, नाम हरि गुण, प्रेम हृदय से
अहंकार ही विघ्न है भारी, अहंकार रोके परमारथ
अहंकार ही जगत बना है, अहंकार तज, प्रेम हृदय से
तीर्थ शिवोम् करे जो नमना, छोटा होय, बड़प्पन पावे
काम क्रोध अभिमान तजे वह, मन आनन्दित, प्रेम हृदय से

राग केदार ताल त्रिताल

गीता श्लोक १८|१२

मित्र शत्रु को सम कर देखे, राग न राखे, द्वेष करे न
एक प्रभु ही जगत समाया, भाव यह मन सों दूर करे न
मान और अपमान को एको, जाने, समझे और पहचाने
सुखी दुखी न होवत कबहूं, कर्म करे या क्रुध करे न
सर्दी गर्मी द्वन्द्व जगत के, देवत दुख हैं जीव को भारी
भक्त सदा ही बना एकरस, कष्ट क्रुध संतप्त करे न
सुख दुख भी तो एक द्वन्द्व है, करत जीव विक्षिप्त सदा ही
चंचल करता, मन भरमाता, चैन कभी भी जीव करे न
तीर्थ शिवोम् भक्त प्रभु ऐसा, सुख दुख में जो डोलत नाहीं
सदा रहे वह शरण प्रभु ही, मन सों चरणन दूर करे न

राग गौड़ सारंग ताल भजनी ठेका

संतोष

धन्यवाद है धन्यवाद प्रभु, धन्यवाद है तेरा
क्या अपमान जगत ने कीना, धन्यवाद प्रभु तेरा
गर्व मिटाया, अहं गवाया, जो दुख तू ने बख्शा
गर्व ही शत्रु सब से भारी, धन्यवाद प्रभु तेरा
धन्य वह जन, जो कारण दुख हैं, पाप मेरे हर लीनो
निर्मल मेरा मनवा कीना, धन्यवाद प्रभु तेरा
मैं क्या जानूं लीला तेरी, क्या क्या खेल रचाया
दुख मो को, इक लीला तेरी, धन्यवाद प्रभु तेरा
तीर्थ शिवोम् धन्य गुरुदेवा, धन्य तुम्हारी मरजी
धन्य किया किरतारथ मोहे, धन्यवाद प्रभु तेरा

राग केदार ताल त्रिताल

गीता श्लोक १६|१२

नहीं तृष्णा मन कोई जा के, आशा जग से राखे नाहीं
मन संतोष सदा ही विकसित, मुंह किसी का भाखे नाहीं
बाहर भीतर रहे शुद्ध ही, मलिन विचार नहीं मन आवत
मन तन रहत पवित्र सदा ही, जो नहीं खाना, चाखे नाहीं
कर्म न डूबे, यही दक्षता, सहजे ही सम्पन्न करे वह
जग में रहे, जगत से न्यारा, जगत-भाव मन राखे नाहीं
उदासीन जग बना रहे जो, जग परवाह नहीं कुछ भी हो
मस्त रहे अपने ही मन में, भाव कहीं भी राखे नाहीं
त्याग कर्म, परिणाम हो कुछ भी, कर्मारम्भ करे सहजे ही
सर्वारम्भ कहाय त्यागी, फल-आशा मन राखे नाहीं
तीर्थ शिवोम् भक्त ऐसे भी, दूर सभी ही व्यथा हुई है
न चिन्ता, न शोक उसे कुछ, मन को जग में राखे नाहीं

राग केदार ताल त्रिताल

गीता श्लोक १७|१५

हर्षित होत नहीं मन कबहूं, चाहे लाभ कमावे कितना
न ही द्वेष करे काहू से, शत्रू होवे चाहे कितना
न ही शोक करे मन माहीं, अपमानित हो चाहे कितना
आशा मन में न कोई भी, कष्ट हो चाहे उस को कितना
शुभाशुभ की चिन्ता नाहीं, मन अतीव ही हर्षित उस का
शुभाशुभ अविवेक जीव का, भाव हो चाहे ऊंचा कितना
तीर्थ शिवोम् भक्त जो ऐसा, अति प्रिय वह प्रभु हृदय को
प्रेम करत उस से प्रभु कितना, ध्यान करत उस का प्रभु कितना

राग केदार ताल त्रिताल

गीता श्लोक १४/१२

रहे भक्त संतुष्ट सदा ही, सुख-दुख जो भी होवे उस को
विचलित कभी भी मन से नाहीं, कितना कष्ट भी होवे उस को
युक्त सदा हरि ध्यान रहे वह, लगा रहे जप तप ही में वह
कर्म-करत मन निग्रह राखे, कैसा भोग भी सन्मुख उस को
इन्द्रिन अपनी वश कर राखे, जान न देवे विषयन को वह
मन-वश कारण राम-दम का है, ले न जात जगत मन उस को
ढुलमुल मति नहीं है वा की, निश्चित बुद्धि, मन पर संयम
ऐसा भक्त प्रिय प्रभुवर को, करत दुखी न जग है उस को
तीर्थ शिवोम् समर्पण करता, मन, बुद्धि प्रभु-चरनन माहीं
अन्तर पावत कृष्ण हरि को, मिलत सभी सुख तत्क्षण उस को

राग केदार ताल त्रिताल

गीता श्लोक १५/१२

भक्त रहे जो त्यागी ऐसा, जग न करे प्रभावित मन को
न उद्विग्न करे वह जगहिं, क्षोभ नहीं कोई भी मन को
ऐसा उस का चित्त बना है, जग प्रभाव को ग्रहण करे न
ऐसा निर्मल है व्यवहारा, दुख न देत किसी भी मन को
जब वह देखत किसी को उन्नत, तो अमर्ष न होवत मनहिं
अपने सुख से हर्ष होत न, राखत सदा ही सम कर मन को
भय न होवत मन में कबहूं, भय का कोई कारण नाहीं
भय होवत आसक्त पुरुष को, रखत सदा ही वश में मन को
तीर्थ शिवोम् प्रणाम करूं हूं, ऐसे जन को, भक्त हरि को
वन्दनीय वह भक्त सदा ही, चरनन राखे अपने मन को

कीर्तन

राग दुर्गा ताल रूपक

आए हैं तेरी शरण में, राख लो मेरे प्रभु
कोई जग की वासना न, कामना तेरी प्रभु ॥
हम दुखी जग में घने हैं, पर जगत चाहें नहीं
लो छुड़ा हम को जगत से, मांगना यह है प्रभु ॥
तू दयालु पतित-पावन, काम यह ही है तेरा
कामना उद्धार की मन, कहना तुम से है प्रभु ॥
हम सभी बालक हैं तेरे, माता, गुरु, स्वामी तुम्हीं
शरण में आए तिहारी, पार भी कर, हे प्रभु ॥
तीर्थ है शिव ओम् मालिक, हम बुलाएं हैं तुम्हें
आ भी जाओ, टेर सुन लो, है विनय यह हे प्रभु ॥

राग केदार ताल त्रिताल
गीता श्लोक १३/१२

हरि-भगत का प्रथम यह लक्षण, वैर-भाव न मन कोऊ से
सर्व-जगत में मित्र भाव हो, द्वेष-भाव न मन कोऊ से
करुणा राखे सब के ताईं, शत्रु, मित्र, पराया, अपना
जो भी कोई, जैसा कोई, घृणा-भाव न मन कोऊ से
ममता-रहित बना हो मनवा, कर्म सभी कर्तव्य भाव से
प्रभु की सेवा, कर्म प्रभु का, अपना-भाव न मन कोऊ से
परिपक्व हो निरहंकारा, खड़ा कभी अभिमान न अन्दर
नम्र, निरीह, सदा जग-सेवक, अहं-भाव न मन कोऊ से
तीर्थ शिवोम् भगत जो साचा, सुख-दुख सदा ही सम कर माने
क्षमाशील हो, करुणा-सागर, कड़क भाव न मन कोऊ से

राग भैरवी   ताल केहरवा

कीर्तन

राम राम जप, राम राम भज, एक राम ही तेरा
बाकी सगला जगत पसारा, एक वही बस तेरा
काहे उलझ रहा जग माहीं, माया सकल व्यौहारा
छोड़ दे सारे झंझट झाँटे, छोड़ दे मेरा तेरा
जग में रह कर जग से न्यारा, ये ही मारग सीधा
जग उलझा तो जग ने पकड़ा, उलझा मेरा तेरा
संत जनां समझाए थाके, पर तू समझ न पाया
अब लौं सूझ पड़ी न तोहे, मन भरमाए तेरा
तीर्थ शिवोम् समझ मन पापी, क्यों तू फिरत अजाना
राम भजन ही है हित तेरा, छूटे मेरा तेरा

राग जोग कंस   ताल झुमाली

भक्ति

धन्य धन्य प्रभु सेवक तेरे
तिन का अपना नाहीं कुछ भी, जो कुछ भी सब अर्पण तेरे
जागत खावत संग तिहारी, सिमरन नाम निरन्तर
राम दर्स ही आसा मन में, रहते शरण सदा ही तेरे
चाहे बोलें वरतें जग में, चाहे करत हास परिहासा
लगी रहे नित ही लिव तो सों, हरदम रहत याद में तेरे
प्यारा तिन का राम है तू ही, सारे जग में राम ही देखें
कण कण माहीं बसता प्रीतम, न भावे कुछ भी बिन तेरे
तीर्थ शिवोम् दास जो तेरे, तेरा रूप ही दूजा उन का
नाहीं भिन्न कभी भी तो सों, जुड़े सदा ही साथे तेरे

राग आसावरी ताल त्रिताल

भक्ति

जलन हृदय की कैसे जाय
काहे भटक रह्या तू मनवा, राम-भजन ही एक उपाय
जग देखा, जग लोगन देखे, मात, पिता, सुत, दारा
स्वारथ में सब रहे नचावत, काम न कोई आय
जग न सकत बुझाय अगनी, अगन यह बिरह पी की
पी ही आय बुझाए या को, नहीं अधिक लपटाय
पीव मिले न जग में कबहूं, अन्तर माहीं बिराजे
राम भजन मन अन्दर जाए, बिरह अगन बुझाय
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, भजन न होए मो सों
तेरी कृपा, भजन कर पाऊं, अन्तर जलन मिटाय

राग भीमपलासी ताल केहरवा

कीर्तन

किरपा किरपा राधे राधे
शरण तिहारी हूं हौं आयो, अन्तर श्रद्धा भाव अगाधे
तुम अम्बा भक्तन हितकारी, दीनन एक तिहारी आसा
हौं भी खड़ा दुआरे तुमरे, दीनन करत कृपा, आराधे
जा पर नज़र तुम्हारी मैया, ता का बाल न बांका जग में
द्वारे अन्तर, खुलें किवाड़े, जावत सगला ही दुख-बाधे
मो पर कृपा करो जगजननी, कृष्णहिं दर्स कराओ मोहे
एक ही आसा, एक पिपासा, और न निमिष एक न आधे
तीर्थ शिवोम् पड़ा हूं द्वारे, मन में आस तुम्हीं सों लागी
राधा राधा कूक लगी मन, ध्यान रहा तुम ही आराधे

राग खमाज ताल- उद्धा

आनन्द

काह्ना! मुरली मधुर बजाई
गोपिन सुन सुन भयीं बावरी, मधुबन रस छाई
गोपिन नाचत, ग्वाले नाचत, नाचत ब्रज सारा ही
गऊएं नाचत, बछड़े नाचत, अमीं रस बरसाई
तान बजावत कोमल सुन्दर, सुखी सभी नर-नारी
तान सुनत मन खिंचता जाय, मन सुख उपजाई
तीर्थ शिवो सुनाओ शामा, मुरली अन्तर माहीं
मन की दुविधा दूर हरे सब, अनंद अनंद जाई

राग आसा ताल धुमाली

भक्ति

प्रभु बिराजे अन्तर माहीं, मनवा मन्दिर मन्दिर डोले
कण-कण में, हर जीव के अन्दर फिर भी गांठ नहीं मन खोले
भटकत फिरता, मारा-मारा, तीरथ द्वारे माथा रगड़े
जो मन मोड़े अन्दर माहीं, अन्दर परगट वह ही बोले
क्यों न झांकत अन्तर अपने, इन्द्रिन क्यों न जग से मोड़े
राम पड़े न ढूंडन खोजन, वह तो हर दम साथ ही हो ले
मन अपना जो निर्मल नाहीं, तो प्रभु दीखे कैसे अन्दर
मन मलीन तू आप ही कीना, परे हटा यादों के चोले
तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, हरि तो हर पल साथ ही तेरे
तू ही देख रह्या न उस को, अंग अंग वह खाय झोले

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - आत्म निवेदन

मैं विलीन हो आत्म तत्त्व में, आत्म-निवेदन यही कहाता
पाँचों भूत मिले भूतों में, आत्म तत्त्व निज-रूप समाता
जब तक मैं है, माया तब तक, जीव रहा मैं मैं ही करता
हट आवरण, गई सब माया, मैं भी कहीं नहीं बच पाता
तोड़ो माया का यह परदा, मैं विलीन, आतम बच जाए
यही समर्पण प्रभु कहा है, जीव जगत विश्राम है पाता
यह भक्ति ऊँची है सब से, यही भक्त का परम लक्ष्य है
यही हराए भव का बन्धन, जीव नहीं फिर जग में आता
तीर्थ शिवोम् सुनो हे भक्तो, नवधा भक्ति, मारग प्रभु का
आश्रय करत जो इस भक्ति का, छूट सदा यम का फंद जाता

राग मालगुंजी ताल खेमटा

माया

माया एक जगत भरमावे, माया एक राम मिलवावे
माया एक काज दो करती, वही फसावे, मुक्त करावे
जो माया आधीन बना है, उस को रही जगत भरमावत
जो इस के काबू न आवे, उस को तो फिर राम मिलावे
पहले ठगती, नाच नचाती, भान्ति भान्ति से मन भरमाती
जो उस में उलझत है नाहीं, उस को यही मुक्त करवावे
जगत रूप धार, मन भरमावे, शक्ति रूप धर जग बिनसावे
मन मलीन को शुद्ध बनावे, जगत बनावे, जगत हटावे
तीर्थ शिवोम् भेद माया का, जान न कोई उस को पाया
माया जाने, राम को पाया, जग में लावे, कृपा करावे

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - श्रवण

कथा-श्रवण सतसंग कीरतन, यह ही लक्षण श्रवण भक्ति के
सोचन समझन चिन्तन मनना, संग ही रहत, श्रवण भक्ति के
ब्रह्म स्वरूप मंत्र-उपदेशा, श्रवण करे जो श्री गुरु मुख से
श्रवण के लक्षण पात सभी ही, जात है मारग श्रवण भक्ति के
अन्तर्नाद श्रवण भी भक्ति, अन्तर्क्रियावलोकन भक्ति
अन्तर्बाहर श्रवण करे जो, जानत मर्म श्रवण भक्ति के
सगुण-प्रभु गुण सुनन-विचारन, निर्गुण ब्रह्म निरूपण करता
श्रवण करे और मनन करे जो, भेद वह पावत श्रवण भक्ति के
तीर्थ शिवोम् जो त्यागे नाना, खोजत प्रभुहिं अन्तर्बाहर
श्रवणहिं सतसंगत गुरुवाणी, वह तर जावत श्रवण भक्ति से

राग केदार ताल केहरवा

भक्ति - कीर्तन

नाम-हरि गुणगान कीर्तन, भक्त करे जो भाव भक्ति से
रंग जावे वह रंग प्रभु के, मस्त रहे वह भाव भक्ति से
मन में धारण रूप हरि का, हिरदय परगट प्रेम प्रभु का
रोम रोम रस घोल हरि का, अनुप्राणित वह भाव भक्ति से
अन्तर नाम हरि का होवत, अन्तर नाद प्रकट होत मन
करत श्रवण अन्तर गुणगाना, इक-चित हो भाव भक्ति से
अन्तर्बाहर नाम हरि ही, कहत सुनत आनन्द मनावत
कीर्तन कहा उसे ही जाय, छका रहे जो भाव भक्ति से
तीर्थ शिवोम् करे गुणगायन, जीवन ता का मधुर मनोहर
हरदम झूमत, हरदम गावत, मगन आनन्दित भाव भक्ति से

राग खमाज ताल केहरवा

ग़ज़ल

क्या सितम तुम हो जलाते दिल ही मेरा
यह तेरा काम है, दुखाना दिल ही मेरा

मैं यह समझी कि तुम हो आशना मुझ से
मगर तुम बेवफा निकले, न जाना दिल ही मेरा

तड़पती मैं रहूं तुम, चैन से बैठे मज़ा लेते
न समझा मेरी उलफ़त को, पछाना दिल ही मेरा

प्रभु मेरे! तेरी मरजी, मैं तेरी हो चुकी हूं
अगर समझो मुझे काबिल, चुराना दिल ही मेरा

मेरा जग में बिना तेरे, कोई भी है नहीं शिवोम्
जो चाहो दिल में अपने से, मिलाना दिल ही मेरा

राग गुणकरी ताल केहरवा

ग़ज़ल

मैं तो अब घबरा गया हूं
सहते सहते झंझटों, मन में अब थर्रा गया हूं

जगत ने मूरख है समझा, लाभ खींचा खूब मुझ से
मैं रहा लुटता ही ऐसे, मन में अब उकता गया हूं

जग बनाए मुंह है मुझ को, जग ने छीना चैन मेरा
समझ न कि क्या करूं मैं, मन में अब भरमा गया हूं

लुटते लुटते, पिटते पिटते, होश है कुछ आ गई अब
आ गया झांसे में क्यों मैं, मन में अब शरमा गया हूं

कर गिला न तू किसी से, दुनिया ऐसी है शिवोम्
है लिया समझाय मन को, मन में अब ठहरा गया हूं

राग बिलावल ताल धुमाली

गज़ल

तुम ने जाना था तो जाते, दिल मेरा क्यों ले गए
काम क्या ये ही तुम्हे है, चैन तुम क्यों ले गए
एक ही दिल पास मेरे, तुम चुरा कर ले गए
क्या करूं अब दिल न मेरे, बिन बताये ले गए
दिल न ही ऐसी है कोई, दूसरा आऊं मैं ले
तुम तो निकले चोर पूरे, चुपके चुपके ले गए
क्या करूं अब दिल बिना मैं, सूझता नाहीं शिवोम्
तुम तो लौटाओगे नाहीं, ले गए सो ले गए

राग जोग-कंस ताल रूपक

गज़ल

जा रहे हो छोड़ कर, देते तो जाओ दिल मेरा
बेवफाई कर के जाओ, और रख लो दिल मेरा
दिल मेरा तेरे न काबिल, है वफा उस में भरी
बेवफा से मेल नाहीं, पुर-वफा है दिल मेरा
दिल तो जिस का है उसी के पास ही अच्छा लगे
होते गर तुम बावफा तो, पास रखते दिल मेरा
अब तो मैं हूं, और दिल है, और तेरी याद है
अलविदा शिव ओम् जाओ, पर न छूओ दिल मेरा

तू रूठा राम मन ले रे, तेरी बिगड़ी बात बन जायगी
तू बार बार गुण गा ले रे, तेरी नैया पार हो जायगी

राग बंगाल भैरव ताल दादरा

कीर्तन

रमैया हे रमैया
हम पड़े जगत के मांहीं, धाई आकाश मढ़ैया —

आओ उतरो साथ हमारे, हे हमरे रखवैया —

तू दाता दुखहारी है, हम तेरा नाम जपैया —

कष्ट हरो प्रभु आए हमरे, हे दुख कष्ट हरैया —

हम हैं बीच भंवर में अटके, तू है पार करैया —

तीर्थ शिवोम् चरणीं तुमरे, भक्तन हृदय चुरैया —

राग केदार ताल दादरा

ग़ज़ल

सोचा भी न था एक दिन ऐसा भी आएगा
घर से निकल, बे-घर रहूं, दर दर मुझे भटकाएगा
आशियां तो जल गया, आकाश ही उड़ता रहूं
बेखबर कि बाखबर, कुछ भी समझ न पाएगा
अब रहूं ढूंढूं ठिकाना, अच्छा रहे या हो बुरा
कैसा भी चल जाय मुझ को, रह वहीं पर जाएगा
सब्र कर अब बैठ जाओ, जैसा भी मिलता शिवोम्
है सभी किस्मत तुम्हारी, गुज़र कर ही जाएगा

राग गारा   ताल भजनी ठेका

ग़ज़ल

मेरा अब क्या होगा
है अब बेल बीतने वाली, कहां किधर क्या डेरा होगा
जीवन भर तो समझ न पाया, जीवन इक जाने वाला
अब हूं सोचत घबरावत हूं, आगे मेरे लिखा क्या होगा
काम न कोई मेरा पूरा, पूरे काम न हुए किसी के
रहत ही सोचत मनवा हरदम, आगे आगे अब क्या होगा
अब तो बेल बीत चली है, अब सोचे से होत भला क्या
अब तो चलना ही इक बाकी, और ठिकाना अब क्या होगा
तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, अब यह सोच वृथा है तेरी
जो होना था होय चुका है, होना होगा, सांई होगा

राग चारुकेशी   ताल धुमाली

सावधान

सोच रहा तू क्या रे भाई
जो आया सो गया एक दिन, बैठ रहा कोई न भाई
जब लौं बेला कर्म कमा ले, अपना लेखा आप बना ले
जो कुछ अभी तू कर ले, गया समय फिर तू पछताई
गया समय तो निकल ही जाय, लौट कभी भी न पाए
पल पल कर घटता ही जाय, चाहे कितना उसे बुलाई
राम भजन का लेय सहारा, राम भजन कितनों को तारा
राम भजन जग, आर से पारा, राम भजन भव देत लंघाई
तीर्थ शिवोम् रे भोले मनवा, काहे गहरी सोच पड़ा तू
सोच सोच कर उमर विहाई, अब लौं सोचत जात तू जाई

राग मधुवन्ती ताल दीपचंदी

पश्चाताप

कैसा मनवा हो गया मेरा
किसी बात में मन नहीं लागत, न कर सकत ध्यान मैं तेरा
उखड़ा-उखड़ा, रूखा-रूखा, रस कोई भी नाहीं या में
बात करत मैं भूल ही जाऊं, जैसे विपदा किसी ने घेरा
भजन नहीं, सिमरन भी नाहीं, पूजा-पाठ करत ही नाहीं
ध्यान करूं तो ध्यान जमे न, कुछ कुछ रहत है करत बखेड़ा
कैसे यह उपराम हुआ मन, क्यों आया प्रमाद यह मन में
कैसे दूर यह संकट मेरा, मैं हूं पड़ा गहन अंधेरा
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, मन मेरे को क्या कर दीना
कैसा था, मैं हुई गया कैसा, न मन मेरा, न मन तेरा

राग मालकौंस ताल रूपक

गज़ल

मन मेरे यह आ रही है
छोड़ भग जाऊं कहीं पर, याद तेरी आ रही है
याद भी करने न देवे, यह जगत कैसा बनाया
याद में भी विघ्न डाले, बात खाय जा रही है
अब तो मन में एक धुन है, ध्यान तेरे ही रहूं मैं
न कोई बोले बुलाए, बात जमती जा रही है
हो कुटी वन में कहीं पर, मैं पड़ा इकदम अकेला
डूब तुझ में ही रहूं मैं, उभर कर मन आ रही है
मैं रहूं और तू रहे, दूजा न कोई हो शिवोम्
प्रेम का नाता बना हो, यह ही मन को भा रही है

राग विलासखानी तोड़ी ताल कव्वाली ठेका

कीर्तन

हम आए पाने कृपा, दुआरे तेरे पर ।
हम हैं जग अंध्यारे उलझे, मारग सूझत न कोई भी ।
हैं रहे पुकारत तोहे, दुआरे तेरे पर ॥
जगत प्रलोभन बहु सतावत, पग पग नूतन दृश्य दिखावत
हम हुए अधीर घनेरे, दुआरे तेरे पर ॥
मन पर संयम अपना नाहीं, रहत ही धावत जगत विषय में
हम मांगत किरपा तेरी, दुआरे तेरे पर ॥
शरण तिहारी पकड़ी हम ने, छोड़ न जाएं और कहीं भी
हम याचक हैं प्रभु तेरे, दुआरे तेरे पर ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी सुन लो, अर्ज़ हमारी, टेर हमारी
हम छोड़ें चरण न तेरे, दुआरे तेरे पर

राग रागेश्री ताल रूपक

ग़ज़ल

जगत में हर वक्त ही, भटका करे क्यों
आरज़ूओं में ही तू, अटका करे क्यों
. जगत ही दिल में तेरे, अच्छा लगे क्यों
देखता जो कुछ भी तू, झटका करे क्यों
जगत की हर वक्त तू, सोचे भला क्यों
जगत ही हिलता फिरे, मटका करे क्यों
जो हिले पत्ता तो तू, डरता भला क्यों
सहमा सहमा ही रहे, खटका करे क्यों
चैन से शिव ओम् तू रहता नहीं क्यों
राम का ही नाम न, जपता रहे क्यों

राग काफी   ताल त्रिताल

अद्वैत

एक ही दीपक घट-घट माहीं ।
करे प्रकाशित सारे जग को, सर्व-विआपक हर घर माहीं ॥
वह दीपक संसार बना है, वह सारे ही खेल करत है।
वही बना है अत्याचारी, पूजा-पाठ नदी-तट माहीं ॥
वही दिखाए, दिखे वही है, उस ही की यह लीला सारी।
वह मारे, सहन करे वह, वही प्रवाहित हो जल माहीं ॥
कोई संत सुजान पिआरा, जान सकत है, देख सकत है।
जग तो अंधा, तम में डूबा, उलझ रहा बिरथा जग माहीं ॥
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मोरे, ऐसी दृष्टि किरपा मो पर।
तुझ को देखूं, तुझ को जानूं, अभी तलक मिथ्या जग माहीं ॥

राग देसकार   ताल रूपक

ग़ज़ल

तू समझता अपने को है अकलमन्द
समझ तेरी कुछ भी नाहीं, पर समझता हुनरमन्द
देखे अन्दर झांक कर तो, तू है नीचे आ गया
जो कभी थी सारे जग की, अब हुआ तू अकलबन्द
तू बढ़ाया मैं को अपने, और रहा उछले फिरे
तू गिरा आ कर कहां पर, अब बने क्यों अकलमन्द
अकल तेरी है नहीं यह, यह खुदा की है शिवोम्
अक्ल पर क्यों नाज़ करता, पर नहीं तू अकलमन्द

राग बिलावल ताल त्रिताल

प्रेम

राम बिना नहीं जीवन मेरा
राम अधारे श्वास चलत है, राम नहीं, है श्वास है मेरा
इन्द्रिन राम करे संचालित, मन संकल्प करे ताही से
भाव हृदय में वही उठावे, राम नहीं, है भाव न मेरा
राम खिलावे, राम खेलावे, ऊपर नीचे करत रहावे
राम चलावे, जग यह चाले, राम नहीं, है जगत न मेरा
सिमरन राम ही में मन लागे, सिमरन भाग हमारे जागे
सिमरन मन कलेश सब भागे, राम नहीं, है चाव न मेरा
तीर्थ शिवोम् राम ही जीवन, राम नहीं तो जीवन कैसा
रामहिं चरणों नेह लगा है, राम नहीं, तो नेह न मेरा

राग मालकौंस ताल दादरा

ग़ज़ल

कैसे पहुंचेंगे तुम तक वहां
रास्ता तो बियाबान है, तेज़ चलती हैं लूएं वहां
पानी पीने का है ही नहीं, आएं भी हम तो आएं कहां
फैला सुनसान चारों तरफ, न बताने ही वाला यहां
दीखते हैं तो हैवान ही, आएं भी हम तो आएं कहां
तू है बैठा भी जा के कहां, पहुंचना कैसा दुश्वार है
चलते पाओं न आगे को हैं, आएं भी हम तो आएं कहां
तू ही आ मिल हमें आ यहां, पहुंच पाएंगे न हम वहां
भटकते रह ही जाएं यहां, आएं भी हम तो आएं कहां
बैठे शिव ओम् हम हैं यहां, दर पर तेरे बिछाए यहां
रहम कर मैं हूं बन्दा तेरा, आएं भी हम तो आएं कहां

राग भैरवी ताल धुमाली

तड़प

मैं तो आया था दुआरे, मन में आशाएं लिए
पर दुआरा बन्द पाया, आया था मैं किस लिए
मैं रहा आवाज़ करता, खटखटाता बार बार
पर सुनी मेरी न कोई, छटपटाता किस लिए
तुम तो निर्मोही ऐसे, तरस कुछ भी न तुम्हे
कौन है, क्योंकर है आया, है बुलाता किस लिए
खोलना तो दूर है, देखा तलक न झांक कर
सोचता हूं क्यों मैं आया, दुख यह पाया किस लिए
अब चलो घर आपने, खुलने का दर नाहीं शिवओम
उस के हिरदय में है पत्थर, तड़पड़ाता किस लिए

राग अहीर भैरव ताल दादरा

ग़ज़ल

जब तेरा जलवा हुआ, दिल थाम कर मैं रह गया
क्या कहूं मुझ को हुआ क्या, हो के पत्थर रह गया
हुस्न तेरा दिलरुबाई, कौन ज़ालिम हो न घायल
मुझ पर जो हमला हुआ तो, कत्ल हो कर रह गया
या खुदा क्या चीज़ है, नाचीज़ न समझे उसे
नज़र जिस से भी मिलाई, ढेर हो कर रह गया
रहम तेरा मुझ पर हो, मालिक मेरे, आका मेरे
शिव ओम पर ऐसा असर, तेरा ही हो कर रह गया

राग शुद्ध कल्याण ताल झुमाली

गज़ल

सोचा था कर जाऊं कुछ, दुनिया में आय कर
बेकार बीती ज़िंदगी, कुछ भी न आय कर
साधन-भजन हुआ नहीं, सेवा भी की नहीं
भटकन को छोड़ कर के मैं, कुछ भी न आय कर
उलझा गया ही मैं था, लड़ता ही मैं रहा
हासिल न कर सका कुछ, कुछ भी न आय कर
जैसा हो हुक्म तेरा, मंजूर है सभी कुछ
बन्दा न कर सके कुछ, कुछ भी न आय कर
शिव ओम नहीं ताकत, न सोच पास में ही
करना तो चाहे कुछ कुछ, कुछ भी न आय कर

राग भीमपलास ताल रूपक

गज़ल

ज़िन्दगी तो कट गई लड़ते झगड़ते
पर मेला दिल सुख नहीं, आहें ही भरते
रोज़ झगड़े, रोज़ टंटे, रोज़ ही उठता बवाल
रोज़ ही मैं जी उठा, मरते ही मरते
न इबादित दिल लगा ही, उलझने उलझने किया
पा सका मैं कुछ नहीं, करते ही करते
जब किया करने को कुछ भी, सामने बीसों सवाल
कर सका मैं कुछ नहीं, डरते ही डरते
कट गई शिव ओम अब तो, जो हुआ अच्छा हुआ
डूबने से मैं बचा, मरते ही मरते

राग बिहाग ताल रूपक

ग़ज़ल

घर किया था मैं ने अपना, घर मेरा घर न रहा
दिल दिया जिस दर पर मैं ने, दर मेरा दर न रहा
आरज़ूएं, हसरतें, सब उस जगह मरकूज़ थीं
या खुदा यह क्या किया, दीया जला पर न रहा
थीं तमन्नाएं कभी तो, रक्स करतीं आवजा
वह बना वीरान है अब, वह चमन पर न रहा
दिल के मयखाने में अब, साकी-ओ-पैमाना नहीं
दिल का दर तो बन्द है अब, वह नशा पर न रहा
क्या कहें शिव ओम अब, कुदरत के सारे खेल हैं
जिस को चाहा रख दिया दिल, कहदो पर न रहा

राग देसी ताल धुमाली

अद्वैत

राम रमैया, राम संग आयो
राम बुलावत, राम ही आवत, राम ही संग बैठ कर खायो
राम ही करत तपस्या वन में, राम ही भोगे भोग नगर में
राम बना माधव तीरथ में, राम ही माथा सीस नवायो
रण में राम ही दोनों पासे, वह मारे, वह मर भी जाए
राम दिखाए, देखनहारा, सकल पदारथ वह बन आयो
राम सिवा न कुछ भी जग में, जग भी वही, बनावनहारा
रावण राम, राम हनुमाना, सेवक बन, सेवा करवायो
तीर्थ शिवोम राम जी मोरे, तुम ने कीना सकल पसारा
अपने मन से, अपने अन्दर, अन्दर ही फिर लियो समायो

राग मिश्र शिवरंजनी ताल दादरा

गज़ल

दिल शाद है नौशाद है होता कभी नाशाद है
होती कभी आबाद न, होती कभी आबाद है
दुनिया बदलती हर पलक, रहती कभी यकसां नहीं
इनसान वह आबाद जो, होता कभी बरबाद है
जग में प्रभु ही एक जो, न रूप गुण बदले कभी
जैसा शुरू में अब भी वह, रहता सदा यकसार है
उस को जो पहचाने नहीं, इंसां नहीं हैवान है
उस का भरोसा कुछ नहीं, इंसान वह बदकार है
शिव ओम् दिल में याद रख, वह एक मददगार है
बाकी है दुनिया स्वारथी, स्वारथ ही उस का यार है

राग भूपाली ताल केहरवा

गज़ल

जगत को देखा जो मैं ने, देख कर घबरा गया
हरकतें देखी जगत की, देख कर शरमा गया
न किसी को पूछे कोई, सब लगे अपने में ही
कैसा स्वारथ जगत में है, देख कर लड़खा गया
न शरम कोई हया है, मन के मौजी हो रहे
जिस को देखो वह अकड़ता, देख कर उकता गया
हे प्रभु! कैसा ज़माना, यह बनाया तू ने है
लीला जो देखी तुम्हारी, देख कर सहमा गया
तीर्थ है शिव ओम् प्रभु जी, ले बचा दुनिया से तू
देख कर दुनिया की हालत, मैं तो हूं हड़बा गया

राग भैरवी ताल रूपक

पश्चाताप

निकल जब गाड़ी गई तो मैं टिकेट लेने चला
बंद खिड़की सामने थी, पांव उलटे मैं चला
है यही दस्तूर जग का, वक्त जब, करना नहीं
जब जवानी, दिल में ताकत, तरफे-दुनिया मैं चला
होश आई न ज़रा भी, रूह की, न राम की
अब जो गुज़री ज़िन्दगी, करने इबादत मैं चला
अब करेगा क्या तू बन्दे, वक्त ही जब पास न
वक्त जाने का है अब तो, छोड़ दुनिया मैं चला
तीर्थ ऐ शिव ओम् अब तो, तू रहा पछताए क्यों
हो गया जो था कि होना, हाथ मलते मैं चला

राग बागेश्वरी ताल केहरवा

ग़ज़ल

डगर चलते पांव मेरे, लड़खड़ाए, गिर गया
संभल भी पाया न मैं था, कि दोबारा गिर गया
सामने दीखे थी मंज़िल, पहुंचा अब पहुंचा अभी
पर नज़र मेरी जो घूमी, मुंह ही पीछे मुड़ गया
है प्रभु तेरे महल को, झांक न पाया कोई
आगे बढ़ने को हुआ जो, इल्लतों में घिर गया
तीर्थ है शिव ओम् अब तो, कोई भी चारा नहीं
अब किसी को क्या बताऊं, ऊंचा उभरा, गिर गया

राग मधुकंस ताल रूपक

गज़ल

दुनिया से अब मन उखड़ता जाय है
अब प्रभु के साथ जुड़ता जाय है
मन की उलझन अब है कड़ी हो रही
प्रेम का अब भाव बढ़ता जाय है
वासना थी जो मेरे मन छा रही
धीरे- धीरे अब वह घटती जाय है
दुनिया का भय, छूटता है जा रहा
अब तो वह निर्भय ही बनता जाय है
यह कृपा तेरी प्रभु ही है शिवोम्
साथ तेरा मुझ को मिलता जाय है

राग भैरवी ताल रूपक

गज़ल

प्रेम छाता मन मेरे में क्यों नहीं
दुनिया जाती मन मेरे से क्यों नहीं
वासना ही वासना छाई रहे
वासना यह दूर जाती क्यों नहीं
डूबता ही जा रहा दुनिया में मैं
उभरता गहरे से ऊपर क्यों नहीं
अब सहा जाय न मुझ से और है
बरसती किरपा है मुझ पर क्यों नहीं
हे प्रभु! तू कर कृपा मुझ पर शिवोम्
भाग्य मेरा अब भी जगता क्यों नहीं

राग कौसी कान्हड़ा ताल धुमाली

गज़ल

क्रोध के मारे मैं पागल हो गया
क्रोध ने चौपट किया सब, मैं हूं ज़ालिम हो गया
क्रोध जब आता तो बुद्धि, शिथिल हो जाती तभी
इन्द्रियों पर बस न रहता, कुछ का कुछ मैं हो गया
कांपती तब देह है, आंखें भी होती लाल हैं
सूझता न क्या है करना, बेहया मैं हो गया
हे प्रभु मुझ को बचाओ, क्रोध है पीछे पड़ा
आ ही जाता वह कहीं से, मैं फंसा ही हो गया
क्रोध का मैं क्या करूं, कुछ समझ न आती शिवोम्
क्रोध है कि आ ही धमके, मैं निकम्मा हो गया

राग बिलावल ताल दादरा

गज़ल

चल हट परे, जा भाग भी, तुम को शरम आती नहीं
निर्लज्ज तू है वासना, क्या खौफ कुछ खाती नहीं
रहती तू हर इक देश में, न काल की सीमा तुझे
नंगा करे है नाच तू, कुछ लाज भी आती नहीं
कितना भी काटो जलाओ, तू कभी मरती नहीं
अमर है तू, अन्त नांहीं, मन छोड़ कर जाती नहीं
मैं तो हूं उकता गया, हे वासना तेरे से मैं
मुझ पर कर किरपा चली जा, कुछ रहम मन लाती नहीं
करते भी है कुछ साधना, अब मन है यह चाहता शिवोम्
तू तो रहती जगत में ही, तू राम घर जाती नहीं

राग दरबारी ताल धुमाली

गज़ल

अब कहां जाना
छोड़ना दुनिया तो है ही, अब कहां जाना
जब तक रहे जगत में, मौज ही करते रहे
अब तो दुनिया जाय छूटी, अब कहां जाना

सब अंधेरा छा रहा है, कुछ दिखाई देय न
यह पड़ेगी छोड़ना ही, अब कहां जाना
सामान भी कुछ साथ न, नाही तो धन भी पास है
क्या करें गे लम्बा रस्ता, अब कहां जाना

अब तो चल शिवोम् तू, जो होगा देखा जायगा
पर पता कुछ भी नहीं है, अब कहां जाना

राग वृन्दावनी सारंग ताल त्रिताल

प्रेम

धुन मधुर बजाई तू ने
मन हर लीनो गोपिन ग्वालिन, कैसी रास रचाई तू ने
ढांक छिपा के राखें गोपिन, फिर भी ढूंढ तू लेता
आंख चुरा कर, हाथ बढ़ा कर, माखन लियो चुराई तू ने

दौड़ लगावे, वृक्ष चढ़ावे, जमना तीरे शोर मचावे
भान्ति भान्ति करतब दिखलावे, गोधन खेल खिलाई तू ने
कंस को मार गिराया तू ने, वध चाणूर कराया तू ने
पर्वत लिया उठाया तू ने, लीला अजब दिखाई तू ने

तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हाई, धुन तेरी पर वारी जाऊं
धुन उपजाए, धुन सिमराए, आवागमन चलाई तू ने

राग यमन ताल रूपक

ग़ज़ल

जब जनाज़ा अपना देखा, रोने को दिल आ गया
इस लिए करता तरद्दुद, दिल में ये ही आ गया
सामने है जिस्म मेरा, न कोई हरकत करे
क्या था उस में जो गया है, जिस्म बोझा हो गया
ज़िंदगी भर की महब्बत, जिस्म से बे-इन्तिहा
हो गया है खत्म यह अब, दिल मेरा है भर गया
खेल अब यह खत्म है, जैसा भी गुज़रा है शिवोम्
अब तो रोना रह गया है, सब नज़ारा हो गया

राग तोड़ी ताल दीपचन्दी

ग़ज़ल

जनाज़ा मेरा ले कर, तुम कहां को जा रहे हो
देख लेने दो मुझे कुछ, जुल्म क्यों फरमा रहे हो
देखने को फिर मिले न, फिर तो आतिश व खाक है
लौट कर, फिर यह न आए, खत्म करने जा रहे हो
मैं ने की इस से महब्बत, ज़िंदगी भर मैं फिदा
छीन न ले जाओ मुझ से, ऐसे कैसे जा रहे हो
यह यहीं रखा रहे, और देखता हरदम शिवोम्
अब सकूं कर एक ये ही, छीन कर के जा रहे हो

प्रभु-चरण, सम-दृष्टि राखे, गुण-अवगुण में भेद न कोई
जा मन ऐसा निर्मल उज्जल, ता मन होवे खेद न कोई ॥

राग धनाश्री ताल रूपक

ग़ज़ल

दिल मेरा जो आ गया, तो मैं फिदा ही हो गया
जब मिला मुझ को न कुछ भी, तो गदा ही हो गया
कैसी यह तेरी अदालत, कैसे तेरे फैसले
जब पकड़ में आ गया तो, मैं खताबर हो गया
याद तुझ को ही करूं, तेरे ख्यालों ही रहूं
आप ने फरमा दिया मैं, बेतसब्बुर हो गया
हे प्रभु! अब याद तुझ को, न करूंगा मैं शिवोम
तू तो जो चाहे करे, मैं इक किनारे हो गया

राग मिश्रखमाज ताल खेमटा

आनन्द

प्रेम बजरिया में घुंघरू बाजे
लखि लखि सुनि सुनि मगन हुई मैं, आनन्द रहियो समाया आजे
प्रेम बजरिया में प्रीतम प्यारा, लटक मटक कर नाचे गाए
ममवा खोये कहां गयो है, सुध न रही, मोर मन आजे
प्रेम का नाटक, प्रेम कथानक, प्रेम का ही सब रंग रूप है
मैं भी रंगी प्रेम के माहीं, प्रेम प्रकट भयो मन में आजे
प्रेमी रहा बुलावत मोहे, हौं तो गड़ गई लाज की मारी
नशा प्रेम का दोन तरफ है, अवसर मिलन उपस्थित आजे
तीर्थ शिवोम हे प्रीतम प्रभु जी, मैं तो हो गई आज से तेरी
छोड़ जगत मेरा तेरा सब, संग समाऊं तोरे आजे

राग जोगकंस ताल रूपक

ग़ज़ल

दिल जला तो जल गया है, पर गिला कोई नहीं
पर शिकायत यह मुझे है, कि मिला कोई नहीं ॥
जो शुरू फटना हुआ है, तो रहा फटता ही वह
फट गया सो फट गया है, पर सिला कोई नहीं

लहर आई उभरते ही, सब रहे ही डूबते
डूबा सो डूबा नदी में, पर बचा कोई नहीं ॥
सब चले ही जा रहे हैं, किधर को, जाने कहां
जो गया सो तो गया ही, लौटता कोई नहीं

अब चलो शिव ओम तुम भी, तुम को जाना हो जहां
इस जहां का कायदा है, रोकता कोई नहीं

राग गोरख कल्याण ताल दादरा

ग़ज़ल

जो गया सो तो गया है, लौट के आया नहीं
शक्ल फिर न दी दिखाई, फिर पता पाया नहीं ॥
कैसी तारीकी है छाई, कुछ दिखाई दे नहीं
जो गया सो गुम हुआ वह, कुछ बता पाया नहीं

क्या मैं सोचूं, क्या मैं समझूं, कैसा होगा वह जहां
जिस ने देखा चुप हुआ वह, फिर दिखा पाया नहीं
वह नज़ारा जिस ने देखा, वो ही जाने है शिवोम्
मैं तो कुछ समझूं, न जानूं, कुछ बता पाया नहीं

राग विलास खानी तोड़ी ताल रूपक

गज़ल

याद को दिल में समेटे, जा रहा हूं
आए तू आए न आए, छोड़ दुनिया जा रहा हूं
जिंदगी भर तो सहेजा, अब भी मेरे दिल में है
जिस्म चाहे छूट मेरा, याद को ले जा रहा हूं
तुम नहीं आए तो फिर भी, याद मेरी तो रहेगी
तड़पने का लो मज़ा अब, मैं लिए ग़म जा रहा हूं
मैं भी तड़पा, मैं जला हूं, मैं रहा सहता शिवोम्
तरस पर तुम को न आया, खुश रहो अब जा रहा हूं

राग अहिर भैरव ताल रूपक

गज़ल

ज़िंदगी तो रायगां, तेरी महब्बत में गई
न हुआ तेरा ही जल्वा, हाथ से दुनिया गई
तेरी उल्फत ने मेरा जीना तो दूभर कर दिया
तड़पड़ाते, आहें भरते, ज़िंदगी तो कट गई
क्या मिला मुझ को रुला कर, कर दिया जीना हराम
इन्तज़ारे-यार में पल पल ही करते घट गई
अलविदा अब अलविदा ऐ, शाद दिल तेरा शिवोम्
अपना क्या है जैसी करनी, वैसी किस्मत मिल गई

मन! बोलो श्याम मुरारी, अघहारी मोहन बनवारी
नंद-नंदन प्रभु रास रचैया, बंसी मधुर बजावनहारी

राग शुद्ध कल्याण ताल दादरा

गज़ल

दे दिया सो दे दिया, वापिस मैं कैसे दिल को लूं
यह कोई सौदा नहीं है, तुम जो दो तो ही मैं दूं
तुम ने दिल देना न देना, जैसा चाहो वह करो
मैं ने तो दिल दे दिया है, सोचना काहे करूं
तुम संभालो या बिगाड़ो, जैसी मरज़ी हो तेरी
दिल तो मेरा अब रहा न, नाम तेरा ही मैं लूं
दिल का देना ज़िंदगी में, इक दफा होता शिवोम्
सोचना क्या, देखना क्या, अब किसी दूजे न दूं

राग वैरागी भैरव ताल धुमाली

गज़ल

दिल है मेरा या कि तू है, फर्क कर पाती नहीं हूं
रंग गया वह तेरे ही रंग, भूल मैं पाती नहीं हूं
मैं को समझूं तू ही तू है, तू ही है हर तरफ दीखे
अब यह दिल मेरा कहां है, दिल दिखा पाती नहीं हूं
कैसा छाया दिल के ऊपर, मिट गया नामो-निशां सब
अब तो हरदम तू ही तू है, मैं कहीं पाती नहीं हूं
हो गया अब खत्म मैं है, तू ही बाकी है शिवोम्
तू रहे, ये ही तो मांगू, देख जग पाती नहीं हूं

साकी ने पिलाई मय जिस को, वह मस्त हुआ, अलमस्त हुआ
जिस से भी नज़र मिलाई है, वह मस्त हुआ, मदमस्त हुआ

राग धानी ताल केहरवा

पश्चाताप

यह मुझे क्या हो गया है
भजन मन लागे न मेरा, जग में ही मन सो गया है
जब कभी बैठूं भजन में, जगत में ही रहत रमता
होत न थिर पल भर भी मेरा, वासनामय हो गया है
किस से पूछूं क्या करूं मैं, उड़ता फिरता हर समय मैं
भोग ही भटका फिरूं हूं, दास जग का हो गया है
हे प्रभु! कैसी यह उलझन, कैसा मन का हाल मेरा
कैसा क्या मैं हो गया हूं, हाल-बद ही हो गया है
तू ही आ कर के बचा ले, तू ही कर रक्षा शिवोम्
तेरे बिन जीवन वृथा है, अलग तुम से हो गया है

राग जोगिया ताल दादरा

पश्चाताप

मन में यह क्या आई मेरे
जग विषयन में भाग मैं निकलूं, छोड़ूं चरण मैं तेरे
लागा था मैं भजन तेरे ही, मनवा शीतल बना था मेरा
हुआ क्या जो उदासीन मन, नाम भी न लूं तेरे
बड़ा उपद्रव यह मन करता, नित ही उलझन पैदा करता
अब तो हुआ अति ही चंचल, विषयन रहत हैं घेरे
जीवन तो अब हुआ है नीरस, रस बस इक विषयन ही का है
जगत ही उलझा, जगत ही रमता, आवत दुख घनेरे
तीर्थ शिवोम् प्रभु जी मेरे, उथल-पुथल कैसी मन माहीं
तुम को छोड़ जगत को धाऊं, पाप उदय क्या मेरे

राग यमन ताल धुमाली

सावधान

धीरे धीरे रे मना, संभल संभल कर आगे चालो
ऊबर खाबर, फिसलन भारी, देख देख कर आगे चालो
डगमग करते पाओं तेरे, साथ न तेरे तनिक सहारा
एकल आगे बढ़ना तोहे, सावधान हो, कर के चालो
अन्दर बाहर माया छाई, चारों ओर अंधेरा गहरा
पाओं पड़त कहां, न जानत, सरका सरका पाओं चालो
तीर्थ शिवोम् गुरु परकाशा, जब अन्तर में होत उदय है
अन्दर बाहर सगला दीखे, थामे हाथ गुरु का चालो

राग चारुकेशी ताल केहरवा

पश्चाताप

जग में उलझा, जग न छोड़े, बार बार भरमाए
बार बार पटकाए मोहे, फिर भी बाज़ न आए
मैं तो चाहूं अमन से रहना, अमन से रहन न देवे
बार-बार मन को दुख देवे, उलझन नई फसाए
कितना भी तुम जग समझाओ, पर वह समझत नाहीं
करे वही जो उस को करना, आफत बन कर आए
तीर्थ शिवोम् यह दुनिया उलझन, कैसे हो छुटकारा
न छूटे, न छोड़ी जाय, सन्मुख खड़ी रहाए

मनवा चार दिनन की औ'र
मानुष देह डाल जो टूटी, फिर जग में है नाहीं ठौर

राग श्री कल्याण   ताल भजनी ठेका

पश्चाताप

उमरिया विरथा बीत गई
जग में आया काहे कारन, याद भी नहीं पई
जा कारन देवन ललचाएं, किरपा ते नर तन पाया
तू आदर न कीना ताही, विषयन माहीं गई
पुण्य न संचित, पाप कमाए, स्वारथ ही मन दीना
हरिनाम को सिमरन नाहीं, माया मोह गई
तीर्थ शिवोम् विफल यह जीवन, जप तीरथ कछु नाहीं
अब तो नाम प्रभु गुन गा ले, अब लौं वृथा गई

राग हंसध्वनि   ताल केहरवा

मन

मैं समझाय रह्या तोहे मनवा, बात न कुछ भी मोरी
पच-पच मूआ मैं थक हारा, करी वही जो मन में तोरी
भला-बुरा हौं सोचत तुमरा, हित की बात कहूं हूं
पर तू अपनी चाल ही चाले, नाहीं सुनत कही कछु मोरी
जग में चंचल, जग की सोचे, जगत रह्या बिचरे तू
सुख दिखलाए, देवत दुख जग, मान बात तू यह ले मोरी
अति गहरा भव को यह सागर, या का तरना कठिन बहुत है
नाम भजन कर, सिमर प्रभु गुण, छोड़ दे सगली तोरी मोरी
तीर्थ शिवोम् मान जा मनवा, काहे बिरथा जनम गवावे
जो चाले पथ परमारथ के, नैया पार लगेगी तोरी

राग आसा   ताल भजनी ठेका

उपालम्भ

कहे देत हूं मैं प्रभु तोहे, जावत भूल हो मोहे
अब की बेर याद मैं राखो, पार कराना मोहे
भक्त जनन जब पार करत हो, देखत ही रह जाऊं
खड़े खड़े ही थक जावत हूं, लाज न आवत तोहे
दीनदयाल बड़े हो बनते, भक्त वछल कहलावत
नज़र कृपा की मो पर क्यों न, जग लटकावत मोहे
तीर्थ शिवोम् सुनो बनवारी, दर पर तोर पड़ी हूं
कृपा करो न कब लौं मो पर, पार न कब लौं मोहे

राग देशकार   ताल भजनी ठेका

आनन्द

आज मैं राम के शरण पई
जग जंजाल दुखों का कारन, विपदा नित्य नई
विषय विकार विघ्न माया है, फैले सभी जगत में
कोई एक होय तो काढे, दीखत कई कई
राम ही दाता, सुख का सागर, भक्तन पार उतारे
राम-नाम आनन्द भरे मन, उलझन सभी गई
राम शरण में चाली जब तें, दुख मन आवत नाहीं
प्रेम समाया हिरदय माहीं, विपदा दूर भई
तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, मारग राम दिखाया
जग विषयन में डूब रही थी, पकड़ी काढ लई